बी.टी. इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेन्स,सागर म.प्र.

द्वितीय अंक
वर्ष–2025

NAAC ACCREDITED
COLLEGE

वार्षिक पत्रिका

स्पंदन

स्पंदन - 2024 'प्रथम अंक' का विमोचन सागर सांसद डॉ. लता बानखेड़े द्वारा

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र (दिनांक: 04.02.2025)

बी.टी. इंस्टीटयूट ऑफ एक्सीलेन्स,सागर म.प्र.

द्वितीय अंक
वर्ष–2025

NAAC ACCREDITED COLLEGE

वार्षिक पत्रिका

स्पंदन

परामर्शदाता

डॉ. राजू टण्डन, प्राचार्य

संपादक

अदिती जैन

संपादक मण्डल

डॉ. मनीषा तिवारी, डॉ. देवानंद मौर्य, अर्पणा पाण्डेय

***

पत्रिका में लेख, आलेख एवं कवितायें शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा रचित अथवा संकलित की गई हैं जिनकी मौलिकता हेतु वे स्वतः जिम्मेंदार हैं।
संपादक मण्डल एवं महाविद्यालय परिवार इस हेतु जिम्मेवार नहीं है। कृपया सहर्ष अपनायें।

***

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृष्ठ क्रमांक
01.	सागर सपूत–डॉ. हरिसिंह गौर: बचपन एवं शिक्षा दीक्षा	01
02.	बुन्देलखण्ड के गांधी: विट्ठलभाई पटेल	03
03.	सागर सपूत: स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री ताराचंद जैन	05
04.	योग साधना के प्रेरणा स्रोत: आचार्य विष्णु आर्य	07
05.	अपराध रोकथाम	09
06.	अभिप्रेरणा (कविता)	10
07.	अम्लता (Acidity) और एंटासिड (Antacid)	11
08.	जी.एस.टी. और कराधान प्रणाली में पारदर्शिताः एक विस्तृत विश्लेषण	12
09.	कोशिश कर (कविता)	13
10.	शिक्षा का महत्व मानव जीवन में	14
11.	कर्त्तव्य निर्माण (कविता)	15
12.	सागर जिला पुरातत्व संग्रहालय	16
13.	प्रेरक प्रसंग	17
14.	शिक्षा क्या है?	18
15.	भारत में आरक्षण की वर्तमान स्थिति	19
16.	नए युग की सामाजिक विचारधारा (कविता)	21
17.	एक सफर खुद के लिए	22
18.	भक्ति का उदय और हिन्दी साहित्य	23
19.	बेटियाँ (कविता)	24
20.	'भारत में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान शिक्षाः विकास, समस्याएं एवं संभावनाएं'	25
21.	दैनिक जीवन में भौतिक विज्ञान का महत्व और दुष्प्रभाव	26
22.	भारतीय परंपरा में राजनीति और नैतिकता का संबंध	27
23.	भोजन संरक्षण: कला और विज्ञान	28
24.	गणितीय विज्ञान में मशीन लर्निंग का उपयोग	29
25.	डिजीटली युग में वृद्धों की सामाजिक भागीदारी: सोशल मीडिया की भूमिका	30
26.	मुनि क्षमासागर की कवितायें....	31
27.	रंग के साथी एक रचनात्मक पहल	32
28.	एन.सी.सी.: नेतृत्व और विकास	34
29.	आदर्श वाक्य: एकता और अनुशासन	34
30.	नर हो, न निराश करो मन को (कविता)	35
31.	हिमालय: रामधारी सिंह दिनकर (कविता)	36
32.	सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन– अज्ञेय (कविता)	37
33.	भारत की विदेश नीति में नैतिकता और मानवाधिकार का स्थान	38
34.	सपनों का महत्व और उन्हें साकार करने का संकल्प	39
35.	नई शिक्षा नीति 2020 और उच्च शिक्षा में बहुभाषिकता की भूमिका	40
36.	स्वप्रेरणा (कविता)	41
37.	भारत–अमेरिका राजनीतिक साझेदारी:मोदी सरकार का एक मूल्यांकन	42

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृष्ठ क्रमांक
38.	शिक्षा और ज्ञान (कविता)	43
39.	महिला सशक्तिकरण (कविता)	43
40.	अहंकार (कविता)	43
41.	वो पल... (कविता)	43
42.	जीवन मूल्यों की महत्ता	44
43.	मेरी माँ (कविता)	44
44.	जिन्दगी तब समझ में आती है (कविता)	45
45.	अकादमिक भ्रमण: एक सुखद अनुभव	46
46.	डिजिटल युग में राजनीतिक और सोशल मीडिया का प्रभाव: एक नए युग की शुरूआत	47
47.	मातृभूमि के प्रति कर्त्तव्य (कविता)	47
48.	पर्यावरण: वर्तमान समय में चुनौतियाँ और समाधान	48
49.	The Tree: Our Silent Guardians	50
50.	Overcoming Stress and Anxiety in Students; A Path to Well-Being	51
51.	COMEDY BREAK: Your daily dose of laughter.	52
52.	The Double-Edged Sword of AI for Young Generation	53
53.	A Tour through the History of English language	54
54.	The Importance of Sustainability in Today & World	55
55.	"Go Green" A Clean Revolution in India	56
56.	It's Time To Redefine The Real Purpose Of Education	60
57.	Women Empowerment: A Path to Equality and Process	61
58.	Alcohol Abuse Disorders	62
59.	AI Enhancements and Their Effect on Students' Career Choices	64
60.	Grateful Thankful Blessed	65
61.	Decisive Thinking	66
62.	Top 10 Common Speaking Errors and How to Correct Them for Better Communication	68
63.	The Tiny Titans of Technology: Nanoparticles in Our Daily Life	70
64.	Challenges of Working Women	71
65.	Don't Be Cruel to Animals: A Call for compassion	72
66.	Teenage Teenage: A Time of Transformation.	72
67.	UNESCO World Heritage Sites of Madhya Pradesh	73
68.	Hidden Places of Sagar (Khimlasa Fort)	74
69.	Smart Work in the Digital Age	75
70.	BRICS: The Rising Powerhouse & Financial Independence	76
71.	The Role of Python and 'R' in Modern Biological Research	77
72.	What is AI Physics	78

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
DOCTOR HARISINGH GOUR VISHWAVIDYALAYA, SAGAR (M.P.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय/A Central University)

कर्नल (प्रो.) नीलिमा गुप्ता
Col. (Prof.) Neelima Gupta
कुलपति/Vice-Chancellor

Ex Vice-Chancellor
Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur
Tilka Manjhi Bhagalpur University, Bhagalpur
Munger University, Munger (Addl. Charge)

:: शुभकामना संदेश ::

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि बी.टी. इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस, मकरोनिया, सागर की वार्षिक पत्रिका 'स्पंदन भाग–02, 2025' का प्रकाशन होने जा रहा है।

आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में महाविद्यालयीन पत्रिकायें हमारे युवा छात्र–छात्राओं को मार्गदर्शन प्रदान करती हैं। ऐसे विषयों का समावेश प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं में करके हमारे युवा छात्र–छात्राओं को रोजगारोन्मुख जानकारियों के साथ–साथ प्रेरक विषयों–लेखों, जागरूकता संदेशों, व्यवहारिक विषयों का भी ज्ञान प्राप्त होता है, साथ ही उनके चरित्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

मैं महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'स्पंदन भाग–02, 2025' के संपादक मण्डल को इसके सफल प्रकाशन की मंगल कामना करती हूँ।

शुभकामनाओं सहित!

सागर,
दिनांक : 15–04–2025

(प्रो. नीलिमा गुप्ता)

डॉ. लता वानखेड़े
संसद सदस्य (लोकसभा)
संसदीय क्षेत्र, सागर-विदिशा म.प्र.

सत्यमेव जयते

दिल्ली निवास:-403 मध्यप्रदेश भवन, जीजस मैरी मार्ग,
चाणक्य पुरी, नई दिल्ली, भारत पिन कोड 110022
सागर कार्यालय:- सासंद संवाद केन्द्र
पुरानी कलेक्ट्रेट रोड, डी.पी.सी. कार्यालय के पास
सागर म.प्र. मध्यप्रदेश पिन कोड 470001
दूरभाष नं.:- 07582-224411, 9424480007
E mail:-drlatawankhedeoffice@gmail.com
dr. latawankhede@sansad. nic. In

पत्र क्रं. SAG-05/1126/2025-26 दिनांक 01/05/2025

शुभकामना–पत्र

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि बाबूलाल ताराबाई इंस्टीटयूट ऑफ एक्सीलेंस मकरोनिया जिला सागर द्वारा वार्षिक पत्रिका स्पंदन भाग - 02 वर्ष 2025 का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि संस्था द्वारा प्रकाशित पत्रिका शिक्षा के क्षेत्र में एक सशक्त प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करेगी।

मैं संस्था को प्रकाशित की जाने वाली वार्षिक पत्रिका स्पंदन भाग - 02 वर्ष 2025 के लिये शुभकामनाऐं प्रेषित करती हूं।

भवदीय

(डॉ.लता वानखेडे)
सांसद
संसदीय क्षेत्र 05-सागर (म.प्र.)

निज निवास:- एम.पी.ई.बी. गेस्ट हाऊस के सामने, नरसिंहपुर रोड, मकरोनिया सागर मध्यप्रदेश पिन कोड 470004

गोविन्द सिंह राजपूत
मंत्री,
खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं
उपभोक्ता संरक्षण विभाग,
मध्यप्रदेश शासन

निवास : सी–2, (74 बंगले), स्वामी दयानंद नगर, भोपाल
मंत्रालय : 0755–2708082
निवास कार्या. : 0755–2554145
: 0755–2554154
ई–मेल : govindsr755@gmail.com

पत्र क्रमांक .....
भोपाल, दिनांक .....

:: शुभकामना संदेश ::

यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि बी.टी. इंस्टीट्यूड ऑफ एक्सीलेंस महाविद्यालय द्वारा वार्षिक पत्रिका ''स्पंदन भाग - 02, 2025'' का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका उपयोगी बने एवं अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सार्थक हो।

बी.टी. इंस्टीट्यूड ऑफ एक्सीलेंस महाविद्यालय द्वारा वार्षिक पत्रिका ''स्पंदन भाग - 02, 2025'' के प्रकाशन हेतु, मेरी ओर से महाविद्यालय के संस्थापक एवं समूह के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें।

शुभकामनाओं सहित

(गोविंद सिंह राजपूत)

धर्मेन्द्र भाव सिंह लोधी
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
मध्य प्रदेश शासन
संस्कृति, पर्यटन,
धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व विभाग

मंत्रालय कक्ष क्रमांक E-310, VB-3, 3rd Floor,
☎ 0755-2708766
आवास/कार्यालय - बी 10, 74 बंगला, स्वामी दयानंद नगर, लिंक रोड-1, भोपाल, 462003
☎ 0755-2730927, 2730929
E-mail:- ministermpt.d@gmail.com

क्रमांक 156 /रा.मं./स्व.प्र./2024

भोपाल, दिनांक 09/04/2025

-:: शुभकामना संदेश ::-

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई, कि बी.टी. इस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस, सागर द्वारा अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की वार्षिक पत्रिका स्मारिका "स्पंदन भाग-2" का प्रकाशन किया जा रहा है।

पत्र-पत्रिकाओं की समाज और राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इनमें प्रकाशित जानकारी हमेशा समाज को दिशा प्रदान करती है तथा प्रकाशित लेख-आलेखों से जहां पाठकों का ज्ञानवर्धन होता है, वहीं लेखकों को अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए एक मंच भी सुलभ होता है। बी.टी. इस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस, सागर द्वारा प्रकाशित पत्रिका "स्पंदन भाग-2" समाज की संस्कृति तथा सामाजिकता को निरूपित करने वाली एक श्रेष्ठ पत्रिका है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका निश्चित ही समाज में जागृति और युवा पीढ़ी को मार्गदर्शन प्रदान करेगी।

मैं बी.टी. इस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस, सागर की वार्षिक पत्रिका स्मारिका "स्पंदन भाग-2" के प्रकाशन के लिये बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(धर्मेन्द्र सिंह लोधी)

शैलेन्द्र कुमार जैन
विधायक
विधानसभा क्षेत्र क्र. 41, सागर (म.प्र.)

निवास/कार्यालय
376/9 ए, धर्मश्री अम्बेडकर वार्ड,
सागर (म.प्र.) 470 002
मो. 97525 00511, 94251 70511

क्रमांक/1260ft/सागर वि.स./2025 सागर, दिनांक 15.04.2025

—: शुभकामना संदेश :—

अत्यंत हर्ष का विषय है कि बी.टी. इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस मकरोनिया, सागर की संस्था द्वारा वार्षिक पत्रिका **"स्पंदन"** का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका का प्रकाशन किसी भी शैक्षणिक संस्थान की गरिमा और परंपराओं की जीवंतता का साक्षी होता है। निश्चित रूप से पत्रिका के प्रकाशन से संस्था अपने विकास में वृद्धि व विद्यार्थियों और पाठकों को नया संदेश देने में सफल होगी।

इस अवसर पर समस्त बी.टी. इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस मकरोनिया, सागर परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

पुनः हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

भवदीय,

(शैलेन्द्र कुमार जैन)

Email : jainshailendra.sagar@gmail.com

इंजी.प्रदीप लारिया

विधायक : नरयावली विधानसभा क्षेत्र क्र. 40
सभापति : गैर सरकारी सदस्यों के विधेयकों
तथा संकल्पों संबंधी समिति
पूर्व उपाध्यक्ष : भारतीय जनता पार्टी, म.प्र.
पूर्व महापौर : नगर पालिक निगम, सागर (म.प्र.)

निवास- पंचदेव मंदिर के पास
रजाखेड़ी, सागर (म.प्र.)
कार्या.: 07582-230399
E-mail : naryavali40@rediffmail.com

नया पारिवारिक खण्ड क्र.-1
कमरा नं.-5, भोपाल (म.प्र.)
मोबा.: 098262 26835

क्रमांक...7592

दिनांक 02/05/2025

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकार अत्यंत प्रसन्नता हुई कि शिक्षण संस्थान बी.टी. इनस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस, महाविद्यालय द्वारा वार्षिक पत्रिका "स्पंदन भाग–02, 2025" का प्रकाशन किया जा रहा है।

मैं वार्षिक पत्रिका "स्पंदन भाग–02, 2025" शिक्षण संस्थान बी.टी. इनस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस, महाविद्यालय को शुभकामनायें देता हूं।

"उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं"

आपका

(इंजी. प्रदीप लारिया)
विधायक नरयावली

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

DOCTOR HARISINGH GOUR VISHWAVIDYALAYA, SAGAR (M.P.)

(A CENTRAL UNIVERSITY)

निदेशक

Director

महाविद्यालयीन विकास परिषद

College Development Council

E-mail- dcdcsu@gmail.com

:: संदेश ::

बी.टी. इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस, सागर (म.प्र.) वार्षिक पत्रिका 'स्पंदन' के द्वितीय अंक 2025 के प्रकाशन का सुखद समाचार प्राप्त हुआ, संस्थान द्वारा पत्रिका का प्रकाशन अपने आप में साहित्य धर्म की स्थापना है। पत्रिका विद्यार्थियों को लेखन प्रवृत्ति और सृजनात्मक प्रतिभा को बढ़ावा देने के साथ–साथ सामाजिक दायित्व बोध विकसित करने में महाविद्यालय में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करेगी।

बी.टी. इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस, सागर निश्चित रूप से बधाई का पात्र है जहाँ पर स्पंदन पत्रिका के माध्यम से साहित्य की सेवा का पुनीत कार्य किया जा रहा है स्पंदन का यह प्रकाशन विद्यार्थियों के अंदर नयी प्रकरण और स्फूर्ति का संचार करने में सफल होगी, ऐसी मेरी सद्भावना है।

'स्पंदन' पत्रिका के प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें।

NPSingh

(प्रो. एन.पी. सिंह)

B.T. Institute of Excellence

(Approved by Higher Education, Govt. of M.P.; NCTE, New Delhi)
Affiliated to Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya (A Central University), Sagar
Mob. No. : 9926459169, 8435208060, 9179071001, 9713441188
www.btie.in/ e-mail : btie_sagar@rediffmail.com / btiesagar2008@gmail.com

Run by : Little Star Education Society

NAAC ACCREDITED COLLEGE

Address : Dr. Harisingh Gour Nagar (Pt. Deen Dayal Nagar) MAKRONIA, SAGAR 470 004 (M.P.) INDIA

Ref. No.

Date : .....

शुभकामनाएं...

बी.टी.आई.ई. महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'स्पंदन' का मुख्य उद्देश्य शिक्षण संस्थान के विभिन्न घटकों जैसे विद्यार्थियों, शिक्षकों, कर्मचारियों, भूतपूर्व विद्यार्थियों एवं समाज के लोगों को महाविद्यालय द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे प्रयासों के बारे में अवगत कराना एवं उन्हें प्रेरित करना, समाज में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण का निर्माण करना साथ ही साथ उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों को ऐसी संस्कारवान शिक्षा देना जिससे वे अपने जीवन में लक्ष्य प्राप्ति साथ-साथ संस्कारवान नागरिक भी बन सकें।

'स्पंदन' पत्रिका (द्वितीय अंक) के प्रकाशन के लिए मैं महाविद्यालय के प्राचार्य,संपादक मंडल के समस्त सदस्यों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ। स्पंदन का नियमित प्रकाशन हो ऐसी कामना करता हूँ।

(सन्तोष कुमार जैन 'घड़ी')
चेयरमेन
बी.टी.संस्था समूह, सागर

B.T. Institute of Excellence

(Approved by Higher Education, Govt. of M.P.; NCTE, New Delhi)
Affiliated to Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya (A Central University), Sagar
Mob. No. : 9926459169, 8435208060, 9179071001, 9713441188
www.btie.in/ e-mail : btie_sagar@rediffmail.com / btiesagar2008@gmail.com
Run by : Little Star Education Society

NAAC ACCREDITED COLLEGE

Address : Dr. Harisingh Gour Nagar (Pt. Deen Dayal Nagar) MAKRONIA, SAGAR 470 004 (M.P.) INDIA

Ref. No.

Date : .....

प्राचार्य की कलम से...

महाविद्यालयीन पत्रिका महाविद्यालय की अकादमिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों एवं उपलब्धियों का न केवल दर्पण है बल्कि महाविद्यालय के विद्यार्थियों की बौद्धिक, वैचारिक एवं रचनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित 'स्पंदन' पत्रिका, विद्यार्थियों की रचनात्मक अभिरूचियों को प्रकाश में लाने का कार्य करेगी।

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'स्पंदन' के द्वितीय अंक में महाविद्यालय के शिक्षकों द्वारा वर्षभर शैक्षणिक गतिविधियों को स्थान प्रदान करने के साथ–साथ विद्यार्थियों द्वारा शैक्षणिक, सांस्कृतिक, खेलकूद, एन.सी.सी., एन.एस.एस. एवं अन्य क्षेत्रों में की जाने वाली उनकी उपलब्धियों को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त करने का प्रयास किया गया है।

मैं 'स्पंदन' के द्वितीय अंक के प्रकाशन पर संपादक मंडल के समस्त सदस्यों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को शुभकामनायें एवं बधाई प्रेषित करता हूँ।

Raju

(डॉ. राजू टंडन)
प्राचार्य

संपादक की कलम से.....

'मन को सशक्त बनाना, जीवन को समृद्ध करना'

महाविद्यालय की वार्षिक गतिविधियों की रचनात्मक एवं सृजनात्मक प्रतिभा के अवलोकन हेतु महाविद्यालय की पत्रिका 'स्पंदन' का द्वितीय अंक प्रस्तुत है। हम अपने जीवंत समुदाय के साथ सीखने एवं रचनात्मकता और विकास के प्रति अपने जुनून को साझा करने के लिए उत्साहित हैं। आज के तेजी से बदलते विश्व में ज्ञान शक्ति है, और मेरा मानना है कि शिक्षा मानव क्षमता को विकसित करने की कुंजी है।

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका विद्यार्थियों के लिए विचारों की अभिव्यक्ति एवं अपनी लेखन प्रतिभा को प्रदर्शित करने का उपयुक्त मंच है। इस पत्रिका के माध्यम से विभिन्न विषयों पर लेख, कहानियाँ, कविताएं एवं कलाकृतियां प्रस्तुत कर रहे हैं जो विद्यार्थियों की विविध रुचियों और दृष्टिकोणों को दर्शाती है।

हम आशा करते हैं कि स्पंदन के द्वितीय अंक का प्रकाशन महाविद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को अपनी लेखन प्रतिभा को आगे बढ़ाने एवं कलात्मक रुचि की उत्कृष्टता की ओर प्रेरित ओर प्रोत्साहित करेगी।

'स्पंदन' के द्वितीय अंक के प्रकाशन हेतु

मैं एवं संपादक मंडल के सभी सदस्य संस्था के चेयरमैन श्री सन्तोष कुमार जैन, निर्देशक श्री संदीप जैन एवं प्राचार्य डॉ. राजू टंडन के प्रति आभार व्यक्त करते हैं, जिनके प्रोत्साहन एवं सुझावो से स्पंदन का प्रकाशन संभव हुआ।

मैं समाज के विद्वत जन, महाविद्यालय के शिक्षकों, संपादक मंडल एवं विद्यार्थियों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। जिन्होंने स्पंदन के प्रकाशन में सहयोग किया। मुझे आशा है कि स्पंदन का यह अंक आपको शैक्षिक उन्नयन के साथ आनंद भी प्रदान करेगा। भविष्य में इसे और अधिक प्रभावी बनाने के लिए आपके सुझाव आमंत्रित हैं।

शुभकामनाओं सहित,

अदिती जैन
संपादक

सम्पादक मण्डल

डॉ. राजू टण्डन, प्राचार्य
(परामर्शदाता)

अदिती जैन
(संपादक)

डॉ. मनीषा तिवारी
(सदस्य)

डॉ. देवानंद मौर्य
(सदस्य)

अर्पणा पाण्डेय
(सदस्य)

Our Proud Alumni

Name - Harshit Sharma
Batch - 2020-2023
Course - B.A.
Central Armed Police Force
(UPSC Qualified AIR-26)

Name - Khushi Soni
Batch - 2017-2020
Course - B.Sc.
Senior Scientific Assistant
Forensic Science Laboratory,
C.I.D., Bihar

Name - AnJali Vishwakarma
Batch - 2016-2019
Course - B.Sc.
Senior Scientific Officer
Division-Ballistics
FSL, Patna (Bihar)

Name - Nayan Jain
Batch - 2018-2022
Course - B.A.B.Ed.
Assistant
Reserve Bank of India
Bhopal

Name - Angha Shrivastava
Batch - 2020-2023
Course - B.Sc.
International Business
Development, Pune

Name - Shivani Kesharwani
Batch - 2016-2019
Course - B.Com.
Deputy Manager
ICICI Bank, Ahamdabad

Name - Anukriti Jain
Batch - 2016-2019
Course - B.Com.
Academic Head
Symbosis University, Indore

Name - Sakshi Rathore
Batch - 2017-2020
Course - B.Sc.
Data Analyst
Bangalore

Name - Anivesh Jain
Batch - 2017-2020
Course - B.Sc.
Software Engineer
Pune

Name - Drishtant Yadav
Batch - 2014-2017
Course - B.Sc.
Relationship Manager
HDFC Bank

Our Proud Alumni

Name - Diva Singh Thakur
Batch - 2021-2024
Course - B.A.

Junior Associate
State Bank of India

Name - Bhoomika Vishwakarma
Batch - 2017-2020
Course - B.Sc.

Entrepreneur
(Resin Artist)

Name - Shivansh Jain
Batch - 2019-2022
Course - B.A.

Entrepreneur
(e-waste management)

Name - Adesh Patel
Batch - 20
Course - B.

Asstt. Manager
HDFC Bank, Gotegaon

Name - Abhishek Kushwaha
Batch - 2018-2022
Course - B.A.

TGT SST
Eklavya Model Residential School Ri Bhoi, Meghalaya, Department- NESTS, Ministry of Tribal Affairs, Govt of India

Name - Arbeena Rain
Batch - 2020-2023
Course - B.A.

National Athelete Player
(100 Mtr.)

Name - Nitya Yadav
Batch - 2023-2024
Course - B.Ed.

Yoga Teacher,
St. Joseph's Convent School
Sagar

Name - Arjit Tandan
Batch - 2017-2019
Course - M.A. (Political Sci.)

Dept. of Security
DHSGU, Sagar

Name - Antra Shukla
Batch - 2019-2023
Course - B.A.B.Ed.

Govt. MS Boys School
Bandri, Sagar

Name - Dharmendra Shukla
Batch - 2014-2017
Course - B.Sc.

Deputy Manager
HDFC Bank, Sagar

University Gold Medalists

...महाविद्यालयीन गतिविधियाँ...

...महाविद्यालयीन गतिविधियाँ...

...महाविद्यालयीन गतिविधियाँ...

सागर सपूत: 1

सागर सपूत-डॉ. हरिसिंह गौर: बचपन एवं शिक्षा दीक्षा

डॉ. हरीसिंह गौर (अब केंद्रीय) विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक हरिसिंह गौर का जन्म 26 नवंबर 1870 को सागर के शनीचरी टौरी वार्ड में एक गरीब परिवार में हुआ। प्रस्तुत लेख डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. द्वारा प्रकाशित उनके संक्षिप्त जीवन वृत्त से लिया गया है। जिसमें उनके द्वारा दिये गये वक्तव्य जस के तस दिये गये हैं। जिनसे उनके जीवन संघर्ष का पता चलता है।

अपनी माँ को अत्यंत मर्मस्पर्शी ढंग से याद करते हुए उन्होंने लिखा 'वह हमेशा कुछ न कुछ करती रहतीं और जब उन्होंने देखा कि परिवार की आय घट गई है तो उन्होंने एक चरखा खरीद लिया और इस चरखे पर दोपहर एक बजे से लेकर शाम सात-आठ बजे तक वह सूत कातती' तीन दिन की मेहनत के बाद वह अपना सूत बेचतीं और इस प्रकार जो पैसा मिलता उससे नया सूत कातने के लिये रूई की पोनियां खरीदतीं। इसको बेचने से उन्हें चार-पांच आने (एक आना-छै पैसे) मिलते। जिससे वह घरेलू जरूरतों की चीजें खरीदतीं। जब में दस वर्ष का था तब मिशेल के सागर स्कूल के हेडमास्टर बनने की स्मृति में कायम की गई एक छोटी सी छात्रवृत्ति मुझे मिलने लगी यह छात्रवृत्ति दो रूपये प्रतिमाह की थी। मुझे अपनी छात्रवृत्ति का गुमान था। मैं अपनी मां से जिद करता कि वह चरखा चलाना बंद कर दें और सूत कातने से जितना पैसा उन्हें मिलता है उतना मेरी छात्रवृत्ति से ले लिया करें, किन्तु वह बेकार तो बैठ ही नहीं सकती थीं और मुझसे प्राय: कहतीं कि यदि वह सूत नहीं कातेंगी तो चक्की पीसेंगी। यह उनके लिये ज्यादा थकाने वाला होता और मेरे लिये ज्यादा तकलीफ देह''।

सागर की एक निजी पाठशाला में दो साल पढ़ने के उपरांत हरिसिंह ने कटरा की हिन्दी शाला में तीन साल अध्ययन किया उसके बाद उन्होंने जिला स्कूल में प्रवेश लिया। अपनी कुशाग्र बुद्धि के कारण वह जिला स्कूल (म्यूनिसिपल हाई स्कूल) के शिक्षकों के अत्यंत प्रिय छात्र थे। इनके शिक्षक कहते थे कि यह लड़का आग का तिलगा है, एक दिन खूब चमकेगा। आरंभिक शिक्षा के पश्चात् आठवीं कक्षा तक की पढ़ाई उन्होंने दो वर्ष में ही पूर्ण कर ली और स्कूल के 'प्राइड ब्वाय' का सम्मान प्राप्त किया। उन्होंने मिडिल परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की और सरकारी छात्रवृत्ति पर शासकीय हाई स्कूल में प्रवेश लिया, बाद में वे जबलपुर चले गये। अपने साथ घटी एक घटना से व्यथित वे मेट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण न कर सके। उनकी छात्रवृत्ति बंद कर दी गई और विवश होकर उन्हें सागर वापस आना पड़ा। उन्हें 20 रूपये माहवार तनख्वाह पर मेस क्लर्क की नौकरी मिली। एक माह तक प्रतिदिन सुबह से अर्द्धरात्रि तक इन्हें कार्य करना पड़ा जिसकी वजह से वे बीमार पड़ गये, और उन्हें नौकरी से भी हाथ धोना पड़ा। घर का खर्च कठिनता से चलते देख वह रोजी रोटी कमाने घर से निकल पड़े। इनके भाई उस समय ज्यूडिशियल कमिश्नर कोर्ट नागपुर में डिप्टी रजिस्ट्रार थे। हरिसिंह उनके पास पहुँचे और कार्य करने की इच्छा व्यक्त की। भाई ने पहले मैट्रिक पास करने को प्रोत्साहित किया। उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा में सम्पूर्ण प्रांत में प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इन्हें 50

रूपये नगद इनाम, एक चांदी की घड़ी तथा 20 रूपये की छात्रवृत्ति प्रदान की गई।

उच्च शिक्षा के लिये हरिसिंह गौर ने फ्री चर्च इंस्टीट्यूशन, नागपुर (अब हिसलप कॉलेज) में प्रवेश लिया। अंग्रेजी और इतिहास में ऑनर्स प्राप्त करने वाले वह एक मात्र छात्र थे। बैरिस्टरी की शिक्षा के लिये वे कैंब्रिज गये और एल.एल.डी. की उपाधि प्राप्त की। इस दौरान उनकी साहित्यिक प्रतिभा निरंतर विकसित हुई। उन्होंने अपनी रचनायें तत्कालीन साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाना शुरू किया जिनकी सर्वत्र प्रशंसा होने लगी और उनके ज्ञान को सराहा जाने लगा। उन्होंने **'स्टेंपिग वेस्टवार्ड एण्ड अदर पोएक्स'** पुस्तक प्रकाशित कराई, जिससे उन्हें यश मिला और उन्हें 'रॉयल सोसायटी ऑफ लिटरेचर' का सदस्य चुना गया।

प्रभावशाली अभिव्यक्ति के कारण वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में वह छात्रों के विशेष प्रशंसापात्र थे। आक्सफोर्ड के विशेष आमंत्रण पर कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय छात्र संघ प्रतिनिधमंडल का प्रतिनिधित्व करने के लिये उन्हें ही चुना गया। वह प्रतियोगिता में प्रथम रहे। सन् 1891 में उन्होंने दर्शन और अर्थशास्त्र में ऑनर्स की उपाधि प्राप्त की और 1892 में कानून की उपाधि अर्जित की। बाद में 1905 में डी.लिट. की पहली डिग्री लंदन विश्वविद्यालय से और फिर ट्रिनिटी कॉलेज, डरहम से प्राप्त की। उस समय के विख्यात महान साहित्यकार लार्ड तेनिसन से प्रभावित होकर साहित्यिक अध्ययन क्लब 'मरमेड क्लब' की स्थापना की। इसकी गोष्ठियों में उस समय के विख्यात लेखक तथा कवि आमंत्रित किये जाते थे। श्री गौर द्वारा लिखा गया एक नाटक लंदन की नाट्यशालाओं में खेला गया, इसने दर्शकों को काफी आकर्षित किया। 1892 में बार-ऐट-लॉ, लंदन का पंजीयन प्रमाण पत्र प्राप्त कर वह भारत लौट आये।

देश मेरे

देश मेरे
शान्मिय ओ देश मेरे।
दु:ख के आँसू बहा मत, मत गला अश्रु में जीवन,
चिरजयी हैं पुत्र तेरे, धन्य हैं जिनसे मरण-क्षण।
देवताओं से सरल, जिनको सदा सन्तोष घेरे।
देश मेरे।
रूढ़ियों के अंध सपनों में बंधा है आज जीवन,
जाति-पाशों में फँसा तू, काट दे ये तिमिर बंधन।
वीर, तेरे तीन के हों लक्ष्य युग-युग के अँधेरे।
देश मेरे.....
भूमि पर नय की खड़ा हो आज नव गीता सुना दे,
आज जीवन के समय में पार्थ का गर्जन जगा दे।
है मुझे प्रिय देश मेरा, प्रिय मुझे तेरे बसेरे।
देश मेरे।

डॉ. सर हरीसिंह गौर
(हिन्दी रूपान्तर)

संदीप जैन

सागर सपूत: 2

बुन्देलखण्ड के गांधी: विट्ठलभाई पटेल

सागर के सपूत विट्ठलभाई पटेल की जिंदगी सही मायने में एक खुली किताब की तरह रही है, उनके जीवन से संबंधित कुछ स्मृतियां।

बुंदेलखण्ड की सुभाषित एवं सुगंधित माटी में विट्ठलभाई पटेल का जन्म 21 मई 1936 को सागर शहर के प्रतिष्ठित बीड़ी व्यवसायी श्री लल्लू भाई पटेल एवं कांता बेन पटेल की तीसरी संतान के रूप में राधेश्याम भवन में हुआ। इनके पूर्वज गुजराती पृष्ठभूमि से थे। लेकिन इनके आचार-विचार, धर्म-कर्म, सृजन साहित्य सभी बुंदेली संस्कृति से ओत-प्रोत थे, विट्ठलभाई की पारिवारिक पृष्ठभूमि व्यवसायी होने के साथ-साथ समाज सेवा की भावना से ओत-प्रोत थी। विट्ठलभाई के माता-पिता गरीबों एवं जरूरतमंदों के प्रति समभाव एवं उपकार करने में अग्रणी रहे और यही संस्कार उनमें जीवनपर्यन्त रहे।

किसी इंसान का व्यक्तित्व एक दिन में नहीं गढ़ा जाता। विट्ठलभाई भी ऐसे ही लाजवाब कोहिनूर थे जिन्होंने कभी किसी चीज की परवाह नहीं की। वे सदैव अपनी बात पर अडिग रहे। उच्च कुलीन होने के बावजूद उनके व्यक्तित्व में अहं नाम मात्र का नहीं था। और इन्हीं गुणों से वह जनसामान्य में लोकप्रिय रहे।

विट्ठलभाई पटेल के करीबी रहे, वर्तमान में उनके यहाँ कार्यरत मुंशी कोमल जी बताते हैं, कि सन 1968 में जापान इंटरनेशनल कांफ्रेस में विद्यार्थी दल का नेतृत्व हो, सन् 1969 में कार रैली में दिग्गजों को हराकर प्रथम स्थान प्राप्त करना रहा हो, सन् 1969 में सागर नगर पालिका अध्यक्ष के रूप में निर्विरोध चयनित होना हो, सत्तर के दशक में कांग्रेस पार्टी में सक्रिय भूमिका का निर्वहन हो, म.प्र. सरकार में उद्योग मंत्री का दायित्व हो, साठ एवं सत्तर के दशक में सुपरहिट फिल्मों में शानदार गीतों का लेखन रहा हो, राजकपूर एवं विख्यात फिल्मी सितारों के साथ काम करना रहा हो, ये सभी विट्ठल भाई की विलक्षण प्रतिभा के परिचायक हैं। उनकी प्रतिभा असंभव को भी संभव बनाती गई। उन्होंने जीवन में कई उतार-चढ़ाव देखे लेकिन आपका व्यक्तित्व और अधिक निखरता गया।

आपने सागर विश्वविद्यालय से सन् 1955 में बी.कॉम. की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद सी.ए. करने के लिए मुम्बई चले गये लेकिन पारिवारिक कारणों से सागर वापस आ गये। विश्वविद्यालययीन जीवन में छात्र संघ चुनाव, खेल प्रतियोगिताओं एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में सहभागिता की। सन् 1954 में दिल्ली में आयोजित अंतर विश्वविद्यालयीन युवा समारोह दिल्ली में आपने छात्र पर्यवेक्षक के रूप में सागर विश्वविद्यालय का नेतृत्व किया।

विट्ठलभाई पटेल कवि के रूप में स्वयं को बेहद खुशनसीब समझते थे यह उनके जीवन का ऐसा अध्याय था, जिससे उन्हें सदैव आनंद मिला। इनका पहला कविता संग्रह 'दीवारों के खिलाफ' सन् 1960 में हिन्दी के प्रसिद्ध कवि पंडित भवानी प्रसाद मिश्र द्वारा प्रकाशित कराया गया। यह उनके लिए बेहद खास एवं उपलब्धि पूर्ण था। आपकी रचनाओं की भाषा सदैव सीधी सरल, शिक्षापरक एवं बुंदेली संस्कृति से परिपूर्ण रही। आपने कविताओं के माध्यम से लोक जीवन एवं व्यवहारिक जीवन का सजीव चित्रण किया।

फिल्मी गीतकार के रूप में आपका सफर फिल्म निर्माता, निर्देशक एवं कलाकार राजकपूर जी से पहली मुलाकात मध्यप्रदेश के बीना जिले में, तीसरी कसम, फिल्म की शूटिंग के दौरान हुई। वे आपके व्यक्तित्व से इतने प्रभावित हुये कि उन्होंने फिल्मों में गीत लिखने का प्रस्ताव रखा और आपने फिल्म बॉबी के लिए पहला गीत 'झूठ बोले कौआ काटे' लिखा जो अत्यधिक लोकप्रिय हुआ। इस गीत से आप फिल्म जगत में गीतकार के रूप में विख्यात हो गये और कई फिल्मों के गीत लिखे।

छात्र जीवन से ही आप राजनीति में सक्रिय रहे। मध्यप्रदेश शासन के तीन मुख्यमंत्रियों के साथ आपने कार्य किया। अपनी कर्तव्यनिष्ठा एवं लगन से आप नगरपालिका अध्यक्ष से मंत्रीमण्डल तक पहुँचे एवं कांग्रेस पार्टी में आपका महत्वपूर्ण स्थान रहा। आपकी ईमानदारी एवं बेदाग छवि ने आपको शीर्ष तक पहुँचाया। लोकसभा चुनाव में हार या म.प्र. में कांग्रेस अध्यक्ष का पद न मिलने पर भी आपके स्वभाव या निष्ठा में कोई परिवर्तन नहीं आया। देश, समाज एवं पार्टी हित के लिए आप सदैव तत्पर रहे।

आपके द्धारा चलाये गये अभियानों का अलग ही महत्व है। आपने किशोर कुमार की समाधि खंडवा में व सागर के नरयावली शमशान घाटों के जीर्णोद्धार हेतु प्रति व्यक्ति एक रूपया एकत्रित करने का अभियान चलाया। इस अभियान से प्रभावित होकर म.प्र. शासन में तत्कालीन मंत्री जयंत मलैया ने खण्डवा में किशोर कुमार की भव्य समाधि बनवायी।

आपका स्वच्छता अभियान भी चर्चा में रहा। आपने शहर को स्वच्छ रखने एवं सागर की धरोहर लाखा बंजारा झील का सौंदर्य यथावत रखने हेतु हर संभव प्रयास किया। इस हेतु सफाई अभियान प्रारंभ किया। शहर के रेल्वे स्टेशन सड़कों की सफाई करने में आपका बहुत योगदान रहा।

विट्ठलभाई पटेल के बारे में बस यही कहा जा सकता है कि जब कोई धारा संपूर्ण वेग से पहाड़ों को चीरते हुये निकलती है, तो वह अनेक दिशाओं में प्रवाहित होती है, इसी प्रकार की धारा विट्ठलभाई पटेल के जीवन या व्यक्तित्व में परिलक्षित होती है, वे सर्वगुण संपन्न थे। वर्तमान में युवाओं को उनके जीवन से अनेक प्रेरणाएं लेने की आवश्यकता है, कैसे एक व्यक्ति चर्चित व्यवसायिक पृष्ठभूमि से सम्बद्ध होकर भी मानवीय मूल्यों से जुड़ा रहा।

राजनीति में जब उन्होंने प्रवेश किया तो समय का पाबंद होना समय पर सब काम करना ये कभी नहीं बदला। वे काजल की कोठरी से बेदाग होकर बाहर निकले। कभी सस्ती लोकप्रियता या पद के लिए लालसा आपके व्यक्तित्व में परिलक्षित नहीं हुई। छात्र संघ के चुनाव से लेकर मंत्री पद पर आपने कार्य किया लेकिन आप सदैव सामान्य कार्यकर्ता ही रहे, किसी भी सगे संबंधी के हित के लिए कोई सिफारिश आपके द्धारा नहीं की गई।

जब आपने फिल्मी जगत में गीतकार के रूप में अपनी यात्रा प्रारंभ की तो मायानगरी की चमक धमक से दूर रहे एवं किसी भी प्रकार का व्यसन या दिखावा हावी न हुआ। दिग्गज कलाकारों के साथ काम किया लेकिन उनके शौक एवं रंग-ढंग आपकी बुंदेली संस्कृति एवं आपके संस्कारों पर हावी न हुये। आप सदैव सागर के विट्ठल भैया ही रहे। पार्टियों में कभी आपने शराब को हाथ नहीं लगाया। आप चाहे कवि रहे हों या राजनेता, गीतकार के रूप में आपने कार्य किया हो या व्यवसायी के रूप में, आप सदैव समय के पाबंद रहे एवं आपका व्यक्तित्व कीचड़ में खिले हुये कमल के समान रहा। विट्ठलभाई ऊँचाईयों पर पहुँचकर भी अपने संस्कारों एवं संस्कृति से सदैव जुड़े रहे यह युवाओं के लिए सदैव प्रेरक रहेगा।

-डॉ. राजू टंडन

'सही प्रश्न पूछो और
प्रकृति अपने रहस्यों के
द्वार तुम्हारे लिए
खोल देगी।'

-डॉ. सी.वी. रमण

सागर सपूत: 3

सागर सपूतः स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री ताराचंद जैन

श्री ताराचंद जी जैन स्वतंत्रता संग्राम सेनानी अपने आप में एक प्रेरणा का स्त्रोत है, 100 वर्ष की जीवन यात्रा में उन्होंने जो त्याग संघर्ष एवं सेवा की मिसाल पेश की वह अविस्मरणीय है।

उन्होंने बताया, जब राष्ट्रपिता महात्मागांधी नें भारत छोड़ो आन्दोलन शुरू किया, तब मैं अपने घर पर नहीं था, मुझे जैसे ही नेताओं की गिरफ्तारी की सूचना मिली मैं जैन स्कूल की ओर दौड़ा, मेरी आयु16-17 वर्ष थी, लेकिन जोश बहुत था। स्कूल पहुँचते ही मैंने सभी छात्रों को एकत्र किया और आंदोलन में शामिल होने के लिए तैयार किया। अगले दिन छात्राएं महिला विद्यालय पहुंची और करीब 150 लोग सरकार के खिलाफ नारेबाजी करने लगे। मैं स्कूल का कप्तान था, इसलिए सब मुझे कैप्टन ताराचंद कहने लगे।

फिर स्कूलों से निकलकर सभी ने यूनिवर्सिटी की ओर कूच किया, इसी दौरान अंग्रेज अफसरों ने हमें रोका लेकिन हम रूके नहीं, बाद में मुझे एवं मेरे साथियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया, जब मुझे पेश किया तो मजिस्ट्रेट ने कहा कि इस छोटे बच्चे को क्यों पकड़ लाये, तो अफसरों ने कहा यह छोटा बच्चा एक मिर्च के समान है, जिसकी गिरफ्तारी के बाद सारी गतिविधियां, यह सुनते ही मुझे 6 माह की जेल हुई। जेल में अनेक यातनाएं झेली फिर भी मैंने अपने हौसले को नहीं टूटने दिया। अंग्रेजी शासन की क्रूरता के बावजूद मेरा साहस अडिग रहा। जेल में मुझे नं. 7 बैरक में रखा गया, जेल में काम नहीं था तो साथियों के साथ मिलकर जेल परिसर में खुदाई कर अखाड़ा बना लिया इस अखाड़े में सभी कैदी एक साथ व्यायाम करते थे, इसी बीच तत्कालीन एस.पी. जेल के दौरे पर आये उन्होंने अखाड़े में पत्थर डलवा दिये एवं यह व्यायाम शाला बंद करवा दी।

जेल में भोजन व्यवस्था अत्यंत खराब थी दाल में इल्ली व कीड़े पाये जाते थे एक दो दिन भोजन करने में मुझे कठिनाई हुई लेकिन बाद में यही भोजन करने लगा।

1942 में भारत में अनाज आस्ट्रेलिया से आता था, जेल में रोटी बनाने का तरीका अलग सा था, इस प्रक्रिया में तीन फीट चौड़ी एवं 7 फीट लंबी एक भट्टी का उपयोग किया जाता था, जिसमें कैदी रोटिया बेलकर डालते थे तथा दूसरी तरफ 3-4 कैदी चमीटे से पकड़कर पलटते थे, रोटियों की अधिकता के कारण वे अक्सर कच्ची रह जाती थी, और कुछ तो इतनी खराब बनती थी कि उनको मुट्ठी में बांधों तो लोई में परिवर्तित हो जाती थीं।

12 दिसम्बर 1925 में जन्में ताराचंद जी जैन के पिताजी श्री दयाचंद जी जैन संस्कृत के एक प्रकांड पंडित थे, वे सागर जिले के लक्ष्मीपुरा वार्ड के गणेश संस्कृत विद्यालय में संस्कृत आचार्य के पर पर कार्यरत थे, उनका वेतन 65 रूपये प्रतिमाह था। पिताजी के विद्यालय में सात वर्ष की आयु में मेरा पहली कक्षा में दाखिल हुआ। मैंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा मोराजी से प्राप्त की उस समय कक्षा चौथी में पढ़ रहा था तथा ठंड के मौसम में कक्षाएं मैदान में लगा करती थी, सन् 1936 में सागर की जनसंख्या 36000 हुआ करती थी, चिंतामण सेठ जी ने महिला विद्यालय में खुद के खर्चे से एक बिल्डिंग बनवायी इस बिल्डिंग को देखकर मेरे शिक्षक ने कहा बेटा सागर में जनसंख्या के आधार पर कुछ नये विकास कार्य होने चाहिए, इससे प्रभावित होकर जब तीन साल बाद में सागर में नगरपालिका के चुनाव हुये तो

सेठ बिहारीलाल जी ने सागर की जनसंख्या 40000 को ध्यान में रखते हुए हिसाब से नलकूप योजना प्रारंभ की।

वर्ष 1942 में बाम्बे अधिवेशन के दौरान कांग्रेस की बैठक में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' का प्रस्ताव पारित हुआ तो इसका प्रभाव पूरे भारतवर्ष में देखने को मिला, इसी क्रम में म.प्र. के सागर जिले की महिला विद्यालय की तत्कालीन अधिष्ठाता श्री यमुना ताई ठाकुर ने मुझे चपरासी से बुलवाया एवं मुझे समझाया कि देखो बेटा अपने देश में अंग्रेजो से मुक्ति दिलाने के लिए अनेक आंदोलन हो रहे है, हमें भी सागर से कुछ करना चाहिए, मैंने उनसे पूछा कि मुझे क्या करना है, इसके जबाव में ताई ने मुझसे कहा कि तुम जैन हाई स्कूल से लगभग 80 सक्रिय लड़के एवं मैं महिला विद्यालय से 50-60 लड़कियों को भेजती हूँ, तुम यहां से इनको लेकर मॉडल स्कूल जाओ एवं वहां से कुछ लड़कों को इकट्ठा करके म्यूनिसपल स्कूल जाओ हम सभी इकट्ठा हो गये और पूरे रास्ते 'भारत माता की जय', 'इंकलाब जिंदाबाद', 'महात्मा गांधी की जय', 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' जैसे नारे लगाते हुये कलेक्ट्रेट पहुँचे। यहां के अधिकारियों ने हमें बसों में भरकर गढ़पहरा की घाटी पर छोड़ दिया एवं हमें जुलूस आदि न निकालने की चेतावनी भी दी । इस घटना से हमारे परिवारजन भी अत्यंत चिंतित हो गये थे।

दूसरे दिन फिर से इसी तरह जुलूस निकाला गया, लेकिन अधिकारी पहले से सतर्क थे और हमारी नारेबाजी शुरू हुई वे सब बाहर निकल आये एवं गवर्मेंट स्कूल के सामने लाठीचार्ज शुरू कर दिया। इस लाठीचार्ज से मैं एवं मेरे कई साथी घायल हो गये। कुछ दिनों के लिए यह सिलसिला रूक गया। अक्टूबर माह में पुन: यमुना ताई के कहने पर हम सब बच्चे मिलकर ब्लूटन बांटने का कार्य करने लगे यह तत्कालीन पत्रिका थी जिसमें आंदोलन से जुड़ी गतिविधियों का प्रकाशन हुआ करता था, 9 तारीख के ब्लूटन में सागर के मोटर स्टेण्ड पर एक बड़ी सभा आयोजित की जायेगी प्रकाशित हुआ, उस समय मोटर स्टेण्ड वर्तमान में पटैरिया स्वीट्स के सामने हुआ करता था। इस समय हमारी सभी सभाएं यहीं हुआ करती थीं। सारी जनता सभा में उपस्थिति देने हजारों की संख्या में उमड़ रही थी, पुलिस सर्तक थी। इसी भीड़ में मैं एवं मेरे दो साथी अलग-अलग पहुँचे गये। एक लड़के के हाथ में स्टूल था, दूसरे के हाथ में डंडा था एवं मेरे हाथ में देश का झंडा था। अंत में हम तीनों भीड़ में शामिल हो गये, स्टूल पर मैंने डण्डा लेकर झंडा फहराया एवं भाषण देना शुरू कर दिया 5 मिनिट बाद 2-3 पुलिसकर्मी आये उन्होंने मेरे हाथ पकड़कर कोतवाली ले जाकर जेल में बंद कर दिया । जेल में बंद होने के कारण मुझे स्कूल से निकाल दिया गया और 9 वीं कक्षा के बाद मेरी पढ़ाई बंद हो गयी।

जेल से रिहा होने के बाद मैंने अपने देश को स्वतंत्र कराने के लिए अनेक प्रकार से योगदान दिये, मुझे सदैव ही महान नेताओं का सानिध्य मिलता रहा। मैंने अपनी जीविका के लिए एक छोटी सी किराने की दुकान खोली एवं बच्चों को उच्च शिक्षा प्रदान की।

मैं सदैव महात्मा गांधी से एवं उनके 'जिओ और जीने दो' के सिद्धांत को जीवनपर्यंत अपनाया।

वर्तमान में 100 वर्ष की आयु होने पर भी मेरी दिनचर्या में कोई परिवर्तन नहीं हुआ सुबह उठकर व्यायाम, योगा एवं ध्यान करना, एक पहर संतुलित भोजना करना एवं सदैव समाज सेवा के लिए तत्पर रहना मेरी दिनचर्या का हिस्सा है।

ताराचंद जी जैन वर्तमान में युवाओं को यही संदेश देना चाहते हैं कि वैचारिक रूप से स्वतंत्र होकर जियो और जीने दो के मार्ग पर चलें।

'स्पंदन' संपादक मंडल के साथ श्री ताराचंद जैन

सागर सपूत: 4

योग साधना के प्रेरणा स्रोत: आचार्य विष्णु आर्य

सागर निवासी योगाचार्य विष्णुआर्य का नाम योग के क्षेत्र में अत्यंत सम्मान और श्रद्धा के साथ लिया जाता है। आपने अपने निरंतर अभ्यास और तपस्या से न केवल स्वयं को सिद्ध किया, बल्कि अनेक लोगों को योग साधना के पथ पर अग्रसर किया। मध्य प्रदेश के सागर जिले में 8 दिसम्बर 1928 को जन्मे विष्णु आर्य की प्रारंभिक शिक्षा सागर में ही संपन्न हुई साहित्य शास्त्री में पूर्व मध्य एवं योग शिक्षा शिवानंद आश्रम, मुंगेर (बिहार) से ग्रहण कर योग को केवल अपने जीवन का हिस्सा बनाया बल्कि इसे जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया।

योगाचार्य बनने की प्रेरणा वर्ष 1954 में आर्य समाज एवं उससे जुड़े विभिन्न संस्थानों के माध्यम से प्राप्त हुई। इसी वर्ष से योगाभ्यास का प्रारंभ किया गया और मध्य प्रदेश में योग के प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी भी निभाई। इस दौरान प्राणायाम, तांबे की थाली फाइना, सीने पर पत्थर सहना, चली गाड़ी को रोकना तथा हाथ से बिजली के बल्ब पीसने जैसे अद्धितीय योगाभ्यासों का प्रदर्शन किया। योग का प्रचार 1954 से आर्य समाज और अन्य संस्थाओं के माध्यम से सतत जारी रहा। वर्ष 1968 में रायगढ़ (छत्तीसगढ़) में आयोजित विश्व योग सम्मेलन में भाग लिया, जहाँ परमहंस स्वामी दयानंद सरस्वती (मुंगेर, बिहार) के दर्शन हुए और उनके अद्भुत योग-आसनों से प्रभावित होकर योग साधना को और गहन किया।

आपने योग को केवल एक व्यायाम की पद्धति न मानकर, जीवन जीने की सम्पूर्ण कला माना। आपकी मान्यता है कि - 'योग हमें न के वल शारीरिक रूप से स्वर्स बनाता है, बल्कि मानसिक और आत्मिक शुद्धता का मार्ग भी प्रशस्त करता है।' योग विज्ञान भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व की संस्कृतियों का आधार रहा है। आपने योग विज्ञान की अनेक प्रकार की विधियाँ, समाज में अपने-अपने तरीके से अपने जीवन में उतारकर तनाव मुक्त, रोग मुक्त, आनंदमय, ऊर्जावान, आध्यात्मिक जीवन बनाने का प्रयास किया है। उनके अनुसार योग विज्ञान एक ऐसा अभ्यास है जिसके द्वारा मनुष्य अपना सर्वांगीण विकास कर सकता है। योग के अभ्यास से अपने अंदर छुपी दिव्य शक्ति व चेतना के जागृत कर शीरी, मन, बुद्धि व प्राणों पर भी नियंत्रण कर सकता है। समाज व राष्ट्र के निर्माण में अभूतपूर्व सहयोग कर शांति स्थापित कर सकता है। आध्यात्मिक योग ही नई दिशा दे सकता है।

वर्ष 1960 में स्वामी सत्यानंद सरस्वती से योग दीक्षा प्राप्त कर उच्च कोटि की साधना का आरंभ किया। आसन और प्राणायाम के साथ-साथ ध्यान योग, क्रिया योग, योग निद्रा, शक्तिपात जैसी विशेष योग क्रियाओं में प्रशिक्षण लिया तथा विशेष विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त की। स्वामी जी के सान्निध्य में अनेक वर्षों तक देशभर में योग के प्रचार-प्रसार का कार्य किया। आपने सामान्य जन समूह के साथ-साथ जेल विभाग, पुलिस प्रशासन, महाविद्यालय, विद्यालय, आश्रमों एवं शालाओं में योग की शिक्षा दी। सागर जिला जेल में केदियों को नियमित योग प्रशिक्षण देकर उन्हें अपराध से दूर कर आत्म सुधार की प्रेरणा दी जो विगत 20 वर्षों से सतत जारी है।

स्वामी सत्यानंद जी के उत्तराधिकारीह पद्मभूषण परमहंस

स्वामी निरंजनानंद सरस्वती मुंगेर योग आश्रम, बिहार से जुड़कर वर्ष 2012 में विधिवत पूर्ण सन्यास ग्रहण किया। सन्यास की पारंपरिक विधि के अनुसार पिंडदान आदि संस्कार किए और वर्तमान नाम स्वामी दयानेश्वर सरस्वती रखा गया।

महर्षि पतंजलि के अनुसार, योग का अर्थ है चितवृतियों का निरोध। योग के आठ अंग–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि, योग की साधना का मूल आधार है। इनमें यम के अंतर्गत अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह आते हैं, जबकि नियम में शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर–प्रणिधान सम्मिलित है। इन सिद्धांतों को अपनाकर ही योग का वास्तविक उद्देश्य पूर्ण होता है।

1. शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार : लचीलापन, संतुलन और शक्ति बढ़ती है। रोग–प्रतिरोधक क्षमता (इम्यून सिस्टम) मजबूत होता है। सांस की क्षमता और पाचन तंत्र बेहतर होता है।

2. मानसिक शांति और एकाग्रता: तनाव, चिंता और अवसाद में कमीं आती है। मन अधिक स्थिर और एकाग्र रहता है। सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास बढ़ता है।

3. जीवनचर्या में अनुशासन: नियमितता और समय प्रबंधन की आदत बनती है। ाहार–संस्कार में सुधार होता है–सात्विक और संतुलित भोजन की ओर झुकाव बढ़ता है। देर रात तक जागने, अनियमित खानपान जैसी आदतें कम होती हैं।

4. सामाजिक और भावनात्मक संतुलन– दूसरों के प्रति सहानुभूति और सहयोगभाव बढ़ता है। क्रोध, ईर्ष्या और नकारात्मक भावनाएं कम होती हैं। संबंधों में मनुधरता आती है।

5. आध्यात्मिक विकास: आत्मचेतना और आत्मज्ञान की दिशा में प्रगति होती है। जीवन का उद्देश्य और दिशा स्पष्ट होती है। आंतरिक सुख और शांति का अनुभव होता है।

योगाचार्य विष्णु आर्य का उद्देश्य केवल रोग निवारण ही नहीं बल्कि समाज को मानसिक, नैतिक एवं आत्मिक उन्नति योग द्वारा प्रदान करना है वे व्याख्यान एवं सार्वजनिक संवाद के माध्यम से लगातार समाज को योग से जोड़ रहे हैं। आपको वर्ष 2012–13 में राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ योग प्रशिक्षण पुरस्कार एवं वर्ष 2022 में राष्ट्रीय योगासन प्रतियोगिता में उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया। आपने अनेक पुस्तकों का गहन अध्ययन कर योग दर्शन को समझा एवं उन्हें सरल भाषा में विद्यार्थियों तक पहुंचाने का कार्य किया आपके शिष्यों ने भी अनेक राज्य स्तरीय एवं राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता कर सागर का गौरव बढ़ाया है।

'स्पंदन' संपादक मंडल के साथ योगाचार्य विष्णु आर्य

अपराध रोकथाम

डॉ.राजू टण्डन
प्राचार्य–बी.टी.आई.ई.

अपराध निरोधक क्रियाओं से तात्पर्य संस्थानों तथा सामाजिक संगठनों द्वारा किये गये उन सभी प्रयत्नों से है जिनका उद्देश्य अपराधिकता को पूर्ण रूप से समाप्त करना है। उन सभी प्रयत्नों को हम अपराध निरोध के क्षेत्र में सम्मिलित करते हैं। जिनका उद्देश्य समाज में अपराध की घटनाओं को रोकना तथा अपराधियों के लिए दण्ड और उपचार की व्यवस्था करना है जो दूसरे व्यक्तियों को इस प्रकार का व्यवहार करने के लिए उकसाते है।

जिस समय अपराध की रोकथाम के लिए केवल दण्ड की प्रक्रिया प्रचलित थी उस समय जेल भेजना अपराधी के सुधार तथा अपराध निरोध का एकमात्र तरीका था। उस समय लोग यह समझते थे कि कठोर दण्ड व्यवस्था अपराधियों का सुधार तथा अपराध की घटनाओं को रोकती है। परन्तु वर्तमान युग में अपराध निरोध की नीति उपचार की प्रक्रिया पर आधारित है इसके अनुसार सकारात्मक गैर दण्डात्मक विधियों से अपराधियों का सुधार एवं अपराध कम किया जाना चाहिए।

समाज में कुछ अपराधी ऐसे भी होते हैं जो कानून की निष्पक्षता को स्वीकार नहीं करते उन्हें लगता है कि न्याय नहीं मिलेगा क्योंकि अधिकांश कानून पालन कराने वाले भ्रष्ट है तथा कानून उन लोगों के लिए नहीं है जिन्हें समाज में प्रतिष्ठित कहा जाता है। इस प्रकार के व्यक्ति असमानता की सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों में अपने आधातों का बदला स्वतः लेना चाहते हैं। वे पुलिस तथा न्यायपालिका की मदद के लिए नहीं दौड़ते है और कानून को अपने हाथों में लेकर ऐसे कार्य कर बैठते है जो अपराध की श्रेणी में आता है। अतः इस प्रकार के अपराधों को तभी रोका जा सकता है जब लोगों को यह विश्वास हो कि कानून उनकी हिफाजत करेगा. पुलिस उनकी मदद करेगी तथा अदालत उनके साथ न्याय करेगी। इस प्रकार का विश्वास साधारण जनता में तभी उत्पन्न हो सकता है जब साधारण नागरिक को यह दिखाई दे कि कानून की नजरें बड़ी पैनी है और उनसे कोई बच नहीं सकता। उन्हें यह अहसास हो सके कि कानून, पुलिस तथा न्यायपालिका उनके साथ भेद भाव न करके उनके जान माल की रक्षा करेगी। अतः आवश्यकता इस बात की है कि समाज में कानून के प्रति आदर की परम्परा का विकास हो और लोग मन से यह स्वीकार करने में समर्थ हो सके कि कानून तोड़ना अपराधिक ही नहीं वरन असामाजिक एवं अनैतिक भी है। इसी परम्परा के विकास से समाज में व्याप्त दोहरी नैतिकता का खण्डन सम्भव हो सकेगा और लोग नैतिकता तथा अनैतिकता के वास्तविक भेद को समझने में समर्थ हो सकेगे।

अपराध निरोध के क्षेत्र में पाई जाने वाली विषम तथा असाध्य स्थितियों के बावजूद समस्या के निदान हेतु सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाएँ तथा अन्य प्रबुद्ध समाजसेवी नागरिक जागरूक रहे है। अपराध जैसी गम्भीर समस्या के नियन्त्रण के लिए जो भी सुझाव आज तक प्राप्त है उनका सूचीबद्ध संक्षिप्त वर्णन निम्न प्रकार किया है:–

1. उन बुराईयों का उन्मूलन जो अपराध को जन्म देती है अर्थात गरीबी, अशिक्षा. बेरोजगारी, आर्थिक एवं सामाजिक अन्याय तथा शोषण की संरचना जब तक समाज में उन्मूलन नहीं होता तब तक पुलिस एवं न्यायपालिका सहित अपराधी सुधार की सभी विधियाँ अपराध को नियंत्रित नहीं कर पायेगी।
2. पुलिस को ऐसे साधनों से सुसज्जित करना होगा जिससे कि वह अपराध की सूचना मिलते ही घटना स्थल पर तुरन्त पहुंच जाये या उनको अपराध की घटना घटित होने की पूर्व सूचना प्राप्त हो सके, जिसके आधार पर वह तुरन्त कार्यवाही कर सके।
3. पुलिस के कार्य में बाधा पहुंचाने वाले उन वैधानिक अवरोधों को

भी दूर करना होगा जो कि थाने पर लिए गये बयान को न्यायालय के सम्मुख दिये गये बयान के समक्ष कोई महत्व प्रदान नहीं करते। इस स्थिति में पुलिस द्वारा पकडे गये मुलजिम न्यायालयों द्वारा आसानी से जमानत पर छूट जाते है। इस कारण लोगों के मन में यह विश्वास बैठ जाता है कि अपराध करने के बाद पुलिस या तो उन्हें पकड़ेगी ही नहीं और यदि पकड़ भी लेगी तो अदालत से उनकी जमानत हो जायेगी। इस प्रकार न तो उनकी मानहानि होगी और न ही उनको जेल होगी। कानून में जमानत पर छूट जाने का प्रावधान रहना आवश्यक है परन्तु अपराध निरोध की दिशा में न्यायालय का यह योगदान भी होना आव यक है कि वह जमानत पर अपराधियों को छोडने में कड़ाई बरतें और उन्ही लोगों की जमानत हो जिनके निर्दोष होने की अधिक सम्भावना हो। ऐसा होने से निरपराध व्यक्तियों के मन में यह विश्वास उत्पन्न होगा कि कानून की निगाह तथा दाँत दोनों ही बड़े पैने है और उनसे बिना आहत हुए बचा नही जा सकता है। इस धारणा से जो भय उत्पन्न होगा वह अपराध की रोकथाम करने में सहायक सिद्ध होगा।

4. पुलिस को जनता तथा समुदाय के सम्मानित नागरिकों का निरन्तर सहयोग अपराधियों को पकड़ने तथा उनके विरूद्ध कार्यवाही करने में प्राप्त होना अति आवश्यक है क्योंकि पुलिस के कर्मचारी कभी–कभी समुदाय के सम्मानित नागरिकों के अवांछित हस्तक्षेप करने के कारण अपराधों को रोकने तथा वास्तविक अपराधियों को पकडने में हिचकते है और पुलिस की इस निष्क्रियता का परिणाम यह होता है कि अपराधी को खुले घूमते देख कर दूसरे व्यक्ति भी अपराधी बनने का सपना देखने लगते है।
5. जनता का सहयोग प्राप्त करने के लिए पुलिस को अपने जोर जबरदस्ती वाले व्यवहार के तरीकों को छोड़कर अपनी निष्पक्षता, कर्तव्य परायणता, निष्ठा एवं एकता का परियच देना होगा। यदि पुलिस चाहती है कि लोग गवाही देने के लिए सरलता से तैयार हो जाये और सच कहने से भयभीत न हो तो पुलिस को ऐसे व्यक्तियों की न केवल सुरक्षा करनी पड़ेगी वरन उनके साथ उत्तरदायित्व एवं सौहार्दपूर्ण व्यवहार भी करना होगा। पारस्परिक सौहार्द्र एवं सहयोग से ही सफलता मिल सकेगी ।

रमसे क्लार्क ने अपराध की रोकथाम के सम्बन्ध में इस सुझाव को महत्वपूर्ण माना कि हम अपराध को तव तक वास्तविक अर्थों में नियंत्रित नहीं कर पायेगे जब तक लोग गन्दी वस्तियों, अज्ञान, हिंसा, भ्रष्टाचार, गरीबी, बेरोजगारी, कुपोषण तथा खराब रहन–सहन की अमानवीय दबाओं का शिकार बने रहेंगे। जब लोगों का आत्म–सम्मान हो, उनका स्वास्थ्य बना रहे, उन्हें शिक्षा प्राप्त हो सके. उन्हें नौकरी मिल सके. उनके रहन सहन का स्तर अमानवीय नं हो. वे सामाजिक, आर्थिक. शोषण का शिकार नहीं होगे तब उनमें दूसरो के हितों की रक्षा तथा कल्याण का विचार उत्पन्न होगा । परिणाम स्वरुप उनमें समाज की व्यवस्था, कानून, नैतिकता तथा सामाजिकता के प्रति आदर का भाव उत्पन्न होगा। अतः कहा जा सकता है कि अपराध की रोकथाम के लिये हमे उन समस्याओं को हल करना होगा जो अपराधों को जन्म देती है।

❖❖❖❖❖

अभिप्रेरणा

सब्र करो अभी, मेहनत जारी है।
वक्त खुद कहेगा, अब तेरी बारी।।
कोशिश कर, हल निकलेगा,
आज नहीं तो, कल निकलेगा।।
अर्जुन सा लक्ष्य रख, निशाना लगा।
मरूस्थल से भी फिर, जल निकलेगा।।
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे।
फौलाद का भी, बल निकलेगा।।

शिक्षा
शिक्षा को तुम तौल न पाओगे।
शिक्षा को तुम मोल न पाओगे।।
शिक्षा खर्च करने से बढ़ता है।
शिक्षा सीखने से निखरता है।।

ललता रजक
बी.ए. बी.एड. प्रथम सेम.

अम्लता (Acidity) और एंटासिड (Antacid)

डॉ. संचिता जैन
सहा. प्राध्यापक–रसायनशास्त्र

परिचय–

हमारी आधुनिक जीवनशैली और खान–पान की आदतों के कारण पेट में एसिडिटी की समस्या आम हो गई है। अम्लता (Acidity) एक सामान्य पाचन समस्या है जो तब होती है जब पेट में अम्ल (गैस्ट्रिक एसिड) का अधिक उत्पादन होता है। एसिडिटी होने पर पेट में जलन, खट्टी डकारें और अपच जैसी समस्याएं होती हैं। इनसे राहत पाने के लिए एंटासिड का उपयोग किया जाता है।

अम्लता के कारण–

अम्लता कई कारणों से हो सकती है, जिनमें शामिल हैं:

1. **अनियमित भोजन –** समय पर न खाना या अधिक मसालेदार भोजन करना।
2. **ज्यादा चाय और कॉफी–** कैफीन पेट में अम्ल का स्तर बढ़ा सकता है।
3. **धूम्रपान और शराब–** ये पदार्थ पेट की परत को नुकसान पहुंचाते हैं।
4. **तनाव और चिंता–** मानसिक तनाव भी पाचन तंत्र को प्रभावित कर सकता है।
5. **कम पानी पीना–** शरीर में पानी की कमी से पाचन क्रिया प्रभावित होती हैं।

अम्लता के लक्षण–

1. छाती और पेट में जलन
2. खट्टी डकारें आना
3. गले में जलन या कड़वाहट
4. मितली और उल्टी जैसा महसूस होना
5. पेट फूलना और गैस बनना

एंटासिड क्या है ?

एंटासिड ऐसी दवाएं होती हैं जो पेट में अतिरिक्त एसिड को न्यूट्रलाइज़ (निष्क्रिय) करके अम्लता से राहत दिलाती हैं। ये मुख्य रूप से क्षारीय (Alkaline) पदार्थ होते हैं, जो एसिड को संतुलित करने में मदद करते हैं।

एंटासिड के प्रकार और उनके उदाहरण–

1. सोडियम बाइकार्बोनेट इसे 'बेकिंग सोडा' भी कहते हैं, जो एसिड को तुरंत निष्क्रिय करता है।
2. मैग्नीशियम हाइड्रॉक्साइड– यह तेजी से असर करता है और कब्ज नहीं करता।
3. एल्युमिनियम हाइड्रॉक्साइड– यह अम्लता को कम करता है लेकिन कब्ज कर सकता है।
4. कैल्शियम कार्बोनेट यह हड्डियों के लिए भी फायदेमंद होता है।

प्राकृतिक एंटासिड–

1. दूध – यह पेट की जलन को शांत करता है।
2. केला – अम्लता को कम करता है और पेट को सुरक्षित रखता है।
3. गुड़– पाचन में सहायक होता है और एसिडिटी को कम करता है।
4. सौंफ– गैस और अम्लता को कम करने में मदद करता है।
5. नारियल पानी – आंत के पीएच स्तर को संतुलित रखता है।

निष्कर्ष

अम्लता एक आम समस्या है लेकिन इसे सही खानपान और एंटासिड के उपयोग से नियंत्रित किया जा सकता है। अगर समस्या लगातार बनी रहती है, तो डॉक्टर से सलाह लेना जरूरी है। प्राकृतिक उपायों को अपनाकर भी अम्लता से राहत पाई जा सकती है।

जी.एस.टी. और कराधान प्रणाली में पारदर्शिताः एक विस्तृत विश्लेषण

भारत में वस्तु एवं सेवा कर (GST) का लागू होना, 1 जुलाई 2017 को एक ऐतिहासिक कदम था, जो भारतीय कर प्रणाली में एक बड़ी क्रांति लेकर आया। यह विभिन्न केंद्रीय और राज्य करों को एकीकृत करता है, जिससे करों के भुगतान में पारदर्शिता बढ़ी है। इससे पहले भारत में उत्पाद शुल्क, सेवा कर, राज्य वैट, आदि विभिन्न करों की जटिलताओं का सामना करना पड़ता था। GST ने इन सभी करों को समाहित करके एक सरल और प्रभावी कर प्रणाली का निर्माण किया है, जिसके परिणामस्वरूप करों का भुगतान और संग्रहण अधिक पारदर्शी और व्यावसायिक बना है। इस लेख में हम विस्तार से देखेंगे कि GST ने कैसे भारत की कराधान प्रणाली में पारदर्शिता लायी है और किस प्रकार इसे लागू करने से करों की चोरी और अनियमितताओं में कमी आई है।

डॉ. रितु जैन
सहा. प्राध्यापक–वाणिज्य

GST द्वारा पारदर्शिता की वृद्धि के विभिन्न पहलू

1. एकीकृत कर संरचना और दोहरे कर प्रभाव की समाप्ति

GST से पहले, भारत में विभिन्न स्तरों पर कर लागू होते थे। उत्पाद शुल्क, सेवा कर, राज्य वैट, प्रवेश कर जैसे कई करों के कारण एक ही वस्तु या सेवा पर कई बार कर लगाया जाता था, जिसे 'करों का दोहराव' कहा जाता है। इस प्रणाली ने व्यापारियों और उपभोक्ताओं दोनों के लिए कर की गणना और भुगतान को जटिल बना दिया था। GST ने इसे सरल बनाया है, क्योंकि अब वस्तु या सेवा पर एक ही कर लागू होता है और वह भी केवल मूल्य संवर्धन पर।

उदाहरणः पहले एक वस्तु के निर्माण, वितरण और विक्री के प्रत्येक चरण में कर लगाया जाता था। मान लीजिए एक निर्माता को कच्चे माल पर उत्पाद शुल्क देना था, फिर एक थोक व्यापारी को बैट और बिक्री पर सेवा कर देना था। लेकिन GST में जब केवल एक ही कर लगाया जाता है, और इनपुट टैक्स क्रेडिट (ITC) के माध्यम से व्यापारियों को पहले से चुकाए कर समायोजन करने का अवसर मिलता है। इससे कर का दोहरा प्रभाव समाप्त हो गया है और कराधान अधिक पारदर्शी हो गया।

2. डिजिटल कर प्रणाली से पारदर्शिता

GST प्रणाली पूरी पूरी तरह से डिजिटल है। सभी करदाताओं को GST पोर्टल पर रजिस्टर करना होगा और इसके माध्यम से रिटर्न दाखिल करना होता है। इसके साथ ही सभी व्यापारियों को अपनी विक्री और खरीदारी का विवरण इलेक्ट्रॉनिक रूप से दाखिल करना पड़ता है,जिससे कर की चोरी और गलत रिपोर्टिंग में कमी आयी है।

उदाहरण: मान लीजिए एक व्यापारी GSTR-1 में अपनी विक्री का विवरण दर्ज करता है और GSTR-3B में कर भुगतान करता है यह जानकारी GST नेटवर्क (GSTN) पर अपलोड होती है। और यह स्वत: दूसरे कर दाताओं द्वारा दाखिल की गई जानकारी से मेल खाती है। यदि इसमें कोई असमानता होती है तो इसे जल्दी पकड़ लिया जाता है और व्यापारी को सुधारने के लिए सूचित किया जाता है।

प्रभावः डिजिटल प्रणाली से व्यापारियों की गतिविधियों का रिकॉर्ड रखने में सहूलियत होती है और सभी लेन–देन पारदर्शी तरीके से सामने आते है। इसके कारण कर अधिकारियों द्वारा डेटा की जांच और कर चोरी को पकड़ने में मदद मिलती है।

3. ई–वे बिल प्रणाली से माल परिवहन में पारदर्शिता

ई–वे बिल प्रणाली GST का एक अन्य प्रमुख उपकरण है, जो माल के परिवहन की पारदर्शिता सुनिश्चित करता है। इस प्रणाली के तहत, जब भी कोई व्यापारी 50,000 रुपये से अधिक मूल्य का माल परिवहन करता है, तो उसे एक ई–वे बिल जनरेट करना होता है, जिसमें माल की पूरी जानकारी,बिक्रेता और प्राप्तकर्ता का विवरण होता है। यह बिल GST नेटवर्क पर रिकॉर्ड होता है और कर अधिकारियों द्वारा रियल टाइम में जांचा जा सकता है।

उदाहरणः मान लीजिए एक व्यापारी दिल्ली से मुंबई माल भेज रहा है। व्यापारी को उस माल के लिए ई–वे बिल जनरेट करना होता है, जिसमें माल का विवरण और ट्रांसपोर्टर की जानकारी होती है। यदि कर अधिकारी किसी चेकपोस्ट पर माल की जांच करते हैं, तो वे ई–वे बिल

को स्कैन करके माल की वैधता और उसके विवरण को सत्यापित कर सकते हैं। इससे माल की अवैध आवाजाही और कर चोरी में कमी आती है।

प्रभावः यह प्रणाली न केवल माल की आवाजाही को सुगम बनाती है बल्कि इसके द्वारा कर चोरी और जाली बिलों की घटनाओं को भी नियंत्रित किया जाता है।

4. इनवॉइस मिलान और कर रिपोर्टिंग में सुधार

GST का एक और प्रमुख पहलू है इनवॉइस मिलान। इसके अंतर्गत व्यापारियों को अपनी विक्री और खरीदारी का विवरण दाखिल करना होता है। बिक्री करने वाले व्यापारी द्वारा जारी किए गए इनवॉइस का मिलान खरीददार द्वारा दाखिल किए गए डेटा से किया जाता है। अगर किसी व्यापारी ने खरीदी पर कर का भुगतान किया है, तो उसे उसी मूल्य पर इनपुट टैक्स क्रेडिट (ITC) मिलेगा, बशर्ते दोनों पक्ष सही तरीके से जानकारी दाखिल करें।

उदाहरण: यदि विक्रेता ने 10,000 रुपये की बिक्री पर 18% GST (1800 रुपये) लिया है और खरीदार ने 1800 रुपये का ITC दावा किया है, तो दोनों के डेटा का मिलान किया जाएगा। यदि कोई गलत जानकारी है तो उसे पकड़ लिया जाता है और सुधार के लिए नोटिस जारी किया जाता है।

प्रभावः इस प्रणाली के द्वारा व्यापारियों को सही कर का भुगतान करना पड़ता है और गलत रिर्पोटिंग के खिलाफ कार्रवाई होती है।

GST के माध्यम से कर चोरी में कमी

GST की पारदर्शिता से कर चोरी में महत्वपूर्ण कमी आई है। क्योंकि हर लेन-देन का डिजिटल रिकॉर्ड रखा जाता है, इससे अवैध तरीके से कर चुकाने की संभावना कम हो गई है। इसके अलावा, GST के तहत इनपुट टैक्स क्रेडिट केवल तभी पास किया जा सकता है जब आपूर्तिकर्ता ने कर का भुगतान किया हो। इसमे व्यापारी अपने आपूर्तिकर्ताओं पर दबाव डालते हैं कि वे कर भुगतान करें, जिससे आपूर्ति श्रृंखला में कर चोरी की संभावना घटती है।

उदाहरण: अगर कोई विजेता अपने माल पर GST का भुगतान नहीं करता है, तो खरीददार को उस पर ITC का लाभ नहीं मिलेगा। इसके कारण विक्रेता को कर चुकाना अनिवार्य हो जाता है।

निष्कर्ष

GST ने भारत में कराधान प्रणाली को अधिक पारदर्शी, आसान और डिजिटल बना दिया है। यह सिस्टम अब व्यापारियों के लिए नहीं कर भुगतान सुनिश्चित करता है और कर चोरी की संभावना को न्यूनतम करता है। ई-वे विन, इनवॉइस मिलान, और ITC जैसी प्रणालियों के माध्यम से करदाताओं और कर अधिकारियों के बीच पारदर्शिता बनी रहती है, जिससे व्यापार और व्यापारिक निर्णयों की पारदर्शिता बड़ी है। हालांकि कुछ चुनौतियां है, लेकिन निरंतर सुधार और तकनीकी उन्नति से GST ने एक ऐसी कर प्रणाली की नींव रखी है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए स्थिर और पारदर्शी है।

❖❖❖❖❖

कोशिश कर

प्रीति पाण्डेय
सहा. प्राध्यापक-समाजशास्त्र

कोशिश कर हल निकलेगा
आज नहीं तो कल निकलेगा
अर्जुन के तीर सा सध
मरूथल से भी जल निकलेगा।

मेहनत कर पौधों को पानी दे
बंजर जमीन से भी फल निकलेगा
ताकत जुटा हिम्मत को आग दे
फौलाद का भी बल निकलेगा

जिन्दा रख दिल में उम्मीदों को
रेत के समंदर से भी गंगाजल निकलेगा
कोशि जारी रख कुछ कर गुजरने की
जो है आज थाम थमा सा चल निकलेगा।

शिक्षा का महत्व मानव जीवन में

डॉ. सुरेश कोरी
सहा. प्राध्यापक–भूगोल

शिक्षा हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग है जो हमारे ज्ञान कौशल और दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक होता है। कल्पना कीजिए, अगर सूरज न उगे तो दुनिया कैसी होगी? अंधकार से भरी, दिशाहीन और ठहरी हुई। ठीक इसी प्रकार, अगर शिक्षा न हो, तो मानव जीवन भी अज्ञानता और अंधविश्वास के अंधेरे में डूबा रहेगा। शिक्षा केवल किताबों के पन्नों तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह सोचने, समझने एवं आगे बढ़ने की कला सिखाती है। यह हमें सही एवं गलत की पहचान कराती है और आत्मनिर्भर बनने का मार्ग दिखाती है। यही कारण है कि शिक्षा को पानी और हवा की तरह ही जीवन का आधार माना जाता है। शिक्षा व्यक्ति को बेहतर नागरिक बनाने सामाजिक बुराईयों से निपटनें एवं राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

शिक्षा: विकास और सफलता का प्रवेश द्वार

शिक्षा मनुष्य के ज्ञान का विकास करती है। शिक्षा केबल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है, यह जीवन को समझने, समस्याओं को हल करने और समाज में सकारात्मक योगदान देने की कला है। यह एक सतत प्रक्रिया है जो न केवल तकनीकी कौशल और ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि नैतिक मूल्यों, आत्मविश्वास और बौद्धिक विकास को भी बढ़ावा देती है। शिक्षा हमें यह सिखाती है कि हम क्या जानते हैं और कैसे सोचते हैं, जिससे हम अपने और समाज के भविष्य को आकार दे सकें। इसका उद्देश्य एक अच्छी नौकरी पाना नहीं, बल्कि जिम्मेदार और जागरूक नागरिक बनाना भी है।

शिक्षा का महत्व क्या है?

ज्ञान (Knowledge) : शिक्षा हमें नई चीज़ें सीखने और दुनिया को बेहतर तरीके से समझने में मदद करती है। यह हमारे दिमाग को खोलती है और सोचने की क्षमता बढ़ाती है।

कौशल विकास (Skill Development) : स्कूल और कॉलेज में हमें केवल पढ़ाई ही नहीं, बल्कि सोचने, निर्णय लेने और समस्या हल करने की कला भी सिखाई जाती है।

करियर की तैयारी (Career Preparation) : अच्छी शिक्षा हमें अपने पसंदीदा क्षेत्र में करियर बनाने और सफलता पाने में मदद करती है।

व्यक्तिगत विकास (Personal Growth) : शिक्षा न केवल ज्ञान देती है बल्कि आत्मविश्वास, धैर्य और नई चीज़ें सीखने की जिज्ञासा भी बढ़ाती है।

नैतिक मूल्य (Ethical Values) : एक शिक्षित व्यक्ति सही और गलत के बीच फर्क समझ सकता है और अपने समाज के प्रति जिम्मेदार बनता है।

सामाजिक कौशल (Social Skills) : स्कूल और कॉलेज में हम दोस्तों से मिलते हैं, टीमवर्क सीखते हैं और समाज के साथ घुलना–मिलना सीखते हैं।

आर्थिक स्वतंत्रता (Financial Independence) : अच्छी शिक्षा हमें एक स्थिर करियर और बेहतर जीवन जीने के अवसर देती है।

वैश्विक जागरूकता (Global Awareness) : शिक्षा हमें दुनिया की विविध संस्कृतियों, विचारों और लोगों के बारे में जागरूक बनाती है।

नेतृत्व क्षमता (Leadership Skill) : पढ़ाई के दौरान मिलने वाले अनुभव हमें एक अच्छा लीडर बनने में मदद करते हैं।

सशक्तिकरण (Empowerment) : शिक्षा हमें अपने हक के लिए आवाज उठाने और समाज में बदलाव लाने की ताकत देती है।

सर्वश्रेष्ठ धन है शिक्षा

यह एक मात्र ऐसा धन है जो बाँटने पर कम नहीं होता, बल्कि इसके विपरीत बांटने पर बढ़ता ही जाता है। शिक्षा एक ऐसा धन है जिसे ना तो कोई चुरा सकता है और ना ही कोई छीन सकता है। हमने देखा होगा कि हमारे समाज में जो शिक्षित व्यक्ति होते हैं उनका एक अलग ही मान सम्मान होता है और लोग उन्हें हमारे समाज में इज्जत भी देते हैं। इसलिए हर व्यक्ति चाहता है कि वह शिक्षित हो इसीलिए आज के समय में हमारे जीवन में शिक्षा का बहुत अधिक महत्व हो गया है। शिक्षा के कारण हमें हमारे समाज में सम्मान मिलता है जिससे हम समाज में सर उठा कर जी सकते हैं।

निष्कर्ष :

शिक्षा निश्चित रूप से एक अच्छे जीवन की आशा है। शिक्षा प्रत्येक मनुष्य का मौलिक अधिकार है और इस अधिकार को नकारना सही नहीं है। इन सबसे ऊपर, सभी देशों की सरकारों को शिक्षा का प्रसार सुनिश्चित करना चाहिए और जन जन तक शिक्षा की लहर पहुंचानी चाहिए क्योंकि विकास तभी संभव है जब राष्ट्र शिक्षित तो है उन्नति और प्रगति की ओर अग्रसर होगा।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

कर्त्तव्य निर्माण

ललिता रजक
बी.एड. द्वितीय सेम.

कर्तव्य निर्माण-

स्वयं शारदा वाट जोहती
अती नवीनतम नित्य बनो।
शिव को अर्पित हो पाये वो
कालीदास साहित्य बनो।।
कल-कल क्षिप्रा की धारायें,
प्रतिपल तुमसे कहती हैं,
नव भारत निर्माण हेतु
सम्राट विक्रमादित्य बनो।।

हमारे तिरंगे के महत्व के लिये-

धरा की लाज वीरों के
पराक्रम पर टिकी होगी।
हरएक कण पर समर्पण की
इबारत भी दिखी होगी।
नजर भरकर जरा देखो पता चल जायेगा तुमको।
तिरंगे पर सपूतों की विजयगाथा लिखी होगी

सागर जिला पुरातत्त्व संग्रहालय

डॉ. मनीषा तिवारी
सहा. प्राध्यापक, इतिहास

सागर जिला पुरातात्त्विक एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध है। सागर एवं आसपास के क्षेत्रों में जो भी पुरानिधियाँ एवं पुरासंपदा बिखरी पड़ी हुई थी, उनके महत्व को देखते हुए एवं सागर में बिखरी असुरक्षित सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखने हेतु 26 जनवरी 1980 ई. में सागर जिला पुरातत्त्व संग्रहालय की स्थापना की गई।

सागर जिला पुरातत्त्व संग्रहालय का सामान्य दृश्य

संग्रहालय से तात्पर्य वह स्थान जहाँ पुरावस्तुएँ संग्रहीत हो। संग्रहालय में संग्रहीत वस्तुओं, पुरानिधियों से जनसामान्य का ज्ञान संर्वधन होता है तथा अपनी विरासत तथा संस्कृति का ज्ञान होता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु सन 1874 ई. में जिला संग्रहालय स्थापित करने का सूत्रपात हुआ। जिला पुरातत्त्व संग्रहालयों में जिला स्तर की झांकी प्रदर्शित होती है। जिला संग्रहालय की देख रेख, उनका नियंत्रण संरक्षण एवं संवर्द्धन जिला प्रशासन द्वारा किया जाता है।

प्रारम्भ में सागर जिला पुरातत्त्व संग्रहालय वृन्दावन बाग स्थित निजी भवन में था,तथा इस संग्रहालय में 50 प्रतिमाएँ संग्रहीत थीं। इस संग्रहालय में अधिकांश मूर्तियां 9 वीं ईस्वी से 15 वीं ईस्वी तक की है।

सागर के तत्कालीन कमिश्नर श्री पी. राघवन के अथक प्रयासों से सन् 1991 में इस संग्रहालय को शेर बंगला में स्थानांतरित कर दिया गया। कुछ समयावधि बाद पुनः इसको स्थानांतरित करने की योजना बनाई गई। सन 2001 ई. में इसको जिला शिक्षा अधिकारी भवन में स्थापित कर दिया गया, लेकिन स्थानाभाव एवं संरक्षण के अभाव में पुनः इसे स्थानांतरित कर दिया गया। सन 2009 ई. से यह संग्रहालय डफरिन अस्पताल नामक भवन में स्थापित है। वर्तमान में यहीं 450 प्रतिमाएँ संग्रहीत है, ये प्रतिमाएँ शैव, वैष्णव, शाक्त, सौर गाणपत्य, जैन एवं बौद्ध धर्मों से सम्बन्धित है। प्रस्तर प्रतिमाओं के अतिरिक्त संग्रहालय में अष्टधातु से निर्मित प्रतिमाएँ, अनेक स्थापत्य खण्ड, शिलालेख, रजत एवं ताम्र मुद्राओं के साथ एक पाषाण निर्मित जलनाव एवं सौर घड़ी भी

पुरातत्त्व संग्रहालय, सागर

संरक्षित है। जिला पुरातत्त्व संग्रहालय में सागर के अतिरिक्त उसके आसपास के क्षेत्रों रहली, मढ़पिपरिया, देवरी, बीना, खुरई एवं खानपुर से प्राप्त प्रतिमाएँ संग्रहीत है। संग्रहालय में पूर्व मध्यकाल से आधुनिक काल तक की शिल्पावशेष प्रमुख रुप से संग्रहीत है। इनमें से उत्कृष्ट कलाकृतियों को विभिन्न दीर्घाओं में प्रदर्शित किया गया है। दीर्घाओं के अतिरिक्त संग्रहालय के बरामदे एवं बाह्य परिसर में भी कुछ आर्कषक कलाकृतियाँ प्रदर्शित की गई हैं, जिससे यहाँ आने वाले पर्यटकों, शोधार्थियों एवं जनसामान्य द्वारा क्षेत्रीय प्राचीन कला के मूलतत्वों को आत्मसात किया जा सकें।

दीर्घाओं में प्रदर्शित विशिष्ट कलाकृतियों का विवेचन निम्नानुसार है–

शैव दीर्घा– इस दीर्घा में शैव धर्म से सम्बन्धित लगभग साठ कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया है, इनका निर्माणकाल पूर्व मध्यकाल से आधुनिक काल तक है। इन कलाकृतियों में शिव की एकल प्रतिमाएँ, मुखलिग, युगल प्रतिमाएँ, गणेश कार्तिकेय भैरव, चामुण्डा एवं नंदी की प्रतिमाएँ दर्शनीय हैं।

वैष्णव दीर्घा – इस दीर्घा में वैष्णव धर्म से सम्बन्धित लगभग चालीस कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया है। ये मुख्यतः कलचुरि, चंदेल एवं परमार काल से सम्बन्धित हैं। इन कलाकृतियों में विष्णु के अवतार से सम्बन्धित प्रतिमाएँ, स्थानक प्रतिमाएँ युगल–प्रतिमाएँ इत्यादि दर्शनीय हैं।

शक्ति दीर्घा– इस दीर्घा में शाक्त धर्म से सम्बन्धित लगभग चालीस कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया है. ये मुख्यतः कलचुरि, चंदेल एवं परमार काल से सम्बन्धित है। इन कलाकृतियों में महिषासुरमर्दिनी, लक्ष्मी देवी एवं गंगा–यमुना की प्रतिमाएँ दर्शनीय है।

जैन एवं बौद्ध दीर्घा– इस दीर्घा में जैन एवं बौद्ध धर्म से सम्बन्धित लगभग पन्द्रह कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया है, इनका निर्माणकाल 10वीं शताब्दी ई. से 12वीं शताब्दी ई. के मध्य का है। जैन कलाकृतियों में जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ एवं बौद्ध कलाकृतियों में आसनस्थ एवं स्थानक बुध्द की प्रतिमाएँ दर्शनीय हैं।

इन दीर्घायों के साथ ही अन्य कलात्मक एवं अनुपम कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया है. इन कलाकृतियों में सूर्य, नवग्रह, सुरसुंदरियों, नाग–नागी, पशु–पक्षी एवं अन्य स्थापत्यखण्ड दर्शनीय हैं। सागर जिला पुरातत्त्व संग्रहालय में संग्रहीत कलाकृतियां अद्वितीय हैं। संग्रहालय में संग्रहीत कलाकृतियाँ सागर जिले के पुरावैभव को दर्शाती है।

प्रेरक प्रसंग

बिल गेट्स सुबह के नाश्ते के लिए एक रेस्टोरेंट पहुँचे। जब उन्होंने नास्ता समाप्त कर लिया और वेटर बिल ले आया, तब उन्होंने भुगतान के अलावा पाँच डॉलर बतौर टिप ट्रे में रख दिए। वेटर ने टिप ले तो लिया पर उसके मुंह पर आया हुआ आश्चर्य का भाव बिलगेट्स की दृष्टि से ओझल न हो सका। उसी को भांपते हुए उन्होंने पूछा क्या कोई खास बात है? वेटर ने कहा जी अभी दो दिन पहले की बात है, इसी टेबल पर आपकी बेटी ने लंच किया और मुझे बतौर टिप में पांच सौ डॉलर दिए थे। और उनके पिता व दुनिया के सबसे अमीर आदमी होने के बावजूद आपने मुझे केवल पाँच डॉलर दिए हैं। मुस्कुराते हुए बिल गेट्स बोले हां क्योंकि वह दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति की बेटी है और मैं एक लकड़हारे का बेटा हूँ। यही मेरा सर्वोत्तम मार्गदर्शन है, हमें अपने अतीत को नहीं भूलना चाहिये।

इमराज पाल

बीए बीएड VII सेमेस्टर

'हमें मनुष्य और समाज की वास्तविक समस्याओं के समाधान के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी के उपयोग में किसी से पीछे नहीं रहना चाहिए।'

-डॉ. विक्रम साराभाई

शिक्षा क्या है ?

किरण तिवारी
सहा. प्राध्यापक, शिक्षा विभाग

शिक्षा ''ज्ञान का प्रसार'' यह वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति न केवल अपने विषय में जानकारी प्राप्त करता है, बल्कि उसे समझकर समाज के विकास में योगदान देने के योग्य बनता है।

शिक्षा का अर्थ केवल औपचारिक शिक्षा संस्थानों में दी जाने वाली शिक्षा तक ही सीमित नहीं है, बल्कि अनौपचारिक और व्यावहारिक ज्ञान भी इसका हिस्सा है।

शिक्षा से व्यक्ति की आन्तरिक शक्तियों का विकास किया जाता है। शिक्षा अपने विस्तृत अर्थ में बहुत व्यापक है और विद्यालय अनुभवों तक सीमित नहीं है। इसका उद्देश्य व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन लाना है तथा उसके ज्ञान के साथ-साथ उसके कौशल एवं उसकी आंतरिक शक्तियों का विकास करना है।

अर्थात शिक्षा एक ऐसी सामाजिक एवं गतिशील प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जन्मजात गुणों को विकसित करके उसके व्यक्तित्व को निखारती है एवं सामाजिक वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने के योग्य बनाती है। यह व्यक्ति को उसके कर्तव्यों का ज्ञान करवाते हुए उसके विचार एवं व्यवहार में समाज के लिए कल्याणकारी परिवर्तन लाती है।

शिक्षा का महत्व प्राचीन काल से ही रहा है। भारतीय सभ्यता में गुरुकुल में विद्यार्थी गुरु के सान्निध्य में रहकर शास्त्रों के ज्ञान के साथ-साथ जीवन के विभिन्न पहलुओं का ज्ञान भी प्राप्त करते थे।

शिक्षा का यह प्रारूप समाज को नैतिक, धार्मिक, और सामाजिक मूल्यों से जोड़ता है।

वर्तमान समय में शिक्षा परिवार से प्रारंभ होकर विद्यालय, समाज एवं विभिन्न संचार माध्यमों के द्वारा व्यक्ति में बाहरी एवं आंतरिक ज्ञान-कौशल विकसित करती है। व्यक्ति में सोचने, समझने और निर्णय लेने की क्षमता को विकसित करती है। शिक्षा से व्यक्ति आत्मनिर्भर बनता है और समाज में अपना स्थान बनाता है। यह न केवल व्यक्तिगत विकास में सहायक होती है, बल्कि समाज और देश के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अर्थात शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा हमें अधिकार और कर्तव्य का ज्ञान होता है और हम सभ्य समाज की स्थापना में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे पाते हैं। अतः व्यक्ति के जीवन में शिक्षा का उतना ही महत्त्व समझा जा सकता है जितना कि शरीर के लिए प्राण का महत्त्व है। जिस प्रकार प्राण के बिना शरीर व्यर्थ है, उसी प्रकार शिक्षा के बिना मानव जीवन भी व्यर्थ प्रतीत होता है।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

'सपना वो नहीं
जो आप नींद में देखते हैं,
सपना वो है
जो आपको नींद नहीं
आने देता।'

-डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

भारत में आरक्षण की वर्तमान स्थिति

अलका असाटी
सहा. प्राध्यायक, शिक्षा विभाग

किसी भी देश की आत्मा उसमे बसने वाले मानव समाज से होती है और समाज का विकास देश की प्रकृति एवं समृद्धि को बढ़ाता है। समाज का विकास तब होता है जब उसके प्रत्येक अंग स्वस्थ हो अर्थात प्रत्येक व्यक्ति को बराबर अवसर मिले अगर हम भारतवर्ष की बात करें तो यहां विभिन्न धर्म जाति संप्रदाय और संस्कृति के लोग बसते हैं और यहां हर जाति के लिए अवसर एवं योग्यताएं सीमित थे। हर एक वर्ग के लिए कर का बंटवारा कर दिया गया था भेदभाव था ऐसे समय में देश का विकास की तो बात ही कैसे करें।

आजादी के पहले प्रेसिडेंसी रीजन और रियासतों के एक बड़े हिस्से में पिछड़े वर्गों (बीसी) के लिए आरक्षण की शुरुआत हुई थी। महाराष्ट्र में कोल्हापुर के महाराजा छत्रपति साहूजी महाराज ने 1901 में पिछड़े वर्ग से गरीबी दूर करने और राज्य प्रशासन में उन्हें उनकी हिस्सेदारी (नौकरी) देने के लिए आरक्षण शुरु किया था। यह भारत में दलित वर्गों के कल्याण के लिए आरक्षण उपलब्ध कराने वाला पहला सरकारी आदेश है।

1947 में भारत ने स्वतन्त्रता प्राप्त की। डॉ. अम्बेडकर को संविधान भारतीय के लिए मसौदा समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। भारतीय संविधान ने केवल धर्म, नस्ल, जाति, लिंग और जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव का निषेध करता है। बल्कि सभी नागरिकों के लिए समान अवसर प्रदान करते हुए सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछले वर्गों या अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की उन्नति के लिए संविधान में विशेष धाराएँ रखी गयी हैं। 10 सालों के लिए उनके राजनीतिक प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित करने के लिए अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए अलग से निर्वाचन क्षेत्र आवंटित किए गए हैं। (हर दस साल के बाद संवैधानिक संशोधन के जरिए इन्हें बढ़ा दिया जाता है).

आरक्षण भारत में सकारात्मक कार्यवाही की एक प्रणाली है जिसे ब्रिटिश शासन के दौरान स्थापित किया गया था। भारतीय संविधान में प्रावधानों के आधार पर यह केंद्र सरकार और भारत के राज्यों और क्षेत्रों को उच्च शिक्षा में प्रवेश, रोजगार, राजनैतिक निकायों आदि में 'सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े नागरिकों के लिए आरक्षित कोटा या सीटों का एक निश्चित प्रतिशत आवंटित करने की अनुमति देता है। इसके क्रियान्वयन के बाद से, आरक्षण अपने प्रभाव, निष्पादन और प्रभावशीलता पर बहस और विवाद का विषय रहा है, जिसने राजनीतिक दलों के एजेंडे और सामाजिक समूहों की कार्यवाहियों को महत्वपूर्ण रूप से आकार दिया है।

भारत में आरक्षण की आवश्यकता

हिंदू धर्म शास्त्रों के अनुसार, भारतीय समाज में जाति व्यवस्था का प्रचलन प्राचीन काल से ही मुख्यधारा में रहा है, जो निम्न वर्ग के लोगों के विकास में बाधा उत्पन्न करता है। दूसरे शब्दों में, जाति व्यवस्था के दुष्परिणाम आज भी समाज में मौजूद हैं।

सरकार की जिम्मेदारी देश के हर नागरिक को समान दर्जा और अवसर प्रदान करना है। कई सालों से आरक्षण को सामाजिक बुराइयों– कुछ समूहों के खिलाफ उत्पीडन और अन्याय के खिलाफ एक हथियार माना जाता रहा है। इसीलिए आरक्षण को सकारात्मक कार्यवाही के रूप में संदर्भित किया जाता है, जो पिछड़े वर्गों के उत्थान का समर्थन करता है।

हालांकि, सामाजिक असमानताओं को खत्म करने का यही एकमात्र तरीका नहीं है। निम्न श्रेणी के लोगों की स्थिति में सुधार के लिए छात्रवृत्ति, फंड, मुफ्त कोचिंग और अन्य सामाजिक कल्याण कार्यक्रम जैसे अन्य तरीके भी हैं।

शुरुआत में आरक्षण का उद्देश्य केवल अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदायों की स्थिति को उन्नत करना था, और इसके लिए अवधि केवल 10 वर्ष (1951–1961) की थी। हालांकि, मंडल आयोग की रिपोर्ट के कार्यान्वयन ने आरक्षण प्रणाली में अन्य पिछड़े समुदायों (ओबीसी) को शामिल किया और आरक्षण के दायरे को व्यापक बनाया। आरक्षण की स्थिति प्रदान करने के मानदंड भी वर्षों में बदल गए हैं। इसके अलावा, अब आरक्षण के लिए आर्थिक स्थिति की शुरुआत भी शामिल है जो इसे और अधिक जटिल बनाती है।

अभी देश में 49.5 फीसदी आरक्षण है. ओबीसी को 27%, अनुसूचित जातियों (एससी) को 15% और अनुसूचित जनजातियों (एसटी) को 7.5% आरक्षण की व्यवस्था है. इनके अलावा आर्थिक रूप से कमजोर सामान्य वर्ग के लोगों को 10% आरक्षण दिया जाता है. इस हिसाब से आरक्षण की सीमा 50 फीसदी के पार जा चुकी है.

धर्म आधारित

तमिलनाडु सरकार ने मुसलमानों और ईसाइयों प्रत्येक के लिए 3.5% सीटे आवंटित की हैं, जिससे ओबीसी आरक्षण 30% से 23% कर दिया गया, क्योंकि मुसलमानों या ईसाइयों से संबंधित अन्य पिछड़े वर्ग को इससे हटा दिया गया। सरकार की दलील है कि यह उप–कोटा धार्मिक समुदायों के पिछड़ेपन पर आधारित है न कि खुद धर्मों के आधार पर.

आंध्र प्रदेश प्रशासन ने मुसलमानों को 4% आरक्षण देने के लिए एक क़ानून बनाया। इसे अदालत में चुनौती दी गयी। केरल लोक सेवा आयोग ने मुसलमानों को 12% आरक्षण दे रखा है। धार्मिक अल्पसंख्यक का दर्जा प्राप्त शैक्षणिक संस्थानों के पास भी अपने विशेष धर्मों के लिए 50% आरक्षण है। केंद्र सरकार ने अनेक मुसलमान समुदायों को पिछड़े मुसलमानों में सूचीबद्ध कर रखा है। आरक्षण के समर्थन और विरोध में अनेक तर्क दिए गये हैं। एक पक्ष की ओर से दिए गये तर्कों को दूसरे पक्ष द्वारा खंडित किया जाता है, जबकि अन्य दोनों पक्षों से सहमत हुए हैं, ताकि दोनों पक्षों को समायोजित करने के लिए एक संभाव्य तीसरा समाधान प्रस्तावित हो।

आरक्षण समर्थकों द्वारा प्रस्तुत तर्क

आरक्षण भारत में एक राजनीतिक आवश्यकता है क्योंकि मतदान की विशाल जनसंख्या का प्रभावशाली वर्ग आरक्षण को स्वयं के लिए लाभप्रद के रूप में देखता है। सभी सरकारें आरक्षण को बनाए रखने या बढ़ाने का समर्थन करती हैं। आरक्षण कानूनी और बाध्यकारी हैं। गुर्जर आंदोलनों (राजस्थान, 2007–2008) ने दिखाया कि भारत में शांति स्थापना के लिए आरक्षण का बढ़ता जाना आवश्यक है।

हालांकि आरक्षण योजनाएं शिक्षा की गुणवत्ता को कम करती हैं लेकिन फिर भी अमेरिका, दक्षिण आफ्रीका, मलेशिया, ब्राजील आदि अनेक देशों में सकारात्मक कार्रवाई योजनाएं काम कर रही हैं। हार्वर्ड विश्वविद्याल में हुए शोध के अनुसार सकारात्मक कार्यवाही योजनाएं सुविधाहीन लोगों के लिए लाभप्रद साबित हुई ।

आरक्षण–विरोधियों के बीच प्रतिभावादिता और योग्यता की चिंता है। लेकिन प्रतिभावादिता समानता के बिना अर्थहीन है। पहले सभी लोगों को समान स्तर पर लाया जाना चाहिए, योग्यता की परवाह किए बिना, चाहे एक हिस्से को ऊपर उठाया जाय या अन्य हिस्से को पदावनत किया जाय. उसके बाद, हम योग्यता के बारे में बात कर सकते हैं।

आरक्षण–विरोधियों के तर्क

आरक्षण से प्रतिस्पर्धा घटती है। इससे आरक्षित वर्ग की उन्नति नहीं, अवनती होती है। जाति आधारित आरक्षण संविधान द्वारा परिकल्पित सामाजिक विचार के एक कारक के रूप में समाज में जाति की भावना को कमजोर करने के बजाय उसे बनाये रखता है। आरक्षण संकीर्ण राजनीतिक उद्देश्य की प्राप्ति का एक साधन है।

कोटा आवंटन भेदभाव का एक रूप है, जो कि समानता के अधिकार के विपरीत है।

आरक्षण ने चुनावों को जातियों को एक–दूसरे के खिलाफ बदला लेने के गर्त में डाल दिया है और इसने भारतीय समाज को विखंडित कर रखा है। चुनाव जीतने में अपने लिए लाभप्रद देखते हुए समूहों को आरक्षण देना और दंगे की धमकी देना भ्रष्टाचार है और यह राजनीतिक संकल्प की कमी है। यह आरक्षण के पक्ष में कोई तर्क नहीं है।

आरक्षण की नीति एक व्यापक सामाजिक या राजनीतिक परीक्षण का विषय कभी नहीं रही। अन्य समूहों को आरक्षण देने से पहले, पूरी नीति की ठीक से जांच करने की जरूरत है और लगभग 60 वर्षों में इसके लाभ का अनुमान लगाया जाना जरूरी है।

शहरी संस्थानों में आरक्षण नहीं, बल्कि भारत का 60% जो कि ग्रामीण है उसे स्कूलों, स्वास्थ्य सेवा और ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं की जरूरत है।

'अग्रणिये जातियों' के गरीब लोगों को पिछड़ी जाति के अमीर लोगों से अधिक कोई भी सामाजिक या आर्थिक सुविधा प्राप्त नहीं है। वास्तव में परंपरागत रूप से ब्राह्मण गरीब हुआ करते हैं।

आरक्षण के विचार का समर्थन करते समय अनेक लोग मंडल आयोग की रिपोर्ट का हवाला देते हैं। आयोग मंडल के अनुसार, भारतीयों की 52% आबादी ओबीसी श्रेणी की है, जबकि राष्ट्रीय सर्वेक्षण नमूना 1999–2000 के अनुसार, यह आंकड़ा सिर्फ 36% है (मुस्लिम ओबीसी को हटाकर 32%). सरकार की इस नीति के कारण पहले से ही प्रतिभा पलायन में वृद्धि हुई है और आगे यह और अधिक बढ़ सकती है। पूर्व स्नातक और स्नातक उच्च शिक्षा के लिए विश्वविद्यालयों का रुख करेंगे। अमेरिकी शोध पर आधारित आरक्षण–समर्थक तर्क प्रासंगिक नहीं हैं क्योंकि अमेरिकी सकारात्मक कार्रवाई में कोटा या आरक्षण शामिल नहीं है। सुनिश्चित कोटा या आरक्षण संयुक्त राज्य अमेरिका में अवैध हैं। वास्तव में, यहां तक कि कुछ उम्मीदवारों का पक्ष लेने वाली अंक प्रणाली को भी असंवैधानिक करार दिया गया था। इसके अलावा, सकारात्मक कार्यवाही कैलिफोर्निया, वाशिंगटन, मिशिगन, नेब्रास्का और कनेक्टिकट में अनिवार्य रूप से प्रतिबंधित है। 'सकारात्मक कार्रवाई शब्दों का उपयोग भारतीय व्यवस्था को छिपाने के लिए किया जाता है जबकि दोनों व्यवस्थाओं के बीच बड़ा फर्क है।

आधुनिक भारतीय शहरों में व्यापारों के सबसे अधिक अवसर उन लोगों के पास हैं जो ऊंची जातियों के नहीं हैं। किसी शहर में उच्च जाति का होने का कोई फायदा नहीं है।

आरक्षण वैसे खत्म नहीं होना चाहिए सिर्फ आर्थिक स्थिति देखकर आरक्षण देना चाहिए जाति के आधार पर नहीं ।

संविधान में आरक्षण पहले 10 वर्ष के लिए रखा गया था आवश्यकता को देखते हुए इसका समय और बढ़ा दिया गया। वर्ष 2009 में 95वें संविधान संशोधन द्वारा इस आरक्षण को वर्ष 2020 तक बढ़ाया गया था। संविधान द्वारा SC तथा ST वर्ग को संसद में मिलने वाला आरक्षण जनवरी, 2020 में समाप्त हो रहा है। इस वर्तमान स्थिति में सरकार ने इस आरक्षण को जनवरी 2030 तक बढ़ाने का निर्णय लिया है।

वर्तमान समय में आरक्षण समाज की आवश्यकता ना होकर केवल राजनीतिक मुद्दों की आवश्यकता हो गई जिसका वोट बैंक चाहिए उनके लिए आरक्षण बढ़ा दो और यहां देश की आवश्यकता को दर्दनाक कर दिया गया तीन पीढ़ी आरक्षण के साथ चलते हुए निकल गई यहां आरक्षण कम होना चाहिए था जबकि बढ़ता जा रहा है इसका भविष्य क्या होगा इसके लिए चिंतन की आवश्यकता है।

'नए युग की सामाजिक विचारधारा'

श्रीमती रिचा राजौरिया
सहा. प्राध्यापक गणित

अच्छी थी, पगडंडी अपनी।'
सड़कों पर तो, जाम बहुत है।।

फुर्र हो गई फुर्सत, अब तो ।
सबके पास, काम बहुत है।।

नहीं जरूरत, बूढ़ों की अब।
हर बच्चा, बुद्धिमान बहुत है।।

उजड़ गए, सब बाग बगीचे।
दो गमलों में, शान बहुत है।।

मट्ठा, दही, नहीं खाते हैं।
कहते हैं, जुकाम बहुत है।।

पीते हैं, जब चाय, तब कहीं।
कहते हैं, आराम बहुत है।।

बंद हो गई, चिट्ठी, पत्री।
व्हाट्सएप पर, पैगाम बहुत हैं।।

आदी हैं, ए.सी. के इतने।
कहते बाहर, घाम बहुत है।।

झुके–झुके, स्कूली बच्चे।
बस्तों में, सामान बहुत है।।

नही बचे, कोई सम्बन्धी ।
अकड़, ऐंठ, अहसान बहुत है।।

एक सफर खुद के लिए

हेमलता पाण्डेय
सहा. प्राध्यापक–शिक्षा शास्त्र

सफर (यात्रा) का महत्व

हर यात्रा एक किताब की तरह होती है जिसमें हर पन्ना नए अनुभवों और सीखों से भरा होता है। यात्रा केवल बाहरी दुनिया को देखने का साधन नहीं है बल्कि अपने भीतर की गहराई को महसूस करने का एक जरिया भी है। यात्रा हमें बाहरी दुनिया से रूबरू करती है, इसी दौरान हम अपने मन की गहराईयों में भी उतरते हैं और कई सवालों के जवाब पा सकते हैं।

खुद को समझने का सफर

कभी–कभी एक नई जगह पर खो जाना हमें अपने आप को खोजने में मदद करना है। नई जगहों पर जाने से कई बार हम अपने ही अंदर की छिपी हुई क्षमताओं और भावनाओं का पता लगाते हैं यात्रा हमें सीमाओं के पार जाकर खुद को बेहतर ढंग से समझने का मौका देती है। अलग–अलग जगहों की यात्रा करने से हम अपनी मानसिक भावनात्मक और सांस्कृतिक सीमाओं को पार करते हैं, सफर के दौरान मिले अनजान लोग भी हमें जिंदगी की सीख देने में सहायक होते हैं।

जीवन के शोर से एकांत

जब हम यात्रा में खो जाते हैं तब ही हम खुद को पाते हैं हर नई यात्रा हमें सिखाती है कि सीमाएं केवल हमारे मन में होती हैं। एक सच्चा यात्री किसी मंजिल को नहीं ढूंढ़ता बल्कि हर कदम पर खुद को खोजता है, यात्रा हमें सिखाती है कि हर चीज का जवाब हमारे पास नहीं होता हम यात्रा करते समय हम केवल नए स्थान नहीं देखते बल्कि नए दृष्टिकोण भी अपनाते हैं। कई बार हम अकेले होते हैं, और तब ये अकेलापन हमारे विचारों को स्पष्ट करने में मदद करता है। एकांत हमें अपने भीतर झांकने और अपनी भावनाओं को समझने का अवसर देता है।

यात्रा से मिले अनुभव और सबक

हर यात्रा हमें कुछ न कुछ सिखाती है हम सीखते हैं कि जीवन में सभी चीजें हमारी योजनाओं के अनुसार नहीं चलती लेकिन हमें हर परिस्थिति में ढलना आना चाहिए। यात्रा से मिले अनुभव हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं और हमें नए दृष्टिकोण से सोचने का अवसर देते हैं। यात्रा हमें हमारे जीवन के शोर से बाहर निकालकर भीतर की शांति से मिलवाती है। खुद को समझने का यह सफर अनंत है, ये हमें बताती है कि सहजता और धैर्य का ये सबक हमें अलग–अलग संस्कृतियों का आदर करना और अन्य दृष्टिकोण को समझना सिखाती है।

निष्कर्ष

यात्रा केवल नए स्थानों को देखने का साधन नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो हमें अपने भीतर की गहराईयों तक पहुँचाती है। यात्रा हमें धैर्य, सहनशीलता, आत्म–विश्वास और विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने का अद्भुत अवसर प्रदान करती है। हर यात्रा अपने साथ नए अनुभव, सीख और यादें लेकर आती है, जो हमारे जीवन को गहराई से प्रभावित करती है। यह हमें जीवन में कम में खुश रहना, अनिश्चितताओं का सामना करना, और वर्तमान में जीने का महत्व समझाती है।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

भक्ति का उदय और हिन्दी साहित्य

श्रीमति पारूल सोनी (दरे)
सहा. प्राध्यापक, शिक्षा विभाग

भक्ति का उदय

भक्ति का उदय भारतीय समाज में मध्यकाल में हुआ, जब धर्म, जातिवाद, और कर्मकांडों की अति ने समाज में एक तरह की धार्मिक उदासीनता और असमानता को जन्म दिया। यह आंदोलन विशेष रूप से हिन्दू धर्म में उभरा, लेकिन इसका प्रभाव अन्य धर्मों पर भी पड़ा। भक्ति आंदोलन ने न केवल समाज को एकजुट किया बल्कि साहित्य के माध्यम से गहरे आध्यात्मिक और सामाजिक संदेश भी दिए। संतों और कवियों के दोहे बहुत प्रभावी होते थे, जो सरल भाषा में गहरे अर्थ और विचार व्यक्त करते थे। ये दोहे आज भी हमारे समाज में प्रेरणा का स्रोत हैं। भारत में भक्ति आंदोलन एक सामाजिक और धार्मिक क्रांति के रूप में उभरा, जिसका मुख्य उद्देश्य ईश्वर के प्रति समर्पण और भक्ति को प्रोत्साहित करना था, जो कर्मकांड, जातिवाद, और धार्मिक पाखंड के विरूद्ध था। धार्मिक संस्थानों में व्यापक भ्रष्टाचार और कर्मकांडों का बढ़ता प्रभाव लोगों के विश्वास को कमजोर कर रहा था, और इसके जवाब में भक्ति आंदोलन ने सरल और व्यक्तिगत ईश्वर भक्ति का मार्ग दिखाया। भक्ति आंदोलन का हिंदी साहित्य से गहरा संबंध रहा है। जिसने हिंदी साहित्य की संरचना और उसकी दिशा को भी बदला।

भक्ति साहित्य का उद्देश्य

भक्ति साहित्य का मुख्य उद्देश्य लोगों को ईश्वर के प्रति प्रेम, विश्वास, और भक्ति की ओर प्रेरित करना था। संतों और कवियों ने अपनी रचनाओं में धार्मिकता से अधिक मानवता, समानता, और प्रेम का संदेश दिया। भक्ति साहित्य में भगवान के प्रति आत्मीयता और सरलता का आदान–प्रदान किया गया।

संतों की काव्य रचनाएँ

भक्ति आंदोलन के प्रमुख संतों ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया और भक्ति का एक नया स्वरूप दिया। इन संतों ने अपने गीतों, दोहों, भजनों, और कविताओं के माध्यम से भक्ति का प्रचार किया। उनके साहित्य ने समाज में धार्मिक चेतना और जागरूकता को जन्म दिया।

*** कबीरदास**

कबीर ने भक्ति और सामाजिक समरसता का संदेश दिया। उनके दोहे न केवल ईश्वर के प्रति भक्ति की बात करते हैं, बल्कि वे समाज के आंतरिक विघटन और धर्म के पाखंड का विरोध करते हैं।

'बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो मन को खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।'

*** सूरदास**

सूरदास ने भगवान श्री कृष्ण के जीवन की लीला को अपने काव्य में चित्रित किया। उनकी रचनाएँ भगवान कृष्ण के बाल रूप और उनके प्रति भक्तों के प्रेम को दर्शाती हैं।

'राधे–राधे कहि के हर्षित होइ,
गोपियाँ सब पाई छवि कोय।'

*** तुलसीदास**

तुलसीदास ने अपनी महान काव्य रचना रामचरितमानस के माध्यम से भगवान राम के जीवन को प्रस्तुत किया। तुलसीदास ने भक्ति को सरल और लोकप्रिय रूप में प्रस्तुत किया, जिसमे हर वर्ग के लोग उसे समझ सकें।

'राम रसायन तुम्हरे पासा,
सदा रहो रघुपति के दासा।'

मीराबाई

मीराबाई ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भगवान श्री कृष्ण के प्रति अपनी असीम भक्ति और प्रेम को व्यक्त किया। उनके भजन आज भी लोगों के दिलों में बसे हुये है।

'प्रीति पुरान न कोई, सांचों प्रेम नहीं।
जो उपजे सांचो प्रेम, उसारै सूझत होई।'

भक्ति साहित्य में समाज की भूमिका

भक्ति साहित्य ने केवल ईश्वर के प्रति श्रद्धा को नहीं बढ़ाया, बल्कि समाज में व्याप्त असमानता और जातिवाद को भी चुनौती दी। संतों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से यह संदेश दिया कि सभी लोग, चाहे वे किसी भी जाति, वर्ग, या धर्म से हों, भगवान के सामने समान हैं। यह साहित्य सामाजिक सुधार का भी प्रतीक बन गया।

हिंदी भाषा में भक्ति साहित्य का योगदान

भक्ति साहित्य के प्रभाव से हिंदी भाषा और साहित्य में भी एक नया मोड आया। संतों और भक्त कवियों ने नीक भाषा का प्रयोग किया, जिससे आम जन तक इन रचनाओं का प्रभाव पहुंच सका। इससे पहले साहित्य मुख्यतः संस्कृत भाषा में लिखा जाता था, लेकिन भक्ति साहित्य ने हिंदी को एक साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित किया।

भावनात्मक और आध्यात्मिक प्रभाव

भक्ति साहित्य ने लोगों के ह्रदय में भक्ति और प्रेम की भावना को जगाया। इसके द्वारा एक तरह से मानसिक शांति और आंतरिक संतोष की प्राप्ति का मार्ग खोला गया। लोग ईश्वर से प्रेम और समर्पण की भावना में लीन हो गए, और यह साहित्य उनके जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन गया।

भक्ति आंदोलन ने हिंदी साहित्य को एक नयी दिशा दी और समाज में भक्ति, प्रेम, और समानता का संदेश फैलाया। संतों और कवियों की रचनाओं ने न केवल धार्मिकता को नया रूप दिया, बल्कि सामाजिक समरसता, एकता और प्रेम के सिद्धांत को भी प्रोत्साहित किया। हिन्दी साहित्य ने न केवल आध्यात्मिक उन्नति की दिशा दिखाई, बल्कि समाज में व्याप्त असमानताओं को खत्म करने का भी कार्य किया। हिंदी साहित्य में भक्ति आंदोलन का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसने हिन्दी साहित्य को आम लोगों से जोड़ने और समाज में सुधार लाने का कार्य किया और आस्था का मार्ग प्रशस्त किया।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

बेटियाँ....

निकिता कुर्मी
बी.ए.बी.एड.

कोई चेहरा कोमल कली का,
रूप कोई सलोनी परी का।
उनसे सीखा सबक जिन्दगी का,
बेटियाँ तो है लम्हा खुशी का।
ये अगर हैं तो रोशन जहाँ हैं,
ये जमीने हैं और आसमा हैं।
है वजूद इन से आदमी का,
बेटियाँ तो हैं लम्हा खुशी का।
हमने रब को तो देखा नहीं पर,
नूर ये हैं खुदा का जमीं पर।
एक अहसास हैं रोशनी का,
बेटियाँ तो हैं लम्हा खुशी का।
इनसे इनकी अदाएँ न छीनो,
हक इन्हें भी तो है जिंदगी का
बेटियाँ तो है लम्हा खुशी का।

'भारत में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान शिक्षाः विकास, समस्याएं एवं संभावनाएं'

नित्या श्रीवास्तव
पुस्तकालय प्रभारी

भारत में ''पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान शिक्षा'' विकास का एक महत्वपूर्ण विषय है। इसका उद्देश्य छात्रों को पुस्तकालयों और सूचना केंद्रों में काम करने के लिए तैयार करना है, जहां वे सूचना को संगठित, प्रबंधित, और प्रदान करने में सहायता कर सकते हैं।

विकास

भारत में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान शिक्षा का विकास एक लंबी और जटिल प्रक्रिया से होकर विकसित हुआ है। प्रारंभिक चरण में, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान शिक्षा का प्रारंभिक चरण 19 वीं शताब्दी में शुरू हुआ। उस समय, पुस्तकालयों का मुख्य उद्देश्य शिक्षा और अनुसंधान के लिए सूचना प्रदान करना था।

20वीं शताब्दी में, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान शिक्षा का विस्तार हुआ और कई विश्वविद्यालयों में इसके विभाग स्थापित किए गए। इन विभागों ने छात्रों को पुस्तकालयों और सूचना केंद्रों में काम करने के लिए तैयार किया।

हाल के वर्षों में, इस विषय का आधुनिकीकरण हुआ है और कई संस्थानों में डिजिटल पुस्तकालय और सूचना प्रणाली स्थापित की गई हैं। यह बदलाव पुस्तकालयों और सूचना केंद्रों में सूचना को संगठित, प्रबंधित, और प्रदान करने में सहायता कर रहा है।

संभावनाएं

भारत में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान शिक्षा के विकास की कई संभावनाएं हैं:

डिजिटल पुस्तकालयों का विकासः डिजिटल पुस्तकालयों का विकास एक महत्वपूर्ण संभावना है, जिससे विद्यार्थियों को ऑनलाइन संसाधनों तक पहुंच मिलेगी एवं सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग पुस्तकालयों और सूचना केंद्रों में संसाधनों को संगठित और प्रबंधित करने में सहायता करेगा।

समस्याएं

भारत में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान शिक्षा के विकास में कई समस्याएं हैं:

अधिकारिक मान्यताः इस विषय को अभी भी अधिकारिक मान्यता नहीं मिली है। यह समस्या पुस्तकालयों और सूचना केंद्रों में काम करने वाले पेशेवरों के लिए बड़ी चुनौती है।

संसाधनों की कमीः कई पुस्तकालयों और सूचना केंद्रों में संसाधनों की कमी है, जिससे छात्रों को पर्याप्त सुविधाएं नहीं मिल पाती हैं। यह समस्या पुस्तकालयों और सूचना केंद्रों के प्रबंधन और संचालन को प्रभावित करती है।

प्रशिक्षित पुस्तकालयाध्यक्षों की कमीः संस्थाओं में प्रशिक्षित पुस्तकालयाध्यक्षों की कमी है, जिससे पुस्तकालयों का प्रबंधन और संचालन प्रभावित होता है। यह समस्या पुस्तकालयों और सूचना केंद्रों में सूचना को संगठित, प्रबंधित, और प्रदान करने में मदद नहीं कर पाती है। पुस्तकालयाध्यक्षों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन पुस्तकालयों के प्रबंधन और संचालन में सुधार करने में सहायता करेगा।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोगः अंतर्राष्ट्रीय सहयोग पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान शिक्षा के क्षेत्र में विकास एवं रोजगार के नए अवसर प्रदान करेगा।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

दैनिक जीवन में भौतिक विज्ञान का महत्व और दुष्प्रभाव

रिंकी विश्वकर्मा
सहा. प्राध्यापक–भौतिक विज्ञान

भौतिक विज्ञान हमारे दैनिक जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह हमें अपने आसपास की दुनिया को समझने और उसके साथ जुड़ने में मदद करता है। लेकिन इसके साथ ही, भौतिक विज्ञान के दुष्प्रभाव भी हो सकते हैं।

महत्व:

1. **ऊर्जा उत्पादन–** भौतिक विज्ञान ने हमें ऊर्जा उत्पादन के नए तरीके दिए हैं, जैसे कि सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और परमाणु ऊर्जा इत्यादि।
2. **चिकित्सा–** भौतिक विज्ञान ने चिकित्सा क्षेत्र में बहुत योगदान दिया है, जैसे कि एक्स-रे, एमआरआई और लेजर सर्जरी इत्यादि।
3. **परिवहन–** भौतिक विज्ञान ने परिवहन के नए तरीके दिए हैं, जैसे कि विमान, रेल और सड़कें।
4. **संचार–** भौतिक विज्ञान ने संचार के नए तरीके दिए हैं, जैसे कि टेलीफोन, रेडियो और इंटरनेट।

दुष्प्रभाव:

1. **पर्यावरण प्रदूषण:** भौतिक विज्ञान के अनुप्रयोगों से पर्यावरण प्रदूषण हो सकता है, जैसे कि वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण।
2. **न्यूक्लियर खतरे:** परमाणु ऊर्जा के अनुप्रयोगों से न्यूक्लियर खतरे हो सकते हैं, जैसे कि परमाणु बम और परमाणु दुर्घटनाएं।
3. **नैतिक मुद्दे:** भौतिक विज्ञान के अनुप्रयोगों से नैतिक मुद्दे उठ सकते हैं, जैसे कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता।
4. **आर्थिक असमानता:** भौतिक विज्ञान के अनुप्रयोगों से आर्थिक असमानता बढ़ सकती है, जैसे कि तकनीकि प्रगति से रोजगार की कमी।

निष्कर्ष:

भौतिक विज्ञान हमारे दैनिक जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, लेकिन इसके साथ ही, इसके दुष्प्रभाव भी हो सकते हैं। इसलिए, हमें भौतिक विज्ञान के अनुप्रयोगों का सावधानी से उपयोग करना चाहिए और इसके दुष्प्रभावों को कम करने के लिए काम करना चाहिए।

...कणों का नृत्य...

छोटे-छोटे कण अदृश्य से
ब्रह्मांड में नित करते नृत्य से
क्वार्क, लेप्टन, बोरान, न्यूट्रान
हर एक में छिपी है एक अनूठी शक्ति
घूमते टकराते रचते ये आकार
पत्थर की हर ईंट हर आधार
ऊर्जा का सागर, हर ओर विस्तार

भारतीय परंपरा में राजनीति और नैतिकता का संबंध

श्रीमती अर्पणा पाण्डेय
सहा. प्राध्यापक राजनीति विज्ञान

भारतीय परंपरा में राजनीति और नैतिकता का गहरा संबंध रहा है। यहाँ राजनीति का उद्देश्य केवल सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि समाज कल्याण और धर्म (नैतिकता) की स्थापना का साधन मानी गई है। भारतीय ज्ञान परंपरा में नीति और राजनीति को एक-दूसरे से पृथक नहीं किया गया, बल्कि राजनीति को नैतिकता के अधीन रखा गया है।

प्राचीन भारतीय ग्रंथों में राजनीति और नैतिकता

प्राचीन भारतीय ग्रंथों में राजनीति को धर्म और न्याय के साथ जोड़ा गया है। वेदों और उपनिषदों में राज्य संचालन के लिए नैतिक मूल्यों की अनिवार्यता बताई गई है। महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्यों में आदर्श राजनीति के उदाहरण मिलते हैं। रामायण में 'रामराज्य' की अवधारणा राजनीति में नैतिकता का सर्वोच्चता को दर्शाती है, जहाँ राजा का उद्देश्य केवल शासन करना नहीं, बल्कि प्रजा के हितों की रक्षा करना होता है।

महाभारत में भीष्म और विदुर नीति में बताया गया है कि एक राजा को नीतिपरायण, न्यायप्रिय और धर्म का पालन करने वाला होना चाहिए। वहीं, कौटिल्य के अर्थशास्त्र में व्यवहारिक राजनीति पर बल दिया गया है,लेकिन उन्होंने नैतिकता को शासन का अनिवार्य अंग माना है।

बौद्ध और जैन परंपराओ में नैतिक राजनीति

बौद्ध और जैन दर्शन में भी राजनीति और नैतिकता का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। गौतम बुद्ध ने धर्म के आधार पर समाज में समानता और अहिंसा का प्रचार किया, जिसे सम्राट अशोक ने अपने शासन में अपनाया। उनके शिलालेखों में नैतिक शासन की अवधारणा स्पष्ट रूप से मिलती है।

इसी प्रकार, जैन परंपरा में भी अहिंसा, अपरिग्रह और सत्य पर आधारित शासन व्यवस्था को सर्वोत्तम बताया गया है। जैन ग्रंथों में 'श्रेणि' व्यवस्था के माध्यम से समाज की नैतिक संरचना को सुदृढ़ बनाये रखने की बात कही गई है।

मध्यकाल में राजनीति और नैतिकता का संबंध थोड़ा परिवर्तित हुआ, लेकिन संतों और विचारकों ने इसे बनाए रखने की कोशिश की। तुलसीदास, कबीर और अन्य भक्ति संतों ने राजा को न्यायप्रिय और प्रजा के हित में कार्य करने वाला बताया शिवाजी और गुरू गोबिंद सिंह ने स्वराज्य की संकल्पना को आगे बढ़ाया, जो नैतिकता और धर्म पर आधारित शासन व्यवस्था थी।

डॉ. भीमराव अंबेडकर ने भी भारतीय संविधान के माध्यम से न्याय, समानता और स्वतंत्रता के सिद्धांतों को स्थापित किया, जो नैतिक राजनीति की ही अवधारणा है। भारतीय संविधान में नागरिकों के मूल अधिकारों और कर्त्तव्यों को सम्मिलित कर नैतिक राजनीति की नींव रखी गई।

भारतीय परंपरा में राजनीति और नैतिकता का अटूट संबंध रहा है। प्राचीन ग्रंथों से लेकर आधुनिक भारतीय राजनीति तक, नैतिकता को राजनीति का अभिन्न अंग माना गया है। राजनीति केवल सत्ता संचालन का माध्यम नहीं, बल्कि लोककल्याण और समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना का साधन भी है। यदि राजनीति से नैतिकता हट जाए, तो यह समाज में अराजकता और अन्याय को बढ़ावा दे सकती है। इसलिए, भारतीय परंपरा में राजनीति और नैतिकता का संतुलन बनाए रखना आवश्यक माना गया है।

भोजन संरक्षण : कला और विज्ञान

डॉ. संचिता जैन
सहा. प्राध्यापक-रसायनशास्त्र

भोजन संरक्षण (Food Preservation) एक प्राचीन कला है, जे समय के साथ विज्ञान और तकनीक के साथ विकसित हुई है। यह तकनीक न केवल भोजन को लंबे समय तक सुरक्षित रखती है बल्कि उसके पोषक तत्वों और स्वाद को भी बनाए रखती है। आज के समय में, प्राकृतिक और कृत्रिम दोनों प्रकार के प्रिजर्वेटिव (Preservatives) का उपयोग किया जाता है।

भोजन संरक्षण का इतिहास-

प्राचीन काल से ही मनुष्य ने भोजन को संरक्षित करने के तरीकों का विकास किया। मिस्रवासियों ने मांस और मछली को नमक से संरक्षित किया, जबकि चीन में सब्जियों और सोयाबीन का किण्वन (Fermentation) किया जाता था। भारतीय संस्कृति में भी अचार, मसालेदार भोजन और धूप में सुखाने की परंपरा रही है।

2. प्राकृतिक प्रिजर्वेटिव (Natural Preservatives)

ये जैविक स्रोतों से प्राप्त होते हैं और अधिक सुरक्षित माने जाते हैं:

नमक (Salt) : मांस, मछली और सब्जियों को संरक्षित करने के लिए उपयोग किया जाता है।

चीनी (Sugar) : जैम, जेली और शरबत में उपयोग किया जाता है।

सिरका (Vinegar): अचार और खट्टे खाद्य पदार्थों में जीवाणु वृद्धि को रोकता है।

शहद (Honey) : प्राचीन काल से प्राकृतिक एंटीबैक्टीरियल के रूप में जाना जाता है।

मसाले और जड़ी-बूटियाँ (Spices and Herbs) : जैसे लहसुन, लौंग और दालचीनी जो बैक्टीरिया और फफूंद के विकास को रोकते हैं।

आधुनिक खाद्य उद्योग में कृत्रिम प्रिजर्वेटिव का उपयोग व्यापक रूप से किया जाता है:

बेंजोएट (Benzoates) **जैसे सोडियम बेंजोएट :** कोल्ड ड्रिंक्स और फलों के रस में प्रयोग किया जाता है।

नाइट्राइट्स और नाइट्रेट्स (Nitrites & Nitrates) : प्रसंस्कृत मांस (Processed Meat) में उपयोग किया जाता है।

सल्फाइट्स (Sulfites) : सूखे फलों और वाइन में रंग को बनाए रखने के लिए उपयोग होता है।

सॉर्बेट्स (Sorbates) : जैसे पोटेशियम सॉर्बेट: डेयरी उत्पाद, बेकरी आइटम और पेय पदार्थों में ।

भोजन संरक्षण का विज्ञान-भोजन को खराब करने वाले जीवाणु, और यीस्ट के विकास को रोकने के लिए प्रिजर्वेटिव कार्य करते हैं। कुछ प्रिजर्वेटिव पानी की सक्रियता को कम करते हैं, जबकि कुछ भोजन को अम्लीय या एंटीमाइक्रोबियल वातावरण में बदल देते हैं। रेफ्रिजरेशन जीवाणु वृद्धि को धीमा करता है, जबकि वैक्यूम सीलिंग ऑक्सीजन को हटाकर ऑक्सीडेशन को रोकती है।

भोजन संरक्षण की कला

भले ही भोजन संरक्षण एक वैज्ञानिक प्रक्रिया हो, लेकिन यह एक कला भी है। पारंपरिक तरीके जैसे किण्वन (Fermentation), अचार बनाना (Pickling), और धूप में सुखाना (Drying) सदियों से चली आ रही विधियाँ हैं, जो विभिन्न संस्कृतियों की पाक विरासत (Culinary Heritage) को दर्शाती है।

परिरक्षित खाद्य पदार्थों का स्वाद, बनावट और रंग अलग-अलग हो सकता है।

गणितीय विज्ञान में मशीन लर्निंग का उपयोग

आलोक चौबे
सहा.प्राध्यापक–गणित

मशीन लर्निंग (ML) का उपयोग आज गणितीय विज्ञान में तेजी से बढ़ रहा है। यह जटिल समस्याओं को हल करने, पैटर्न पहचानने, और गणनाओं को तेज करने में मदद करता है।

1. प्रतीकात्मक गणित और प्रमेय सिद्ध करना (Theorem Proving)

- स्वचालित प्रमेय सिद्ध करना (Automated Theorem Proving - ATP): ML प्रमेय सिद्ध करने की रणनीति तय करने में मदद करता है।
- उदाहरण : DeeMind का AlhaTensor गणतीय प्रमेयों को सिद्ध करने में उपयोगी रहा है।

2. संख्यात्मक विश्लेषण (Numerical Analysis)

- मशीन लर्निंग का उपयोग जटिल अवकल समीकरणों (Differential Equations) और अनुकूलन समस्याओं (Optimization Problems) के समाधान में किया जाता है।
- उदाहरण : Physics-Informed Neural Networks (PINNs) का उपयोग भौतिकी आधारित समीकरणों को हल करने के लिए होता है।

3. गणितीय डेटा में पैटर्न की पहचान

- संख्याओं के पैटर्न, अनुक्रमों का वर्गीकरण और बीजगणितीय संरचनाओं में समानताएं पहचानना।
- उदाहरण : मशीन लर्निंग ने Knot Theory Amja Group Theory में नई खोजों में मदद की है।

4. गणितीय मॉडलिंग

- अनुप्रयुक्त गणित (Applied Mathematics) में मशीन लर्निंग का उपयोग:
  - जलवायु पूर्वानुमान (Climate Prediction)
  - महामारी मॉडलिंग (Epidemiology)
  - वित्तीय गणित (जैसे ऑप्शन प्राइसिंग, जोखिम मॉडलिंग)

5. अनुकूलन (Optimization)

- पारंपरिक तकनीकों को बेहतर बनाने या प्रतिस्थापित करने के लिए ML का उपयोग किया जाता है।
- उदाहरण : Gradient Descent को ML द्वारा और अधिक कुशल बनाया गया है।

6. टोपी और ज्यामिति (Topology and Geometry)

- Topological Data Analysis (TDA) के ज़रिए डेटा की आकृति को समझने में चड मदद करता है।
- ML का उपयोग वर्गीकरण और क्लस्टरिंग कार्यों में किया जाता है।

7. बीजगणित और संयोजन गणित

(Algebra and Combinatorics)

- बीजगणितीय संरचनाओं के गुणों को जानने के लिए Supervised ML का उपयोग।
- संयोजनात्मक डेटा में पैटर्न और अपवाद खोजने में मदद करता है।

8. नई गणितीय खोज और परिकल्पना निर्माण

- बडे गणितीय डेटासेट (जैसे OEIS) की मदद से ML नई परिकल्पनाओं (Conjectures) को जन्म देता है।
- उदाहरण : नंबर थ्योरी में अख की मदद से नई परिकल्पनाएं खोजी गई हैं।

सारांश तालिका

क्षेत्र	मशीन लणनिंग का योगदान
प्रमेय सिद्ध करना	प्रमाण रणनीति में मार्गदर्शन
संख्यात्मक विश्लेषण	जटिल समीकरणों के हल
मॉडलिंग	पूर्वानुमान मॉडल बेहतर बनाना
अनुकूलन	कुशल समाधान तकनीक
पैटर्न पहचान	प्रतीकात्मक अनुक्रम विश्लेषण
टोपी	आकृति और संरचना की समझ
बीजगणित	संरचनात्मक गुणों की खोज

डिजीटली युग में वृद्धों की सामाजिक भागीदारी : सोशल मीडिया की भूमिका

डॉ. आकृति कनोजिया
सहा. प्राध्यापक–समाजशास्त्र

वर्तमान के समय में तकनीकी और डिजीटल क्रांति का युग है। एक ओर नई–नई तकनीकों ने हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है जो वही दूसरी ओर सामाजिक भागीदारी और संवाद के तरीके भी तीव्र गति से बदल रहे है। सोशल मीडिया जैसे फेसबुक, वॉट्सएप एवं यू–ट्यूब सामाजिक लोगों को जोड़े रखने में अपनी अहम भूमिका निभा रहे है। विशेष रूप से वृद्धों का समूह जो अक्सर समाज के कई विभिन्न पहलुओं से वंचित रह जाते हैं, सोशल मीडिया इनके लिये एक तरह से जीवनदायक माध्यम बन गया है।

❊ डिजीटल युग एवं वृद्ध वर्ग का संबंध

प्राचीन समय से वृद्ध प्राय: निरंतर तकनीकों के प्रयोगों से दूर रहे है। उनका संवाद प्राय: पारिवारिक एवं सामाजिक माध्यमों तक सीमित रहता था। परन्तु इन्टरनेट के एवं स्मार्ट फोन के निरंतर बढ़ते प्रयोग ने वृद्धों को डिजीटल माध्यम से जुड़ने का मौका दिया है। भारत में कोविड 19 ने वृद्धों को डिजीटल जागरूकता को बढ़ाकर इन्हें प्रोत्साहित किया है। क्योंकि लॉकडाऊन के कारण वे पारिवारिक और सामाजिक संवाद के लिए डिजीटल माध्यमों पर निर्भर हो गये थे। कोविड 19 के पश्चात् लगभग 65% वृद्धों ने प्रथम बार वीडियोकॉल या व्हाट्सएप का उपयोग प्रारंभ किया। (स्रोत: सामाजिक न्याय मंत्रालय, 2024)

अन्य आंकड़ों को देखा जाये तो भारत में 60 वर्ष और इससे अधिक आयु वर्ग के लोग सोशल मीडिया का नियमित उपयोग करते हैं। वे अपने परिवार के सदस्यों मुख्यत: बच्चों से जुड़े रहने के लिये व्हाट्सएप का उपयोग करते है। इससे यह ज्ञात होता है कि वरिष्ठ नागरिकों की सोशल मीडिया में भागीदारी बढ़ रही है।

❊ सोशल मीडिया के प्रयोग से वृद्धों को होने वाले लाभ

वृद्धों को अक्सर अकेलापन महसूस होता है, विशेष रूप तब जब बच्चे परिवार या घर से दूर होते हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से वृद्ध किसी भी समय अपने परिवारजन से संवाद कर सकते हैं। सोशल मीडिया के उपयोग करने वाले वृद्धों में अकेलेपन और अवसाद की दर कम पाई गाई। वीडियो कॉल के माध्यम से भावनात्मक संबंध बेहतर हुए हैं। (स्रोत: इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन सायकोलॉजी)

सोशल मीडिया प्लेटफार्म के माध्यम से वृद्धों को नई चीजें सीखने का मौका मिल रहा है यू–ट्यूब से वे स्वास्थ्य, धार्मिक शिक्षा, योग एवं नई तकनीकों के बारे में सीख सकते हैं। इससे उनके मानसिक विकास के साथ–साथ वे समाज के सक्रिय सदस्य बन रहे हैं।

सोशल मीडिया वृद्धों को अपने अनुभव एवं ज्ञान को सांझा करने का भी अवसर प्रदान करता है। कुछ वृद्ध यू–ट्यूब, इस्टाग्राम के माध्यम से अपनी कहानियाँ, जीवन दर्शन दिखा रहे हैं। इससे उनका आत्म विश्वास एवं सम्मान बढ़ रहा है।

कई वृद्ध सोशल मीडिया के माध्यम से ऑनलाईन योग, स्वास्थ क्लॉस एवं मनोरंजक गतिविधियाँ भी सीख रहे हैं जिससे उनके मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ पर लाभ हो रहा है।

❊ चुनौतियां

वृद्धों में तकनीक सीखने की इच्छा होने के बाद भी उन्हें प्रशिक्षण और मार्गदर्शन की कमीं हो सकती है वे कई बार नये एप के फीचर्स को समझने में असमर्थ होते हैं जिससे उन्हें निराशा होती है।

सोशल मीडिया के अत्यधिक प्रयोग से वृद्धों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ सकता है अत: स्क्रीन टाइम को सीमित किया जा सकता है।

वृद्ध लोग ऑनलाईन धोखाधड़ी के शिकार अधिक हो सकते हैं इसलिए साइबर सुरक्षा के लिये यह आवश्यक है कि वे एप्स के नये फीचर्स को सावधानी पूर्वक समझकर ही उपयोग करें।

❊निष्कर्ष

आज का यह डिजीटल युग में सोशल मीडिया वृद्धों के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रही है। यह न केवल पारिवारिक सदस्यों से जुड़ने में मदद कर रहा है वरन इसके प्रयोग से वृद्धों के सामाजिक संबंध भी बेहतर हो रहे हैं। जिससे वृद्धों के मानसिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य में स्थिरता आ रही है। इस माध्यम से विभिन्न नयी जानकारियाँ प्राप्त होने के साथ–साथ वे इस प्लेटफार्म से जागरूक भी हो रहे हैं। हालांकि इसके उपयोग से चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है परन्तु सुरक्षा उपायों का प्रयोग करके आसानी से सोशल मीडिया का लाभ उठाया जा सकता है। इस प्रकार सोशल मीडिया भी वृद्धों के जीवन का एक अंग बन रहा है जिससे वे डिजीटल युग में सक्रिय एवं स्वाबलंबी बन हरे हैं।

मुनि क्षमा सागर की कवितायें....

अतृप्त

कामनाओं-का-कलश
ऊपर से
सोने-सा
दमकता है
सुरासव
उसमें कहीं नीचे
पैंदी में होता है
कोई इससे
कितना भी भरे
वह सदा
अतृप्त रहता है।

कल

वह रोज की तरह
आज भी
अपने कमरे का
द्वार खोलेगा
सीड़ियाँ चढेगा
थका-हारा
वह बेचारा
कल के इंतजार में
आज फिर सोएगा
कल
कोई और
द्वार खोलेगा।

निशाना

जब भी मैंने
किसी और को
निशाना बनाया
और अपने
जीतने का
जश्न मनाया
मैंने पाया, मैं ही हारा
अन्जाने ही
मेरा तीर
मुझसे टकराया
शिकार मैं ही बना
और कई रोज तक
कराहती रही
मेरी घायल चेतना।

अब

उनके बीच का
अकेला-
भला आदमी
गाँव से चला गया
जहाँ गया
वहीं रम गया
वे अब
महसूस करते हैं
कि पहले रोशनी थी
अब अंधेरा हो गया।

वह अपना

बाँसुरी के स्वर
जाने किसे बोलते हैं
ये फूल
हवाओं में
अपनी सुगंध
जाने किसे भेजते है?
सूरज की किरणें
रोज सबेरे
जाने किस द्वार पर
दस्तक देती है
वृक्ष की यह छाया
जाने किसके आने का
इंतजार करती है
काश!
सब
अपने को पा लेते।

संकलनः
डॉ. सत्येन्द्र जैन

रंग के साथी 'एक रचनात्मक पहल'

अंशिता बजाज वर्मा
रंग के साथी ग्रुप, सागर

'जब रंग बोलते हैं तब शब्द मौन हो जाते हैं'. इन्ही रंगों से भरा क्षेत्र है चित्रकला का क्षेत्र अब सीमित नहीं रहा. यह असीम संभावनाओं से भरा क्षेत्र है, बशर्ते युवा पीढ़ी को इसकी सही जानकारी मिलती है।

रंग के साथी ग्रुप इसी का प्रयास पिछले कई वर्षों से कर रहा है कि इस क्षेत्र में दिलचस्पी रखने वाली युवा पीढ़ी को इस क्षेत्र में आगे बढ़ाने के अवसरों के बारे में जागरूक करें।

रंग के साथी ग्रुप, सन 2000 से रजिस्टर्ड एक संस्था है जो चित्रकला के क्षेत्र में लगातार कार्यरत है. शुरुआत में जब सागर शहर में वॉल पेंटिंग का कहीं दूर-दूर तक नामो निशान नहीं था, तब इस संस्था ने शहर की गंदी दीवारों को सुंदर बनाने का एक लक्ष्य निर्धारित किया. संस्था को कोई सरकारी अनुदान प्राप्त नहीं है, अतः सदस्यों ने चंदा करके और कुछ शहर के गणमान्य नागरिकों की मदद से शहर की कुछ मुख्य दीवारों पर सुंदर चित्रकारी करके उन्हें आकर्षक रुप दिया और शहर को खूबसूरत बनाने में अपना योगदान दिया. यह सिलसिला कई वर्षों तक चला जिसमें रंग के साथी ग्रुप के 5-6 सदस्य निःस्वार्थ भाव से शहर को सुंदर बनाने का कार्य करते रहे और साथ ही शहर के बच्चों को चित्रकला सिखाने का कार्य भी करते रहे। कहते हैं ना कि अच्छा काम करने वाले अकेले भी चले तो उनके साथ काफिला खुद ब खुद बनता चला जाता है, यही रंग के साथी ग्रुप के साथ भी हुआ. 5-6 सदस्य कब 15-20 सदस्यों में तब्दील हो गए पता ही नहीं चला। लोग जुड़ते रहे और ग्रुप बढ़ता गया. तत्पश्चात सन 2018 से रंग के साथी ग्रुप ने शहर में पहली बार चित्रकला कार्यशालाओं का आयोजन प्रारंभ किया जो कि अभी तक निरंतर चल रहा है. रंग के साथी ग्रुप द्वारा स्वराज संस्थान भोपाल, मध्य प्रदेश टूरिज्म बोर्ड, मध्य प्रदेश संस्कृत विभाग, इंडियन साइंस कांग्रेस, ई एम एम आर सी डिपार्मेंट सागर यूनिवर्सिटी, शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय सागर, नगर निगम सागर, संस्कृति विभाग के उमंग उत्सव, बीटी इंस्टिट्यूट ऑफ़ एक्सीलेंस कॉलेज, ब्लू बेल्स स्कूल, कैंब्रिज हाईट स्कूल, वात्सल्य स्कूल, ज्ञानवीर कॉलेज, डिग्री कॉलेज, आर्ट एंड कॉमर्स कॉलेज आदि कई संस्थाओं के साथ मिलकर समय-समय पर अनेकों चित्रकला कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता रहा। इन कार्यशालाओं के द्वारा शहर में चित्रकला का एक माहौल बन गया। अब शहर के युवा चित्रकला को सिर्फ एक शौक के रूप में न देखकर अपितु इसमें करियर बनाने के बारे में भी सोचने लगे हैं। परंतु सागर शहर में कोई भी ऐसा इंस्टिट्यूट नहीं था जो इन विद्यार्थियों को चित्रकला सिखाने के साथ-साथ इसके क्षेत्रों में होने वाले कोर्सेज की जानकारी दे सके और जो बच्चे या युवा चित्रकला में कोई कोर्स करना चाहते हैं, वह सागर में ही रहकर अपनी पढ़ाई के साथ-साथ चित्रकला में भी कोर्स कर सकते हैं. तब रंग के साथी ग्रुप द्वारा एक चित्रकला सिखाने का इंस्टिट्यूट 'रंग आर्ट इंस्टिट्यूट' के नाम से शुरू किया गया, जिसमें छोटे बच्चों से लेकर युवाओं, ग्रहणियों और हर आयु वर्ग के लोगों को चित्रकला का प्रशिक्षण दिया जाता है. रंग आर्ट इंस्टिट्यूट मैं कुछ लोग शौकिया चित्रकारी सीखने आते हैं, परंतु बहुत से युवा ऐसे भी रहते हैं जिन्हें इस कला को प्रोफेशन के रूप में अपनाने की चाह होती है,... उनके लिए रंग आर्ट इंस्टिट्यूट के द्वारा कुछ कोर्स संचालित किये जा रहे हैं. रंग आर्ट इंस्टिट्यूट में प्राचीन कला केंद्र चंडीगढ़ और इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ छत्तीसगढ़ से एफिलिएशन लेकर वहां के डिप्लोमा कोर्स चलाए जा रहे हैं, जिसमें 5 वर्ष के बच्चों से लेकर युवाओं, महिलाओं एवं सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए डिप्लोमा कोर्सेस संचालित किया जा

रहे हैं.. इन कोर्सेस को करने वाले विद्यार्थियों की परीक्षा यही सागर में ही करवाई जाती है और उन्हें संबंधित संस्थान का डिप्लोमा प्राप्त होता है, जो कि उनके आगे के करियर के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है. सागर नगर के लिए चित्रकला के क्षेत्र में यह एक बड़ा कदम है. रोजगार संबधित जानकारी देने हेतु रंग के साथी ग्रुप ने शहर के स्कूल कॉलेजों में जाकर निःशुल्क सेमिनार का आयोजन करना प्रारंभ किया, जिसका विषय 'चित्रकला में रोजगार रखा गया. इस सेमिनार में युवा छात्र–छात्राओं को चित्रकला में किस प्रकार से कोर्स किया जा सकते हैं, डिग्री मिल सकती है और किस प्रकार से रोजगार प्राप्त किया जा सकता है, इसकी जानकारी दी जाती है. चित्रकला के बारे में जागरूकता फैलाना ही इस सेमिनार का और संस्था का मुख्य उद्देश्य है.

सागर को कला का गढ़ माना जाता है. यहां का संगीत, नृत्य और थिएटर पूरे देश में प्रसिद्ध है, परंतु चित्रकला के क्षेत्र में कुछ वर्षों पूर्व तक उतना काम नहीं हुआ था, जिसे रंग के साथी ग्रुप द्वारा महसूस करके इस पर काम शुरु किया और आज रंग के साथी ग्रुप द्वारा प्रदेश के अलग–अलग स्थानों जैसे सागर, भोपाल, इंदौर, खजुराहो आदि में चित्रकला की प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाता है.. खजुराहो में होने वाला नृत्य महोत्सव जो कि पूरे देश में ही नहीं अपितु विदेश में भी प्रसिद्ध है, उसमें सन 2021 में रंग के साथी ग्रुप द्वारा बुंदेलखंड के लोक चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई। यह बुंदेलखंड की चित्रकला को देश–विदेश के कला प्रेमियों को दिखाने की एक पहल थी... इस प्रदर्शनी को खजुराहो में आयोजित में इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में संस्कृति मंत्री, जिले के कलेक्टर, कमिश्नर विभिन्न स्थानों से आए कला प्रेमियों एवं खजुराहो के स्थानीय नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे तथा इनके द्वारा इस कार्यक्रम को बहुत सराहना मिली।

साल भर में होने वाला कोई भी त्यौहार हो या कोई भी जयंती या कोई भी खास दिन, रंग के साथी ग्रुप द्वारा हर अवसर पर कोई ना कोई कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है... चाहे फिर वह गणपति उत्सव हो, नवरात्रि हो, दिवाली, होली या फिर संक्रांति का त्यौहार.. इसी तरह चाहे रविंद्र नाथ टैगोर जयंती हो, गांधी जयंती, हरिसिंह गौर जयंती या नगर निगम के द्वारा चलाए जा रहा कोई स्वच्छता अभियान हो, विश्व पर्यावरण दिवस हो या स्वतंत्रता दिवस, विश्व बाघ दिवस हो या विश्व पर्यटन दिवस, नारी दिवस हो या मातृ दिवस.... हर अवसर पर रंग के साथी ग्रुप द्वारा चित्रकला की कार्यशाला, प्रतियोगिता या प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है। इसका उद्देश्य सिर्फ एक ही होता है कि इस कला में रुचि रखने वालों को शहर में ही अवसर प्रदान कर सके और उन्हें अपनी कला को निखारने तथा उसे लोगों के सामने प्रदर्शित करने का मौका मिल सके..

रंग के साथी ग्रुप के 15 कलाकारों द्वारा मिलकर राम गाथा के नाम से 35 पेंटिंग्स की एक पूरी सीरीज को जलरंग से बनाया गया है... जिसमें राम जन्म से लेकर राम जी के अयोध्या वापसी तक के चित्रों को क्रम से दर्शाया गया है... संस्था द्वारा इन चित्रों की सागर एवं इंदौर में प्रदर्शनी लगाई गई है... और आगे दिल्ली एवं अयोध्या में इसकी प्रदर्शनी लगाने की योजना है..चित्रकला के क्षेत्र में शहर के युवाओं में जागरूकता फैलाना और उन्हें यह समझाना कि यह क्षेत्र सिर्फ शौक के लिए नहीं है अपितु इससे रोजगार भी प्राप्त किया जा सकता है, यही रंग के साथी ग्रुप का उद्देश्य है और इसी उद्देश्य को साथ लेकर यह संस्था निरंतर रूप से कार्य कर रही है..... हमारा सागर शहर स्वच्छ, सुंदर और रंगों से भरा हो और चित्रकला के क्षेत्र में यहां के चित्रकार प्रदेश में, देश में और विदेश तक में अपने शहर का नाम रोशन कर सकें... इसी शुभेच्छा के साथ....

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

'कला वह अभिव्यक्ति है, जो हृदय की गहराईयों से आती है, और आत्मा को छू जाती है।'

-रवीन्द्रनाथ टैगोर

एन. सी. सी. : नेतृत्व विकास

लै. वंदना तिवारी
एसोसिएट एन सी सी अधिकारी

एनसीसीः अनुशासन, सेवा और नेतृत्व की विरासत

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) भारत के सबसे प्रमुख युवा संगठनों में से एक है, जो युवा भारतीयों को अनुशासित, जिम्मेदार और सेवा–उन्मुख नागरिक बनाने के लिए समर्पित है। 1948 में अपनी स्थापना के बाद से, एनसीसी ने लाखों कैडेटस् को एकता, साहस और देशभक्ति के मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित किया है। पूरे देश में मौजूदगी के साथ, एनसीसी राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, युवाओं को सैन्य, सार्वजनिक सेवा और नागरिक क्षेत्रों में भविष्य के नेता बनने के लिए सशक्त बना रही है।

एनसीसी का आजीवन प्रभाव

एनसीसी सिर्फ एक संगठन नहीं है; यह अनुशासन, देशभक्ति और राष्ट्र की सेवा की विरासत है। इसमें शामिल होने वाले हर कैडेट के लिए एनसीसी शक्ति और प्रेरणा का स्रोत बन जाती है, उनके चरित्र को आकार देती है और भविष्य के अवसरों के द्वार खोलती है। अपने कार्यक्रमों, प्रशिक्षण और मूल्यों के माध्यम से, एनसीसी पूरे भारत में युवाओं को बदल रही है, एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण कर रही है जो एकता, नेतृत्व और सेवा के लिए समर्पित है।

जैसे–जैसे एनसीसी आगे बढ़ती है और आधुनिक भारत की ज़रूरतों के हिसाब से ढलती है, युवा नेतृत्व को विकसित करने की इसकी प्रतिबद्धता अटल है। इसमें शामिल हर कैडेट और अधिकारी के लिए, एनसीसी का अनुभव ऐसा है जो आजीवन प्रभाव छोड़ता है – जिसे वे गर्व और सम्मान के साथ अपने साथ लेकर चलते हैं।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

आदर्श वाक्यः एकता और अनुशासन

एनसीसी का आदर्श वाक्य, 'एकता और अनुशासन,' उन मूल मूल्यों को दर्शाता है जिन्हें हर कैडेट अपनाता है। एकता अपनेपन की भावना को बढ़ावा देती है, विभिन्न क्षेत्रों, संस्कृतियों और पृष्ठभूमियों के कैडेटस् के बीच बंधन बनाती है। इससे अनुशासन, ध्यान, जिम्मेदारी और लचीलेपन की भावना आती है, कैडेटस् को प्रभावी नेता और समाज में योगदान देने वाले के रूप में आकार देता है। साथ में, ये मूल्य चरित्र और नेतृत्व की नींव बनाते हैं जिसे कैडेट अपने पूरे जीवन में अपनाते हैं।

एनसीसी में शामिल होना सिर्फ अभ्यास और अभ्यास में भाग लेने से कहीं ज्यादा है यह एक परिवर्तनकारी यात्रा है। प्रत्येक कैडेट शारीरिक फिटनेस, हथियार संचालन, मानचित्र पढ़ने, फील्डक्राफ्ट और नेतृत्व में गहन प्रशिक्षण से गुजरता है। इसके अलावा, एनसीसी ट्रेकिंग, रॉक क्लाइम्बिंग और पर्वतारोहण जैसी साहसिक गतिविधियाँ प्रदान करता है, जो टीम भावना, साहस और व्यक्तिगत विकास को प्रोत्साहित करती हैं। कई लोगों के लिए, ये अनुभव हाइलाइट बन जाते हैं, उनकी सीमाओं का परीक्षण करते हैं और सौहार्द को बढ़ावा देते हैं।

एनसीसी समुदाय की सेवा पर भी ज़ोर देती है। स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण और आपदा राहत प्रयासों जैसी गतिविधियों के माध्यम से, कैडेट समाज को वापस देने के महत्व को सीखते हैं। ये पहल सामाजिक जिम्मेदारी और सेवा की एक मजबूत भावना पैदा करती है जो कैडेटों के साथ उनके एनसीसी के दिनों के बाद भी बनी रहती है।

ले वंदना तिवारी
एसोसिएट एन सी सी अधिकारी

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

नर हो, न निराश करो मन को : मैथिलीशरण गुप्त

नर हो, न निराश करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो
जग में रह कर कुछ नाम करो
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो

समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो
कुछ तो उपयुक्त करो तन को
नर हो, न निराश करो मन को
सँभलो कि सुयोग न जाए चला

कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला
समझो जग को न निरा सपना
पथ आप प्रशस्त करो अपना
अखिलेश्वर है अवलंबन को

नर हो, न निराश करो मन को
जब प्राप्त तुम्हें सब तत्त्व यहाँ
फिर जा सकता वह सत्त्व कहाँ
तुम स्वत्त्व सुधा रस पान करो

उठके अमरत्व विधान करो
दवरूप रहो भव कानन को
नर हो न निराश करो मन को
निज गौरव का नित ज्ञान रहे

हम भी कुछ हैं यह ध्यान रहे
मरणोत्तर गुंजित गान रहे
सब जाए अभी पर मान रहे
कुछ हो न तजो निज साधन को

नर हो, न निराश करो मन को
प्रभु ने तुमको दान किए
सब वांछित वस्तु विधान किए
तुम प्राप्तस करो उनको न अहो

फिर है यह किसका दोष कहो
समझो न अलभ्य किसी धन को
नर हो, न निराश करो मन को
किस गौरव के तुम योग्य नहीं

कब कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं
जान हो तुम भी जगदीश्वर के
सब है जिसके अपने घर के
फिर दुर्लभ क्या उसके जन को

नर हो, न निराश करो मन को
करके विधि वाद न खेद करो
निज लक्ष्य निरंतर भेद करो
बनता बस उद्यम ही विधि है

मिलती जिससे सुख की निधि है
समझो धिकब निष्क्रिय जीवन को
नर हो, न निराश करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो

रचनाकार : मैथिलीशरण गुप्त

जो अप्राप्त है
उसे पा लेना
कठिन नहीं है,
परंतु जो प्राप्त था
उसे खोकर फिर पाना
अत्यधिक कठिन है।

-महादेवी वर्मा हिन्दी रचनाकार

हिमालयः रामधारी सिंह दिनकर

मेरे नगपति। मेरे विशाल।
साकार, दिव्य, गौरव विराट,
पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल।
मेरी जननी के हिम-किरीट।

मेरे भारत के दिव्य भाल।
मेरे नगपति। मेरे विशाल।
युग-युग अजेय, निर्बंध, मुक्त,
युग-युग गर्वोन्नत, नित महान,

निस्सीम व्योम में तान रहा
युग से किस महिमा का वितान?
कैसी अखंड यह चिर-समाधि?
यतिवर। कैसा यह अमर ध्यान?

तू महाशून्य में खोज रहा
किस जटिल समस्या का निदान?
उलझन का कैसा विषम जाल?
मेरे नगपति। मेरे विशाल।

ओ, मौन, तपस्या-लीन यती।
पल भर को तो कर हगुन्मेष।
रे ज्वालाओं से दग्ध, विकल
है तड़प रहा पद पर स्वदेश।

सुखसिंधु, पंचनद, ब्रह्मपुत्र,
गंगा, यमुना की अमिय-धार
जिस पुण्यभूमि की ओर बही
तेरी विगलित करुणा उदार,

जिसके द्वारों पर खड़ा क्रांत
सीमापतिः तूने की पुकार,
'पद-दलित इसे करना पीछे
पहले ले मेरा सिर उतार।'

उस पुण्य भूमि पर आज तपी।
रे, आन पड़ा संकट कराल,
व्याकुल तेरे सुत तड़प रहे
हँस रहे चतुर्दिक विविध व्याल।

मेरे नगपतिः मेरे विशाल।
कितनी मणियाँ लुट गयीं? मिटा
कितना मेरा वैभव अशेष।
तू ध्यान-मग्न ही रहा; इधर

वीरान हुआ प्यारा स्वदेश।
किन द्रौपदियों के बाल खुले?
किन-किन कलियों का अंत हुआ?
कह हृदय खोल चित्तौर। कहा

कितने दिन ज्वाल-वसंत हुआ?
पूछे सिकता-कण से हिमपति।
तेरा वह राजस्थान कहाँ?
वन-वन स्वतंत्रता-दीप लिये

फिरनेवाला बलवान कहाँ?
तू पूछ, अवध से, राम कहाँ?
वृंदावन बोलो, घनश्याम कहाँ?
ओ मगध। कहाँ मेरे अशोक?

वह चंद्रगुप्त बलधाम कहाँ?
पैरों पर ही है पड़ी हुई
मिथिला भिखारिणी सुकुमारी,
तू पूछ, कहाँ इसने खोयी

अपनी अनंत निधियाँ सारी?
री कपिलवस्तु। कह, बुद्धदेव
के वे मंगल-उपदेश कहाँ?
तिब्बत, इरान, जापान, चीन

तक गये हुए संदेश कहाँ?
वैशाली के भग्नावशेष से
पूछ लिच्छवी-शान कहाँ?
ओ री उदास गंडकी। बता

विद्यापति कवि के गान कहाँ?
तू तरुण देश से पूछ अरे,
गूँजा कैसा यह ध्वंस-राग?
अंबुधि-अंतस्तल-बीच छिपी

यह सुलग रही है कौन आग?
प्राची के प्रांगण बीच देख,
जल रहा स्वर्ण-युग-अग्निज्वाल,
तू सिंहनाद कर जाग तपी।

मेरे नगपति। मेरे विशाल।
रे, रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,
जाने दे उनको स्वर्ग धीर,
पर, फिरा हमें गांडीव-गदा,
लौटा दे अर्जुन-भीम वीर।
कह दे शंकर से, आज करें
वे प्रलय-नृत्य फिर एक बार।
सारे भारत में गूंज उठे,

'हर-हर-बम' का फिर महोच्चार।
ले अंगड़ाई, उठ, हिले धरा,
कर निज विराटब स्वर में निनाद,
तू शैलराट। हुंकार भरे,

फट जाय कुहा, भागे प्रमाद।
तू मौन त्याग, कर सिंहनाद,
रे तपी। आज तप का न काल। नव-युग-
शंखध्वनि जगा रही,
तू. जाग, जाग, मेरे विशाल।

स्रोत:
पुस्तक : स्वतंत्रता पुकारती (पृष्ठ 263)
संपादक: नंद किशोर नवल
रचनाकार: रामधारी सिंह दिनकर प्रकाशन:
साहित्य अकादेमी संस्करण: 2006

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन- अज्ञेय

आज सेबेरे

अचरज एक देख में आया।
एन घने, पर धूल–भरे से अर्जुन तरू के नीचे
एक तार पर बिजली के वे सटे हुए बैठे थे–
दो पक्षी छोटे–छोटे,

घनी छाँह में, जग से अलग, किन्तु परस्पर सलग।
और नयन शायद अधमीचे।

और उषा की धुँधली–सी अरूणाली थी सारा जग सींचे।
छोटे, इतने क्षुद, कि जग की सदा सजग आँखों की एक अकेली

झपकी–

एक पल में मिट जाएँ, कहीं न पाएँ–
छोटे, किन्तु द्वित्व में इतने सुंदर, जग–हिय ईर्ष्या भर जावे,
भर क्यों–भरा सदा रहता है–छल–छल उमड़ा आवे।

सलग, प्रणय की आँधी में मानो से दिन–मान,
विधि का करते से आह्वान।

मैं जो रहा देखता, तब विधि ने भी सब कुछ देखा होगा,
–वह विधि, जिस के अधिकृत उन के मिलन विरह का लेखा होगा–
किंतु रहे वे फिर भी सटे हुए, संतम
आत्मता में ही तन्मय, तन्मयता में सतत निमग्र।

और–बीत चुका जब मेरे जाने समय युगों का–
आया एक हवा का झोंका–काँपे तार–झरा दो कण नीहार–

अचरज

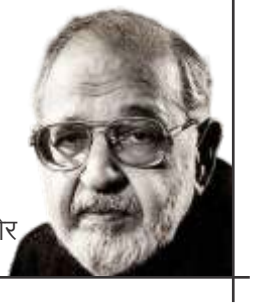

उस समय भी तो उन के उर के भीतर
कोई खलिश नहीं थी–कोई रिक्त नहीं था

बाताहत तम की झगझोर में भी अपने चारों ओर
एक प्रणय का निश्चल वातावरण जमाए

उड़े जा रहे थे, अतिश निद्वंद्व
और विधि देख रही–नि:स्पंद।

लौट चला आया हूँ, फिर भी प्राण पूछते जाते हैं
क्या यह सच था। और नहीं उतर पाते हैं

और कहे ही जाते हैं
कि आज में

अचरज एक देख आया।

स्रोत:
पुस्तक : सन्नाटे का छंद (पृष्ठ 19)
रचनाकार: अज्ञेय
प्रकाशन: वाग्देशी प्रकाशन, संस्करण: 1997

क्रोध में आदमी अपने मन की बात नहीं करता, वह केवल दूसरे का दिल दुखाना चाहता है।

–प्रेमचंद

भारत की विदेश नीति में नैतिकता और मानवाधिकार का स्थान

स्नेहा दीक्षित
एम.ए. (राजनीति शास्त्र)

प्रस्तावना–

भारत की विदेश नीति में नैतिकता और मानवाधिकार का स्थान एक जटिल और बहुआयामी विषय है, जो समय के साथ विकसित हुआ है। भारत ने हमेशा से अपने प्राचीन परंपराओं जैसे अहिंसा, सहिष्णुता और आपसी सम्मान से प्रेरित होकर एक नैतिक विदेश नीति का पालन करने का प्रयास किया है।

नैतिकता का आधार

भारत की विदेश नीति में नैतिकता के कई महत्वपूर्ण पहलू हैं:

- **पंचशील के सिद्धांत:** 1954 में चीन के साथ हस्ताक्षरित पंचशील के सिद्धांत भारतीय विदेश नीति के नैतिक आधार स्तंभ रहे हैं। ये सिद्धांत हैं:
- एक–दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता का आपसी सम्मान।
- एक दूसरे पर आक्रमण न करना।
- एक–दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना।
- समानता और पारस्परिक लाभ।
- शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व।
- **वसुधैव कुटुंबकम:** यह भारतीय दर्शन का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है, जिसका अर्थ है–'विश्व एक परिवार है'। यह सिद्धांत भारत को वैश्विक समुदाय को एक बड़े परिवार के रूप में देखने के लिए प्रेरित करता है, जहाँ सदस्य सद्भाव में रहते हैं, मिलकर काम करते हैं और एक–दूसरे पर भरोसा करते हैं।
- **गांधीवादी सिद्धांत:** महात्मा गांधी के अहिंसा और नैतिक नेतृत्व के सिद्धांत भी भारत की विदेश नीति को प्रभावित करते हैं। भारत दुनिया में अपने नैतिक सांस्कृतिक दृष्टिकोण को पुनः प्राप्त करने और सामूहिक विकास की ओर बढ़ने का प्रयास करता है।
- **गुटनिरपेक्षता:** भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति भी नैतिक सिद्धांतों पर आधारित है, जहाँ भारत किसी भी सैन्य गठबंधन या शक्ति समूह से जुड़े बिना स्वतंत्र रूप से अपने राष्ट्रीय हितों को आगे बढ़ाता है।

मानवाधिकार का स्थान–

मानवाधिकार भारतीय संविधान का एक अभिन्न अंग हैं और यह भारतीय विदेश नीति में भी परिलक्षित होता है।

- **संवैधानिक प्रतिबद्धता:** भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51 में राज्य को अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देने, राष्ट्रों के बीच न्यायपूर्ण और सम्मानजनक संबंध बनाए रखने, अंतरराष्ट्रीय कानून का सम्मान करने और विवादों को मध्यस्थता के माध्यम से निपटाने के लिए निर्देशित किया गया है।
- **संयुक्त राष्ट्र में योगदान:** भारत ने संयुक्त राष्ट्र चार्टर और मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा के सिद्धांतों का हमेशा सम्मान किया है। भारत ने विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर मानवाधिकारों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
- **विकास और मानवाधिकार:** भारत का मानना है कि

विकासशील देशों में मानवाधिकारों के मुद्दे गरीबी, अत्यधिक जनसंख्या, निरक्षरता और संसाधनों की कमी जैसी मौलिक समस्याओं से संबंधित हैं। इसलिए, भारत ने आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया है।

* घरेलू चुनौतियां और संतुलन: हालांकि, भारत की विदेश नीति में मानवाधिकारों को बढ़ावा देने और अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने के बीच संतुलन बनाना हमेशा एक चुनौती रही है। 'रोहिंग्या संकट' जैसे मामलों में, भारत को मानवाधिकारों और राष्ट्रीय हितों के संरक्षण को संतुलित करने की चुनौती का सामना करना पड़ा है।

चुनौतियां और आगे की राह

* **राष्ट्रीय हित बनाम मानवाधिकार:** भारत के लिए सबसे बड़ी चुनौती अक्सर अपने राष्ट्रीय हितों और मानवाधिकारों को बढ़ावा देने के बीच संतुलन बनाना होता है। कभी-कभी, भू-राजनीतिक मजबूरियाँ या सुरक्षा चिंताएँ मानवाधिकारों के मुद्दों पर भारत की प्रतिक्रिया को प्रभावित कर सकती हैं।
* **आंतरिक मामले में हस्तक्षेप न करना:** भारत का सिद्धांत रहा है कि वह अन्य देशों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करे, हालांकि यदि किसी देश का कोई कार्य भारत के राष्ट्रीय हितों को प्रभावित करता है, तो भारत हस्तक्षेप करने में संकोच नहीं करता है।
* **आतंकवाद:** भारत अंतरराष्ट्रीय मंचों पर आतंकवाद को एक बड़ा मानवाधिकार उल्लंघन मानता है और वैश्विक शांति के लिए एक बड़ी बाधा के रूप में देखता है।

कुल मिलाकर, भारत की विदेश नीति नैतिकता और मानवाधिकारों के सिद्धांतों पर आधारित रही है, जो उसके प्राचीन मूल्यों, संवैधानिक प्रतिबद्धताओं और वैश्विक दृष्टिकोण से प्रेरित है। भारत वैश्विक मंच पर मानवाधिकारों और न्याय को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयासशील है, हालांकि राष्ट्रीय हितों और बदलती वैश्विक परिस्थितियों के बीच संतुलन बनाना एक सतत प्रक्रिया है।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

सपनों का महत्व और उन्हें साकार करने का संकल्प

नेंन्सी जैन
बी.ए.बी.एड. (चतुर्थ सेमे.)

सपने..... एक छोटा सा खब्द, लेकिन इसमें एक पूरी दुनिया छिपी होती है। सपने वो नहीं होते जो हम सोते हुए देखते हैं, बल्कि सपने वो हाते हैं जो हमें सोने नहीं देते। सपने केवल सोते समय देखने की चीज नहीं, बल्कि वे हमें जागृत रहने एवं जीवन में कुछ बड़ा करने की प्रेरणा देते हैं।

हर इंसान के पास कुछ न कुछ सपना होता है कोई डॉक्टर बनना चाहता है, कोई कलाकार, कोई शिक्षक तो कोई बस एक बेहतर इंसान सपनों की दुनिया में कोई सीमा नहीं होती, कोई बंधन नहीं होता। लेकिन चुनौती यह क्या हम अपने सपनों को सच करने का हौसला रखते हैं?

सपनों को देखना तो हर कोई जानता है। लेकिन जब बात आती है उन्हें पूरा करने की, तो राहें कठिन हो जाती हैं। लोग कहेंगे 'ये तो बहुत मुश्किल है', 'तू नहीं कर पाएगा', 'और भी रास्ते हैं।'लेकिन उसी वक्त आपको अपने दिल की सुननी है, उस आवाज की जो कहती है– 'हां, तू कर सकता है।'

कल्पना कीजिए अगर अब्दुल कलाम ने बचपन में ये मान लिया होता कि एक मछुआरे का बेटा कभी राष्ट्रपति नहीं बन सकता तो क्या वो आज हम सबके प्रेरणा स्त्रोत होते ? हर बड़ा सपना, एक छोटे से विश्वास से शुरू होता है– 'में कुछ कर सकता हूँ।'

कई बार हमें डर लगता है– 'अगर मैं असफल हो गया तो?' लेकिन हमें यह सोचना चाहिए– 'अगर मैं सफल हो गया तो?' यही सोच जिंदगी बदल देती है ।

सपने हमेशा आसान नहीं होते, लेकिन वो हमें जीने का मकसद देते हैं। खुद पर यकीन रखें, और आगे बढ़ते रहें।

नई शिक्षा नीति 2020 और उच्च शिक्षा में बहुभाषिकता की भूमिका

आकांक्षा तिवारी
एम.ए. (राजनीति शास्त्र)

भारत विविध भाषाओं का देश है, जहाँ सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलित हैं। इस बहुभाषिक संस्कृति को शिक्षा व्यवस्था में समाहित करने का प्रयास नई शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के माध्यम से किया गया है। यह नीति छात्रों को उनकी मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देकर उनकी समझ, रचनात्मकता और बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है।

बहुभाषिकता का अर्थ और महत्त्व

बहुभाषिकता का आशय है दो या अधिक भाषाओं का ज्ञान और उनका प्रयोग। यह न केवल संवाद की क्षमता को बढ़ाता है, बल्कि विद्यार्थियों को विभिन्न भाषायी और सांस्कृतिक दृष्टिकोणों से जोड़ता है। उच्च शिक्षा में बहुभाषिकता एक सशक्त शैक्षणिक रणनीति बन चुकी है।

NEP 2020 में बहुभाषिकता के प्रावधान

1. **मातृभाषा/स्थानीय भाषा में शिक्षा (कक्षा 5 तक या अधिक तक):** इससे छात्रों की बुनियादी समझ मजबूत होगी और जटिल विषय-वस्तु को समझना आसान होगा।
2. **द्विभाषी शिक्षण सामग्री का विकास:** उच्च शिक्षा संस्थानों में हिंदी, अंग्रेज़ी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में पाठ्य-सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।
3. **भारतीय भाषा संस्थान की स्थापना:** पाठ्यक्रमों का अनुवाद एवं व्याख्या सटीक और व्यावसायिक रूप से करने हेतु एक विशेष संस्थान की स्थापना की जाएगी।
4. **त्रि-भाषा फॉर्मूला:** छात्रों को हिंदी, अंग्रेज़ी और एक क्षेत्रीय भाषा सीखने को प्रोत्साहित किया जाएगा जिससे उनकी भाषायी समझ और संप्रेषण क्षमता विकसित हो सके।

उच्च शिक्षा में बहुभाषिकता के लाभ:

- **गहरी समझ:** मातृभाषा या परिचित भाषा में पढ़ाई से विषयों की गहराई से समझ विकसित होती है।
- **समान अवसर:** ग्रामीण और क्षेत्रीय पृष्ठभूमि के छात्रों को आत्मविश्वास और समावेशिता का अनुभव होता है।
- **रोज़गार के अवसर:** बहुभाषिक छात्र अनुवाद, पत्रकारिता, प्रशासन, शोध आदि में बेहतर करियर बना सकते हैं।
- **वैश्विक प्रतिस्पर्धा:** विभिन्न भाषाओं में दक्ष छात्र अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बेहतर संवाद और सहयोग कर सकते हैं।
- **सांस्कृतिक विविधता का सम्मान:** भाषाई विविधता को प्रोत्साहन मिलने से सांस्कृतिक समावेशिता और सम्मान को बढ़ावा मिलेगा।

प्रमुख चुनौतियाँ:

- गुणवत्तापूर्ण बहुभाषीय सामग्री की कमी
- शिक्षकों की भाषाई दक्षता का अभाव
- तकनीकी विषयों के अनुवाद में कठिनाई
- शिक्षा व्यवस्था में एकरूपता बनाए रखना कठिन

समाधान और सुझाव:

1. **डिजिटल माध्यमों का उपयोग:** ई-लर्निंग प्लेट फॉर्म के माध्यम से बहुभाषिक पाठ्यवस्तु आसानी से उपलब्ध कराई जा सकती है।
2. **शिक्षक प्रशिक्षण:** शिक्षकों को द्विभाषिक या त्रि-भाषिक प्रशिक्षण प्रदान करना आवश्यक है।
3. **नवाचार को प्रोत्साहन:** क्षेत्रीय भाषा में शोध, प्रोजेक्ट्स और नवाचार को बढ़ावा दिया जाए।

निष्कर्ष

नई शिक्षा नीति 2020 के तहत उच्च शिक्षा में बहुभाषिकता को बढ़ावा देना भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक क्रांतिकारी परिवर्तन है। यह न केवल भाषाई न्याय को सुनिश्चित करता है, बल्कि बौद्धिक विकास, रोज़गार की संभावनाएँ, और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारतीय छात्रों को सक्षम बनाता है। यदि इसे योजनाबद्ध और समावेशी तरीके से लागू किया गया, तो भारत वैश्विक शिक्षा मानकों पर एक सशक्त और सम्मानित पहचान बना सकता है।

डॉ. के. कस्तूरी रंगन- नई शिक्षा नीति का उद्देश्य शिक्षा को जड़ से सुधारकर, भारत को ज्ञान की महाशक्ति बनाना है।

डॉ. राधाकृष्णन आयोग (1948)- 'शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है।'

❖❖❖❖❖

कविता
स्व प्रेरणा

क्या खोजते हो दुनिया में,
जब सब कुछ तेरे अन्दर है।
क्यों देखते हो ओरों में
जब तेरा मन ही दर्पण है।
दुनिया बस एक दौड़ नहीं,
तू भी अब नहीं है धावक।
रूक कर खुद से बातें करले,
अन्तर मन को शान्त तो करले।
सपनों की गहराई समझो
अपने अन्दर की अच्छाई समझो।
स्वाध्याय की आदत डालो
जीवन को तुम खुलकर जीलो।
आलस्य तुम्हारा दुश्मन है तो,
पुरूषार्थ को अपना दोस्त बनालो।
जीवन का ये रहस्य समझलो
और खुशियों से तुम नाता जोड़ो।

अनुजा जैन
बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर

❖❖❖❖❖

''भारत-अमेरिका राजनीतिक साझेदारी: मोदी सरकार का एक मूल्यांकन''

रक्षा ब्राह्मण
एम.ए.(राजनीति शास्त्र)

भारत और अमेरिका के बीच राजनीतिक साझेदारी, खासकर नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद, ने एक अभूतपूर्व गति पकड़ी है और इसे रणनीतिक साझेदारी का दर्जा दिया गया है। पारंपरिक रूप से, शीत युद्ध के दौरान भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति के कारण अमेरिका के साथ उसके संबंध हमेशा करीबी नहीं रहे, लेकिन 1990 के दशक में भारत के आर्थिक उदारीकरण और बदलते वैश्विक परिदृश्य ने इन संबंधों को एक नया आयाम दिया।

मोदी सरकार के तहत संबंधों का उत्थान

मोदी सरकार ने भारत-अमेरिका संबंधों को एक 'विश्वास-आधारित' साझेदारी के रूप में देखा है, जो केवल लेन-देन संबंधी नहीं, बल्कि गहरे लोकतांत्रिक मूल्यों और साझा हितों पर आधारित है। इस युग में संबंधों में कई महत्वपूर्ण बदलाव देखे गए हैं:

❊ गहरा रक्षा सहयोग: मोदी सरकार ने रक्षा क्षेत्र में अमेरिका के साथ सहयोग को प्राथमिकता दी है। लॉजिस्टिक्स एक्सचेंज मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट (LEMOA), कम्युनिकेशंस कॉम्पेटिबिलिटी एंड सिक्योरिटी एग्रीमेंट (COMCASA) जैसे समझौतों ने दोनों देशों की सेनाओं के बीच अंतःक्रियाशीलता (interoerability) को बढ़ाया है। भारत को अमेरिका द्वारा प्रमुख रक्षा भागीदार (Major Defense Partner) का दर्जा दिया गया है, जो उच्च तकनीक रक्षा उपकरणों तक पहुंच की सुविधा प्रदान करता है। हाल ही में, भारत और अमेरिका के बीच अगले 10 वर्षों के लिए एक रक्षा सहयोग फ्रेमवर्क पर सहमति की खबर भी सामने आई है, जो सैन्य साझेदारी को और मजबूत करेगा।

❊ हिंद-प्रशांत रणनीति का केंद्र बिंदु: मुक्त और खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र के साझा दृष्टिकोण ने दोनों देशों को करीब लाया है। चीन के बढ़ते सैन्य और आर्थिक प्रभाव का मुकाबला करने के लिए, भारत और अमेरिका ने काण्ड (QUAD) जैसे बहुपक्षीय मंचों को मजबूत किया है, जिसमें जापान और ऑस्ट्रेलिया भी शामिल हैं। यह सहयोग हिंद-प्रशांत क्षेत्र में नियम-आधारित व्यवस्था बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।

❊ उभरती प्रौद्योगिकी और आर्थिक संबंध: व्यापार और आर्थिक साझेदारी भी मजबूत हुई है। अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार रहा है, और दोनों देशों ने नवीकरणीय ऊर्जा, सेमीकंडक्टर, महत्वपूर्ण खनिजों और स्वास्थ्य सेवा जैसे क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ाया है। सामरिक स्वच्छ ऊर्जा साझेदारी (SCEP) और कोविड-19 वैक्सीन उत्पादन में सहयोग इसके प्रमुख उदाहरण हैं। अमेरिकी कंपनियों द्वारा भारत में निवेश और भारतीय कंपनियों द्वारा अमेरिका में निवेश ने आर्थिक संबंधों को और गति दी है।

❊ व्यक्तिगत कूटनीति और प्रवासी भारतीयों की भूमिका: प्रधानमंत्री मोदी ने अमेरिकी नेताओं के साथ व्यक्तिगत तालमेल बनाने पर जोर दिया है। उनकी अमेरिका यात्राओं में भारतीय प्रवासियों के साथ बड़े पैमाने पर जुड़ाव भी देखा गया है, जिन्होंने दोनों देशों के बीच संबंधों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

चुनौतियाँ और भविष्य की दिशा, हालांकि साझेदारी मजबूत हुई है, कुछ चुनौतियाँ भी हैं:

❊ भू-राजनीतिक संवेदनशीलताएँ: भारत के रूस के साथ ऐतिहासिक संबंध और कुछ हद तक उसकी रणनीतिक स्वायत्तता की नीति, अमेरिकी नीति निर्माताओं के बीच कभी-कभी चिंता का विषय रही है। हालांकि, अमेरिका अब भारत के रूसी संबंधों की अपनी समझ को समायोजित कर रहा है।

❊ व्यापार संबंधी मुद्दे: व्यापार घाटा और कुछ टैरिफ जैसे मुद्दे समय-समय पर सामने आते रहते हैं, जिन पर बातचीत जारी है।

❊ मानवाधिकार और लोकतांत्रिक मुद्दे: अमेरिकी कांग्रेस के कुछ नियमों और मानवाधिकार संगठनों द्वारा भारत में आंतरिक मामलों, विशेषकर मानवाधिकारों से संबंधित चिंताओं को उठाया जाता है, जिससे संबंध प्रभावित हो सकते हैं।

इसके बावजूद, भारत और अमेरिका के बीच राजनीतिक साझेदारी मजबूत, घनिष्ठ और दृढ़ बनी हुई है। यह साझेदारी वैश्विक सुरक्षा, स्थिरता और आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण है। भविष्य में, यह उम्मीद की जाती है कि दोनों देश उभरती प्रौद्योगिकियों, जलवायु परिवर्तन, साइबर सुरक्षा और आतंकवाद विरोधी जैसे क्षेत्रों में सहयोग को और गहरा करेंगे।

मोदी सरकार ने भारत-अमेरिका संबंधों को एक नए स्तर पर पहुंचाया है, जहां दोनों देश केवल भागीदार नहीं, बल्कि एक-दूसरे के महत्वपूर्ण रणनीतिक सहयोगी बन गए हैं, जो बदलती वैश्विक व्यवस्था में एक साथ खड़े हैं।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

शिक्षा और ज्ञान

–प्रियंका अहिरवार
बी.एड. (चतुर्थ सेमे.)

जहां ज्ञान हैं वहीं सुख हैं,
बिना ज्ञान पूरा जीवन दुःख है,

सच्ची बातों को जान लेने का नाम ज्ञान हैं,
जो अपनी मेहनत से कुछ कर दिखाएँ वही महान हैं.

अशिक्षित को शिक्षा दो, अज्ञानी को ज्ञान,
शिक्षा से ही बन सकता हैं, भारत देश महान

बढ़ाने लगी हो आँखे तेरी, चाहे चमकती हो रफ्तार
उखड़ रही हो साँसे तेरी, दिल करता हो चित्कार,
दोष विद्याता को ना देना, मन में रखना तू ये आस,
'रण विजयी' बनता वहीं, जिसके पास हो' आत्मविश्वास.

मंदिर में जाकर भगवान नहीं मिलता
बिना परिश्रम के ज्ञान नहीं मिलता

कोशिशों के बावजूद हो जाती हैं कभी हार
होके निराश मत बैठना मन को अपने मार,
बढ़ते रहना आगे सदा हो जैसा भी मौसम,
पा लेती हैं मंजिल चीटियाँ भी गिर–गिर कर हर वार,

अहंकार

अहंकार का ताज पहन कर
खुद को ऊँचा समझते है,
अपनी झूठी शान में खोकर कुछ लोग
सबको छोटा समझते हैं,
किसी के प्यार और जज्बातों की
कहाँ ये फिक्र करते हैं।
ढूँढते हैं सब में गलतियाँ
खुद को खुदा समझते है।।

–हुजेफा नट
(बी.ए. चतुर्थ सेमे.)

महिला सशक्तिकरण

स्नेहा दांगी
बी.ए.बी.एड. (चतुर्थ सेमे.)

हम उस समाज के लोग है
जहाँ महिला दिवस पर शुभकामनाएं दी जाती है।
वहीं दूसरी ओर रोज हर स्त्री यहां
शोषण का शिकार हो जाती है।
नारी की आज ऐसी स्थिति है
क्योंकि कहीं न कहीं वो ही जिम्मेवार है।
क्यों वो एक ही जख्म पर
सहती रहती हजारों वार है।
बहुत हो चुका शोषण हमारा
बहुत बन गए हम बेचारी।
अब दुष्कर्मियों को सही राह पर लाना है,
यह नारी धर्म की जिम्मेदारी।

.....वो पल.....

कुछ उदासियां छाई हुई
पता नहीं किस सोच में खोई हुई
अच्छा नहीं लग रहा था मुझे
याद आ रहे थे अपने घर सजे
थोड़ी सी उदास थोड़ी सी दुःखी
हमारी जिंदगी में थी कम खुशी
वो पल याद कर खो जाते हैं यार
जब साथ था पूरा परिवार
जहां दादी की कहानियां
दादा का पाते थे प्यार
वो पल.....
मां का डाटना पापा का बचाना
परिवार का साथ रहना
साथ साथ करते थे पढ़ाई
बहिन भाई की लड़ाई
भाई बहिन का वो प्यार
वो पल.....
अपनी जिंदगी में खो गये सब
लगता है कहीं खो गए अब
रिश्तेदार लगने लगे हैं वो परिवार
वो पल.....

विपदा जैन
बी.एड. तृतीय सेम.

जीवन मूल्यों की महत्ता

अंकुर भारती
बी.ए.बी.एड., सातवां सेमेस्टर

व्यक्ति जितना शांत रहेगा, उतनी ही गहराई से अपनी बुद्धि का प्रयोग करेगा और जितना अपनी बुद्धि का प्रयोग करेगा उतना ही अपने रिश्तों में अपने अहंकार को शिथिल करने में महत्व देगा। वास्तव में मनुष्य का यही जीवन मूल्य है। संस्कृत में कहा गया है–

यस्यनास्ति स्वयं प्रज्ञा, शास्त्रिप्तस्य करोति किम्
लोचनाभ्यास विहीनस्य दर्पणः किमब करस्यति ।।

अर्थात–जिसकी स्वयं की बुद्धि नहीं है, शास्त्र भी उसके लिए कुछ नहीं कर सकता है जैसे नेत्र विहीन व्यक्ति को दर्पण भी कुछ नहीं कर सकता है।

जीवन मूल्य मानव को सही मायने में मानव बनाते हैं। जिसके माध्यम से मानव अपना सात्विक जीवन व्यतीत करता है। मानव जीवन के उच्चतर मूल्य ही मानव के आदर्श माने जाते हैं। जिनके लिए मनुष्य अनेक प्रकार के कष्टें को सहनकर अपना जीवन व्यतीत करता है। तथा समय आने पर इन मूल्यों के कारण अपना जीवन भी त्याग देता है। लेकिन जीवन मूल्य को नहीं छोड़ता है। इन्हीं जीवन मूल्यों के कारण व्यक्ति अपने अमूल्य जीवन के महत्व को समझ सका है। इसी कारण मनुष्य परस्पर विश्वास करते है। हमारे जीवन मूल्यों में जनकल्याण की भावना को प्रमुख स्थान दिया गया है। इसी आधार पर अन्य जीवन मूल्य लोक–कल्याण एक व्यापक जीवन मूल्य माना जाता है जो कि मनुष्य ने नैतिक मूल्यों का विकास भी करता है। इसी प्रकार अनेकों जीवन मूल्य हैं, जिनका सहारा हमारे ऋषि–मुनियों तथा बड़े–बुजुर्गों ने लिया है।

भारतीय जीवन मूल्यों के कई आधार हो सकते हैं उन आधारों में प्रमुख है–

जीवन के प्रति आस्था व लगाव विवेकशील चिंतन लोक कल्याण की भावना उदारवादी दृष्किोण, सत्यनिष्ठा,परोपकार की भावना जीवों के प्रति दया भावना इत्यादि।

इन भारतीय जीवन मूल्यों को समझना तथा उन्हें अपने जीवन में उतारना हमारा नैतिक दायित्व है। इन जीवन मूल्यों को आत्मसात करने से समाज, संस्था तथा परिवार में हमारा महत्व बढ़ जाता हैं, ये जीवन मूल्य हमारी आत्मरक्षा के आधार भी माने जाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को इन जीवन मूल्यों की रक्षा करते हुए उन्हें अपने जीवन में आत्मसात करने का प्रयत्न करना चाहिए।

मेरी माँ

जीवन है सुख, दुख की धारा
जीवन है एक किनारा सुख
तू तो रूठे हुए को भी मना लेती है।
तू वो है जो होठों पर मुस्कान लाये।
माँ तू ने मुझे कलम पकड़ कर लिखना सिखाया।
माँ तू ने मुझे कभी रूठने नहीं दिया।
अगर मैं रूठी तो तू मुझे मना लेती है।
जीवन है सुख दुख की धारा
जीवन है एक किनारा सुख
मंजिल की ऊँचाई तक तू ने मुझे पहुँचाया
माँ है तू मेरे जीवन की धारा।

अनुजा जैन
बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर

'जिन्दगी तब समझ में आती है'

अंजली लोधी
बी.एड. द्वितीय सेम.

कंधे पे लेपटॉप का बस्ता टाँगे
घर से दूर एक पराये शहर के किसी स्टेशन पे
किसी बच्चे को, उसकी अम्मा की गोद में रोता-मुस्कुराता देख
जब अपने घर की याद आती है,
जिन्दगी तब समझ में आती है।

जब नींद आँखों के नीचे पड़े काले गड्ढों में खो जाती है
जिन्दगी जब समझ में आती है।

जब किराया, राशन, बिजली, पानी जैसे शब्दों से पाला पड़ता है।
जब बेखौफ रहने वाला दिल, जरा सा डरने लगता है।
जब घर की जिम्मेदारी का बोझ कन्धे पे पड़ने लगता है
जिन्दगी तब समझ में आती है।

जब रो कर खिलौने लेने वाला, मुस्कुरा कर जख्म लेता है।
जब पत्थर जैसे दिल वाले को, कोई फूल सा तोड़ देता है
जब जान से ज्यादा प्यारा कोई रास्ते में तन्हा छोड़ देता है
जिन्दगी तब समझ में आती है।

जब दोस्त बनाने से ज्यादा, अकेला रहना आसान लगता है।
जब डायरी में रखा सूखा गुलाब, जरूरी सामान लगता है।
जब शीशे में दिखाई देने वाला कोई अन्जान लगता है।
जिन्दगी जब समझ में आती है।

जब रोना आये तो रोया नहीं जाता, जब हम इतने बड़े हो जाते हैं।
घर की लड़कियों के बीचों-बीच हम आके खड़े हो जाते हैं
जब कोई पूछे सब ठीक है न, और हम सब ठीक बताते हैं
जिन्दगी जब समझ में आती है।

जब इन होटों के बोले झूठ का सच, किसी की आँखे बताती हैं
जब किसी के ख्वाबों को उनके चारों तरफ की भीड़ खा जाती है।
जब कमरे की चुप्पी जोरों से आके, कामों में चिल्लाती है।
जिन्दगी तब समझ में आती है।

जब समझ आ जाता है कि नहीं होता कुछ मंजिल के जैसे
यहाँ दूर-दूर तक रास्ता है और केवल रास्ता
जब सूरज के निकल जाने पर भी दिन नहीं निकलता
जब तुम्हारा तुम पर ही बस नहीं चलता
जब एक आलीशान मकान में, किसी का घर नहीं बसता
जिन्दगी तब समझ में आती है।

जब चाँद में बूढ़ी अम्मा नहीं, अधूरापन और दाग दिखते है
जब कानों में गानों की धुन नहीं, गानों के अल्फाज पड़ते हैं
जब सारे दिन के बचाये हुये आँसू तकिये पे गिरते हैं
जिन्दगी तब समझ में आती है।

जब शाम को वक्त से घर आना, जायज लगने लगता है।
जब मन में रखा कोई मलाल, सिगरेट में जलने लगता है
जब विज्ञान का कोई धुरंधर, कवितायें लिखने लगता है
और जब किसी की बात न सुनने वाला, कवितायें सुनने लगता है
जिन्दगी तब समझ में आती है।

अकादमिक भ्रमण:
एक सुखद अनुभव

देवेश पटेल
बी.ए.-चतुर्थ सेमेस्टर

भारत अपने प्राचीन इतिहास, सांस्कृतिक धरोहरों और ऐतिहासिक स्थलों के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। मध्य प्रदेश, जिसे देश का दिल कहा जाता है, इतिहास और पुरातात्विक स्थलों का खजाना है। ऐसे ही एक स्थान का नाम है- 'एरण' जो सागर जिले से लगभग 75 किलोमीटर दूर स्थित है। हाल ही में मैंने अपने दोस्तों तथा सहपाठियों के साथ एरण जाने का अवसर पाया जो हमारी इतिहास की प्रोफेसर डॉ. मनीषा तिवारी और महाविद्यालय द्वारा दिया गया। यह यात्रा हमारे लिए न केवल ऐतिहासिक स्थल का अनुभव थी, बल्कि भारत की प्राचीन सभ्यता को करीब से जानने का एक सुनहरा अवसर भी था।

हमनें अपनी यात्रा महाविद्यालय की बस से सुंबह 8 बजे शुरू की। मौसम सुहावना था और आसमान में हल्की धूप थी। रास्ते भर हरियाली से भरे खेत, गाँव की गलियाँ और प्राकृतिक दृश्य मन को बहुत भा रहे थे बस में मै और मेरे मित्र गीत गुनगुनाते हुये और आसपास के सुंदर दृश्यों का आनंद लेते हुए करीब 2 घंटे बाद हम एरण पहुँचे।

एरण का इतिहास बहुत प्राचीन है। इसे प्राचीन समय में 'एरण्य' कहा जाता था। यह स्थल गुप्तकाल चौथी से छठी शताब्दी के दौरान एक महत्वपूर्ण नगर था। एरण की स्थिति भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रही है। यह एक ओर मालवा का, तो दूसरी ओर बुंदेलखण्ड का प्रवेश-द्वार माना जा सकता है।

एरण खासतौर पर विशेष रूप से समुद्रगुप्त और बुद्धगुप्त के शिलालेखों के लिए प्रसिद्ध है। इतिहासकारों के अनुसार यहाँ की खुदाई में गुप्तकालीन सिक्के, मूर्तियाँ, शिलालेख और अन्य अवशेष मिले हैं। एरण भारत का पहला ऐसा स्थल है, जहाँ से वराह अवतार की (13 फीट) विशाल प्रतिमा देखने को मिलती है।

यहाँ से प्राप्त ध्वंसावशेषो में गुप्तकालीन भगवान विष्णु का मंदिर तथा दोनों तरफ वराह तथा नरसिंह के मंदिर प्रमुख है। विष्णु मंदिर के सामने 47 फुट ऊँचा गरूड़ स्तंभ खड़ा है। स्तंभ के चारों ओर गुप्तकाल की कला शैली और धार्मिक भावना को महसूस कर सकते हैं।

इन अवशेषों के समीप अनेक अधिष्ठान शिलालेखों के रूप में पड़े हैं। मंदिरों की दीवारों और पत्थरों पर की गई नक्काशी अद्भुत है। कुछ मंदिर खंडहर हो चुके हैं, लेकिन उनका स्थापत्य कला आज भी आकर्षक है, ये सब चीजें एरण के ऐतिहासिक महत्व को और बढ़ा देती है।

इसके निकट बेतवा की सहायक बीना नदी (प्राचीन नाम वेन्दा) वेत्रवती अद्भुत बनावट लिए बहती है। नदी के आस-पास का वातावरण बहुत ही शांत और प्राकृतिक सुंदरता से परिपूर्ण था।

इस यात्रा ने यह सिखाया कि हमारे देश में कितनी अमूल्य धरोहरें छिपी हैं। आज के समय में हम तकनीक और भागदौड़ में उलझे रहते हैं, लेकिन एरण जैसे ऐतिहासिक स्थल हमें अपनी जड़ों और सभ्यता से जोड़ने का कार्य करते हैं।

यहाँ का गरूड़ स्तंभ, वराह प्रतिमा, प्राचीन मंदिर और शिलालेख देखने लायक हैं। साथ ही पुरातत्व विभाग के लोग जो इसे और भी अच्छा बनाने में लगे हुए हैं उन लोगों की सादगी और कार्य, व्यवहार दिल को छू लेने वाला है।

एरण की यात्रा एक अविस्मरणीय अनुभव रही। इतिहास प्रेमियों, विद्यार्थियों और पुरातत्व में रूचि रखने वालों के लिये यह स्थान किसी खोज से कम नहीं है। अगर आप कभी बुन्देलखण्ड की ओर बीना, सागर या खुरई जाएँ तो एरण जरूर जाएँ।

इतिहास की किताबों में पढ़ी बातें जब आँखो के सामने आती है तो ज्ञान भी बढ़ता है और मन भी प्रसन्न होता है।

डिजिटल युग में राजनीतिक और सोशल मीडिया का प्रभाव: एक नए युग की शुरूआत

प्रिया जैन, बी.ए. बी.एड. (द्वितीय सेमे.)

परिचय – डिजिटल युग में राजनीतिक और सोशल मीडिया का प्रभाव एक महत्वपूर्ण विषय बन गया है। आज हमारे समाज और राजनीति पर सोशल मीडिया का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। प्लेटफार्म जैसे फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम ने राजनैतिक गतिविधियों और सामाजिक आंदोलनों को नई दिशा दी हैं। इस लेख में हम डिजिटल युग में राजनीतिक और सामाजिक जीवन पर सोशल मीडिया के प्रभाव का विश्लेषण करेंगे और इसके निहितार्थों पर चर्चा करेंगे।

राजनीतिक प्रभाव–डिजिटल युग में राजनीतिक अभियानों में सोशल मीडिया का प्रभाव अत्याधिक बढ़ गया है। सोशल मीडिया प्लेटफार्म राजनीतिक नेताओं और दलों को अपने विचारों और नीतियों को जनता तक पहुँचाने का एक शक्तिशाली माध्यम प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म राजनीतिक अभियानों में धन संग्रह और जनसमर्थन जुटाने में भी सहायक सिद्ध हो रहे हैं। हालांकि सोशल मीडिया के राजनीतिक प्रभाव के कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं। हालांकि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म अक्सर झूठी खबरों और अफवाहों को फैलाने का एक माध्यम बन जाते हैं, जिससे राजनीतिक अभियानों में भ्रम और अस्थिरता पैदा कर सकते हैं। भारतीय राजनीति के संदर्भ में, सोशल मीडिया का प्रभाव गहरा और द्विधारी है।

सामाजिक प्रभाव–डिजिटल युग में सोशल मीडिया का सामाजिक प्रभाव भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। सोशल मीडिया प्लेटफार्म लोगों को एक–दूसरे से जोड़ने तथा सामाजिक आंदोलनों में भाग लेने का एक सशक्त माध्यम प्रदान करते हैं। इसके अलावा सोशल मीडिया प्लेटफार्म लोगों को अपने विचारों और अनुभवों को सांझा करने का अवसर भी देते हैं। हालांकि, सोशल मीडिया के समाजिक प्रभाव के कुछ नकारात्मक पहलू भी है। ये प्लेटफार्म अक्सर लोगों को अलगाव और एकांत में डालने का एक माध्यम बन जाते हैं, जिससे मानसिक स्वास्थ्य का खतरा बढ़ सकता है।

मातृभूमि के प्रति कर्त्तव्य

सृष्टि दांगी, बी.ए. (द्वितीय सेमे.)

मेरे लिए मातृभूमि से बड़कर कोई और नहीं,
आज का हर बच्चा कल का हरीसिंह गौर नहीं,
इस मातृभूमि का बस इतना कर्ज चुका देना।
विदेशों में रहकर अपनी संस्कृति को न ठुकरा देना
मातृभूमि की धूल आज भी मेरे लिए पावन रज है
मानो ये रात का चांद नहीं समझो ये दिन का सूरज है।

देश के प्रति हमें इतना कर्त्तव्य तो निभाना चाहिए
बन न सके कुछ बड़ा तो एक अच्छा इंसान तो बनना चाहिए
मातृभूमि के लिए हम भी बलिदान कर देंगे
समय आने पर इस देह का दान भी हम कर देंगे
अपना सर्वस्व दान करने के लिए हम भी आज आत्मरज हैं
मानो ये रात का चाँद नहीं समझो ये दिन का सूरज है।

भारत की युवा शक्ति में आज इतनी जोश हैं,
एक नए युद्ध का आज करते हम उद्घोष हैं
गरीबों के चहरो पर मुस्कान आज जो खिली नहीं
तो समझो हमको ठीक से स्वतंत्रता आज भी मिली नहीं,
इस पावन प्राचीन देश के विकसित हमकों करना अब है,
मानो ये रात का चाँद नहीं समझो ये दिन का सूरज है,
इस देश को विकसित करने के लिए हम भी आज आत्मरज है
मानो ये रात का चांद नहीं समझो ये दिन का सूरज है।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

पर्यावरण: वर्तमान समय में चुनौतियाँ और समाधान

देवेश पटेल
बी.ए.-चतुर्थ सेमेस्टर

पर्यावरण, जो हमारे जीवन का आधार है, आज गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जैव विविधता का नुकसान और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन जैसी समस्याएँ मानव के भविष्य के लिए खतरा बन रही हैं। इन चुनौतियों को समझना और उनका समाधान खोजना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

जलवायु परिवर्तन: एक वैश्विक संकट

जलवायु परिवर्तन वर्तमान में पर्यावरण की सबसे बड़ी समस्या बन चुका है। जीवाश्म ईंधन के अत्यधिक उपयोग से ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ रहा है, जिससे पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है। इसके परिणामस्वरूप ग्लेशियर पिघल रहे हैं, समुद्र का स्तर बढ़ रहा है, और चरम मौसमी घटनाएँ (जैसे बाढ़, सूखा और तूफान) अधिक बार हो रही हैं। भारत में, हमने हाल के वर्षों में कई अभूतपूर्व बाढ़ और सूखे देखे हैं, जो सीधे तौर पर जलवायु परिवर्तन से जुड़े हुए हैं। इन प्रभावों से कृषि, जल संसाधन और मानव स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर पड़ रहा है। इसका प्रभाव पर्यावरण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव स्वास्थ्य एवं आर्थिक स्थिति को भी प्रभावित कर रहा है।

प्रदूषण: हवा, पानी और मिट्टी का ज़हर

प्रदूषण एक और विकट समस्या है जो हमारे पर्यावरण को लगातार नुकसान पहुँचा रही है।

- वायु प्रदूषण शहरों में एक बड़ी समस्या बन गया है, खासकर दिल्ली जैसे महानगरों में। वाहनों से निकलने वाला धुआँ, औद्योगिक उत्सर्जन और पराली जलाना वायु गुणवत्ता को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं, जिससे दमा, कैंसर संबंधी बीमारियाँ बढ़ रही हैं।
- जल प्रदूषण भी चिंता का विषय है। औद्योगिक कचरा, कृषि अपशिष्ट और अनुपचारित सीवेज नदियों और झीलों को दूषित कर रहे हैं, जिससे पीने के पानी की कमी और जल जनित बीमारियाँ फैल रही हैं।
- मिट्टी प्रदूषण रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से हो रहा है, जो मिट्टी की उर्वरता को कम कर रहा है और खाद्य श्रृंखला को भी प्रभावित कर रहा है।

जैव विविधता का नुकसान: प्रकृति का असंतुलन

जैव विविधता पृथ्वी पर जीवन की विविधता को संदर्भित करती है। वनों की कटाई, शहरीकरण, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के कारण कई प्रजातियाँ विलुप्त होने की कगार पर हैं। भारत, जो अपनी समृद्ध जैव विविधता के लिए जाना जाता है, भी इस समस्या से जूझ रहा है। बाघ, हाथी और अन्य कई वन्यजीवों के आवास सिकुड़ रहे हैं, जिससे पारिस्थितिक तंत्र का संतुलन बिगड़ रहा है। जैव विविधता का नुकसान केवल प्रजातियों का नुकसान नहीं है, बल्कि यह उन प्राकृतिक सेवाओं (जैसे परागण, जल शुद्धिकरण) का भी नुकसान है जो हमें प्रकृति से मिलती हैं।

समाधान की ओर: व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयास

इन पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करने के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों स्तरों पर प्रयास आवश्यक हैं।

- **नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग:** सौर और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देना जीवाश्म ईंधन पर हमारी निर्भरता को कम कर सकता है।
- **जैविक विवधता और प्रदूषण नियंत्रण:** औद्योगिक जैविक विवधता का संरक्षक, प्रदूषण (वयु, जल, ध्वनि) का प्रभावी नियंत्रण और पर कड़े नियम, सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देना और अपशिष्ट प्रबंधन में सुधार वायु और जल प्रदूषण को कम कर सकता है।
- **वनीकरण और संरक्षण:** वृक्षारोपण को बढ़ावा देना, वनों की अवैध कटाई को रोकना और वन्यजीवों के आवासों का संरक्षण जैव विविधता को बनाये रखने के लिए महत्वपूर्ण है।
- **सतत जीवन शैली:** कम उपभोग करना, वस्तुओं का पुनर्चक्रण करना और टिकाऊ उत्पादों का उपयोग करना हमारे पर्यावरणीय पदचिन्ह को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
- **जागरूकता और शिक्षा:** पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करना और उन्हें शिक्षित करना स्थायी बदलाव लाने के लिए नितांत आवश्यक है।
- **सरकारी और संस्थागत पहल:** भारत सरकार और विभिन्न संगठन पर्यावरण संरक्षण के लिए कई पहल कर रहे हैं, जैसे 'स्वच्छ भारत अभियान,' 'नमामि गंगे,' और 'हरित भारत मिशन।' इन प्रयासों को और मजबूत करने तथा जनभागीदारी की जागरूकता को बढ़ाने की आवश्यकता है। पर्यावरण की रक्षा करना हम सभी की जिम्मेदारी है। यदि हम वर्तमान में इस दिशा में कार्य नहीं करते हैं, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और रहने योग्य ग्रह छोड़ना मुश्किल होगा। हमें समझना होगा कि मानव अस्तित्व सीधे तौर पर स्वस्थ पर्यावरण से जुड़ा हुआ है।

व्यवहारिक उपाय:

- **प्लास्टिक का कम उपयोग:** मैं कोशिश करता हूँ कि सिंगल-यूज़ प्लास्टिक जैसे पानी की बोतलें, स्ट्रॉ और पॉलीबैग का इस्तेमाल कम से कम करूँ। इसके बजाय, मैं अपना रियूजेबल पानी की बोतलें, कपड़े के थैला और स्टील के कंटेनर साथ रखना।
- **बिजली बचाना:** जब मैं कमरे से बाहर निकलता हूँ या उपकरणों का उपयोग नहीं कर रहा होता हूँ, तो लाइट और पंखे बंद कर देता हूँ। इसके अलावा, ऊर्जा-कुशल (energy-efficient) उपकरणों का उपयोग करने की कोशिश करता हूँ।
- **पानी का सदुपयोग:** मैं नहाते समय या बर्तन धोते समय पानी बर्बाद होने से बचाता हूँ। लीकेज को तुरंत ठीक करवाता हूँ। और पौधों में पानी देने के लिए बचे हुए पानी का इस्तेमाल करता हूँ।
- **पुनर्चक्रण** (Recycling): मैं प्लास्टिक, कागज़ और कांच जैसी चीज़ों को अलग-अलग करके रीसाइक्लिंग के लिए देता हूँ।
- **पौधे लगाना:** अपने आस-पास और बालकनी में छोटे-छोटे पौधे लगाता हूँ। ये न केवल हवा को शुद्ध करते हैं बल्कि माहौल को भी खुशनुमा बनाते हैं।
- **स्थानीय उत्पादों का उपयोग:** मैं जितना हो सके स्थानीय रूप से उगाए गए फल और सब्ज़ियाँ खरीदता हूँ। इससे परिवहन से होने वाले प्रदूषण में कमी आती है और स्थानीय किसानों को भी मदद मिलती है।
- **सार्वजनिक परिवहन या साइकिल का उपयोग:** छोटी दूरी के लिए मैं पैदल चलना, साइकिल का उपयोग करना या सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना पसंद करता हूँ, जिससे पेट्रोल और डीज़ल की खपत कम होती है। ये छोटे-छोटे कदम मिलकर पर्यावरण पर बड़ा सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। यह बहुत ज़रूरी है कि हम सब मिलकर अपने ग्रह की रक्षा करें।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

...महाविद्यालयीन गतिविधियाँ...

...महाविद्यालयीन गतिविधियाँ...

...महाविद्यालयीन गतिविधियाँ...

...महाविद्यालयीन गतिविधियाँ...

...महाविद्यालयीन गतिविधियाँ...

...महाविद्यालयीन गतिविधियाँ...

"The Tree: Our Silent Guardians"

Dr. Devanand Maurya
Asstt. Prof.- Botany

Trees are among the most valuable natural resources on our planet. They provide a multitude of benefits, ranging from environmental and economic advantages to social and health-related improvements. Whether standing tall in vast forests or planted along city streets, trees play a crucial role in sustaining life on Earth. Let's discuss about the benefits of tree that are completely free for us:

Environmental Benefits

- **Oxygen Production:** Trees produce oxygen through photosynthesis, which is essential for human and animal life.
- **Air Pollution Reduction:** Trees absorb pollutants like particulate matter, ozone, and nitrogen dioxide, improving air quality and human health.
- **Climate Change Mitigation:** Trees absorb carbon dioxide, a greenhouse gas, and store it in their biomass and soil, helping to mitigate climate change.
- **Soil Erosion Prevention:** Tree roots hold soil in place, preventing erosion and landslides.
- **Water Cycle Regulation :** Trees play a crucial role in regulating the water cycle, preventing flooding and maintaining healthy watersheds.

Social Benefits

- **Mental Health Improvement:** Spending time in nature, surrounded by trees, has been shown to improve mental health and reduce stress.
- **Physical Health Improvement:** Trees provide shade, reducing the risk of heat-related illnesses, and their leaves and bark have been used in traditional medicine for centuries.
- **Community Building:** Trees can serve as community gathering spaces, promoting social connections and a sense of community.
- **Economic Benefits:** Trees can increase property values, provide jobs in the forestry and timber industries, and support local economies.
- **Food Security:** Trees provide fruits, nuts, and other edible products, supporting food security and sustainable agriculture.

Biodiversity Benefits

- **Habitat Provision:** Trees provide habitat for countless species of plants and animals, supporting biodiversity and ecosystem health.
- **Food Source:** Trees provide food for animals, from leaves and fruits to nuts and seeds.
- **Shelter and Protection:** Trees offer shelter and protection from harsh weather conditions, predators, and human activities.
- **Soil Enrichment:** Tree roots and leaves enrich soil quality, supporting healthy ecosystems and biodiversity.

Trees are a vital component of our ecosystem, providing numerous benefits to both the environment and human societies. The value of a tree in money can be estimated by multiplying its age by 274,500, according to a Supreme Court-appointed committee.

The all eco-friendly services are provided by a tree totally free, mention in above.

As we face the challenges of climate change, biodiversity loss, and social inequality, it's more important than ever to recognize the value of trees and work to protect and preserve them. By planting trees, supporting reforestation efforts, and promoting sustainable forest management, we can help ensure the long-term health and resilience of our planet.

"Protect Tree, Protect Planet and Protect ourself"

Overcoming Stress and Anxiety in Students; A Path to Well-Being

Aditi Jain
Asstt. Prof.-Psychology

In recent years, the pressures faced by students have grown significantly, stress and anxiety have become common struggles on campuses across the globe. With academic demands, social pressures, and the uncertainty of plans, it is no wonder that many students find themselves overwhelmed. However, its important to remember that managing stress and anxiety is not only possible but necessary for maintaining mental well-being. Here's how students can take charge of their mental health while navigating the experience.

The sources of stress for students can vary, but common triggers include:

1. **Academic Pressure :** The high expectations to perform well in exams, submit assignments on time, and maintain a good CGPA can overwhelm even the most dedicated students.
2. **Social Expectations:** The desire to fit in, maintain friendships, and participate in extracurricular activities can create additional stress, especially for introverted individuals or those who struggle with social anxiety.
3. **Financial Stress:** Many students work part-time or take on student loans, creating an added burden that affects both their time and mental energy.
4. **Future Uncertainty:** Questions about career paths, internships, and post-graduation plans can cause considerable anxiety.

Stress and anxiety, when left unchecked, can lead to more than just emotional strain. Chronic stress can result in physical issues such as headaches, sleep disturbance, digestive problems, and even a weakened immune system. Moreover, the mental toll it takes can contribute to feelings of depression, burnout, and a lack of motivation. If left unresolved, these issues can affect academic performance and overall quality of life.

Practical Tips for Managing Stress and Anxiety

1. **Develop Healthy Time Management Skills**

One of the most effective ways to alleviate stress is by staying organized and managing time efficiently.

2. **Practice Mindfulness adn Meditation**

Mindfulness techniques, including meditation, deep breathing exercises, and mindfulness practices, have been proven to reduce stress and anxiety. By taking a few moments each day to sit quietly and focus on the present, students can train their minds to stay calm and centered. Even five minutes of meditation before a stressful event, such

as an exam, can work wonders in calming nerves adn improving focus.

3. Reach out for support

It's important to acknowledge that no one is alone in experiencing stress and anxiety. Talking to a trusted friend, family member, or therapist can provide much-needed support.

4. Focus on Positive Thinking and Self-Care

A positive mindset can help student's combat feelings of anxiety and stress. Practicing gratitude, reframing negative thoughts, and focusing on achievements rather than failures can boost self esteem and provide motivation. Additionally, students should practice self-care by taking time to engage in activities they enjoy, whether it's reading, art, or spending time in nature.

5. Establish Healthy Sleep Habits

Sleep plays a crucial role in managing stress and anxiety. A lack of rest can worsen both mental and physical health, leading to a cycle of poor performance, stress and anxiety. Students should aim for at least 7-9 hours of sleep per night, maintain a consistent sleep schedule, and avoid using electronic devices before bed to ensure quality rest.

Stress and anxiety are not uncommon among students, but they don't have to dictate your experience. By developing healthy coping stratigies, managing time effectively, and seeking support when needed, students can overcome these challenges and thrive both academically and personally.

"Don't Let Stress Steal your Joy."

COMEDY BREAK : Your daily dose of laughter.

Why was maths book sad?

* Because it had too many problems.

Why did bicycle fall over?

* It was two-tired!

What's orange & sounds like a parrot/

* A carrot!

Why did the two fours skip lunch?

* Because they already eight!

Why don't eggs tell jokes?

* They might crack up!

Patient : Doctor, it hurts when I touch my shoulder, my knee, and my head. What's wrong with me?

Doctor : Your finger is broken.

-Smriti Mishra
B.A.B.Ed.

"The function of education is to bring about a new human being who is free of fear."
-Jiddu Krishnamurti

"The Double-Edged Sword of AI for Young Generation"

Sabir Azad
Asstt. Prof.-Computer Application

Artificial Intelligence (AI) has been rapidly transforming the world we live in, and its impact on the young generation is a topic of much debate. While AI has the potential to revolutionize the way we learn, work, and interact with each other, it also poses significant challenges and risks. In this article, we will explore both the benefits and drawbacks of AI for the young generation.

Positive Impacts of AI for the Young Generation:

- **Personalized Learning:** AI-powered adaptive learning systems can tailor educational content to individual students' needs, abilities, and learning styles, making learning more effective and engaging.
- **Access to Information:** AI-powered search engines and virtual assistants can provide instant access to vast amounts of information, helping young people to learn and explore new topics.
- **Career Opportunities:** AI is creating new job opportunities in fields such as data science, machine learning, and robotics, which can provide young people with exciting and challenging career paths.
- **Improved Healthcare:** AI-powered diagnostic tools and personalized medicine can help young people to receive better healthcare and improve their overall well-being.

Negative Impacts of AI for the Young Generation:

- **Job Displacement:** AI automation can replace jobs, particularly in sectors where tasks are repetitive or can be easily automated, which can leave young people without employment opportunities.
- **Social Isolation:** Over-reliance on AI-powered virtual assistants and social media can lead to social isolation, weakened face-to-face communication skills, and reduced empathy.
- **Bias and Discrimination:** AI systems can perpetuate existing biases and discriminate against certain groups, including young people from diverse backgrounds.
- **Dependence on Technology:** Over-reliance on AI-powered tools and services can lead to a loss of critical thinking skills, creativity, and problem -solving abilities.

AI is a double-edged sword for the young generation. While it offers many benefits, such as personalized learning, access to information, and career opportunities, it also poses significant challenges, including job displacement, social isolation, bias, and dependence on technology. By taking these steps, we can ensure that AI is a useful tool for the young generation, rather than a source of harm.

A Tour through the History of English language

Ferheen Khan
Asstt. Prof. - English Literature

Ever wonder why English is such a mix of words that don't seem related? Or why is our spelling so weird? It's because English has a really interesting and complicated history. It started a long time ago with some wandering people, then the Vikings showed up, followed by French knights, and even writers like Shakespeare played a part!

The Original Speakers: Proto-Indo-European Nomads

Our story begins thousands of years ago with a group of nomads who roamed the plains of Europe. The Proto-Indo-Europeans were nomadic people who lived in the Pontic-Caspian steppe, a vast grassland region at the north of the Black Sea, around 5,000 years ago. They are believed to be the ancestors of the majority of modern European and Indo-Aryan languages. These people spoke a language that linguists have dubbed Proto-Indo-European (PIE). While we don't have any written records of PIE, scholars have reconstructed it by studying its "daughter" languages, which include everything from Greek and Latin to Sanskrit and English.

The Germanic Branch: Where English Gets Its Roots

Over time, PIE evolved into different language families, one of which was Germanic. This is where English's direct ancestors come into the picture. West Germanic tribes, including the Angles, Saxons, and Jutes, migrated to Britain in the 5th century AD. Their dialects formed the basis of what we now call Old English or Anglo-Saxon,

Viking Invasions: A Scandinavian Twist

But the story doesn't end there! In the 8th and 9th centuries, Viking invasions brought Old Norse speakers to Britain. Norse seafarers known as the Scandinavians, explored and raided across Europe. These were the people who lived in Scandinavia, a region in Northern Europe that generally includes Denmark, Norway, and Sweden. This resulted in a fascinating language contact situation, where Old English was influenced by Old Norse, leading to some grammatical simplification and the adoption of many Norse words into English, like bag, anger, husband, gift and many more.

The Norman Conquest: French Takes Center Stage

Then, in 1066, the Norman Conquest happened. William the Conqueror and his Norman knights took over England, and French became the language of the ruling class. For a few centuries, English was relegated to the lower classes, but it didn't disappear. Instead, it underwent a massive transformation, borrowing heavily from French vocabulary, especially in areas like law, government, and cuisine. It includes words like chef, cafe, restaurant, judge, crime, art, museum and much more.

The Great Vowel Shift and the Rise of Modern English

Fast forward to the late Middle Ages and early modern period and we see the rise of what we call Middle English, the language of Chaucer. This period also witnessed the Great Vowel Shift: it was a series of pronunciation changes in the vowels of the English language that took place primarily between the 1400s and 1600s (the transition period from Middle English to Early Modern English), beginning in southern England and today having influenced effectively all dialects of English. Through this massive vowel shift, the pronunciation of all Middle English long vowels altered, Some consonant sounds also changed, specifically becoming silent. By the time Shakespeare came along, English was starting to look a lot more like the language we speak today.

English Goes Global: From Empire to the Internet

Thanks to the British Empire, English spread across the globe, becoming the dominant language in many countries. Today, it's the lingua franca of international business, science, and technology. And with the rise of the internet, English has become even more widespread, connecting people from all corners of the world.

So, there you have it! The story of English is a testament to the dynamic nature of language. It's a global cocktail of different influences, from nomadic tribes to Viking invaders, French conquerors, and the digital revolution. And it's still evolving, with new words and expressions constantly being added to the mix. So, the next time you're struggling with English grammar or spelling, just remember: it's all part of the wild and wonderful journey of this ever-changing language!

The Importance of Sustainability in Today & World

Kumkum Tiwari
B.A. B.Ed. Ist Sem.

As the world grapples with the challenges of climate change, environmental, degradation and social inequality. Sustainability has become a critical issue that demands immediate attention.

Sustainability is not just about preserving the environment, it's also about presowing the environment. It's also about ensuring that our actions today do not compromise the ability of future generation to meet their own needs. From reducing carbon emissions to promoting eco-friendly practices, adopting sustainable lifestyles. Can have a significant impact on the health of our planet.

Governments, businesses, and individuals must work together to implement sustainable solutions, invest in renewable energy and protect biodiversity. By making conscious choices, we can reduce waste, conserve resources, and create a more equitable and thriving world for all.

"Go Green"
A Clean Revolution in India

Rubel Obrai
Asstt. Prof. Commerce

INTRODUCTION

The term "Green Revolution" refers to the period from 1965 to 1980 in India. The major benefits of the Green Revolution were mainly observed in a substantial increase in the production of food grains, especially wheat and rice using seeds with improved genetics, but on other side the environmental impact of excessive use to chemical fertilizers and pesticides. The exploitation of groundwater resources allowed farmers to double-crop but it led to an alarming drop in the water table in several key agricultural Indian states where water level are falling drastically.

The Green Revolution therefore cannot be considered to be a cent percent successive measure to resolve the actual problem of environment. Hence, a new concept called 'Clean Revolution' came in existence with tremendous efforts of Shri Jayram Ramesh, the then Minister of Environment & Forests, Government of India. The Environment and Forests Ministry was in the news throughout 2010 whether for Vedanta Resources, Posco and Lavasa - or for the Minister's aggressive green activism.

WHY GO GREEN ?

Reduction of pollution, prevention of global warming, protection of the planet, human life, wild life and the list goes on. These are just some of the many reasons to go green.

There is only a limited amount of natural resources, and with the population explosion expected to reach 9 billion by 2050, our time to find a real workable solution is running short. Soon, there will be a lot less to go around. Our consumption of nonrenewable natural resources is already too high. As the planet's population grows, scarce resources will become even harder to obtain. We all are aware about the kind of pollutions such as air pollution, light pollution, noise pollution, soil contamination, radioactive contamination, thermal pollution, visual pollution, water pollution etc. Pollution causes instability, disorder, harm or discomfort to the ecosystem i.e. physical systems or living organisms. There is an urgent need to save the environment.

EFFORTS TO SAVE THE ENVIRONMENT IN INDIA

The India's Clean Revolution Report by the Climate Group, titled "India's Clean Revolution" was published in March 2011. This report from The Climate Group, NGO shows that India's Government and businesses are well aware of the challenges and opportunities posed by climate change. It shows that India's Clean Revolution is about more than just climate change, it is about energy security, sustainable growth, access to energy for millions of citizens and the creation of skilled jobs across industry sectors. Finally, and perhaps most importantly, it also shows significant actions are already underway. India's Clean Revolution analyzes the low carbon development path India must follow, to clean its share of the USD 2.2 trillion global clean technology market. The report argues that by prioritizing bold low carbon policies and investing in clean energy now, India is creating a better, more secure and more prosperous future for its more than one billion people.

- India is making more progress than US on energy efficiency, and this market is expected to treble to

INR 351,000 crore (USD 77 billion) in the next ten years.
- India is now fifth in the world in terms of wind energy production.
- Bold low carbon policies will increase India's energy independence and help provide access to energy to those who still lack it.
- Low cost labor and a highly skilled manufacturing base will make India a major hub for clean technologies.
- The rate of increase of India's private investment in clean energy will be 736% over the next ten years three times that of US or China.

Low Carbon Strategies for inclusive Growth An Interim Report by Planning Commission

The Interim Report of the Expert Group on Low Carbon Strategies for Inclusive Growth was released in May 2011 by the Planning Commission, Government of India, to offer guidance on achieving a Clean Revolution in India's power, transport, industry, buildings and forestry sectors through ambitious emission reductions.

The report says that the power sector can reduce electricity demand by using more efficient appliances, as well as more varied and fuel efficient power plants. Reducing emissions through new technologies in the steel, cement, oil and gas sectors must also be considered.

Clearly emphasizing the need for a supportive institutional set-up for implementing low carbon strategies. The report also outlines principles around which policies and institutional designs should be based. On top of the policies being incentive compatible, they must also aim towards promoting technological and institutional innovation. These efforts have a significant impact on sustain ability of water resources, agriculture, forests and ecosystems, affecting the well being of billions of people on earth.

According to Inter governmental Panel for Climate Change:

- By 2020, in some parts of Africa, yields from rain-fed agriculture (the dominant method) could reduce by up to 50 percent.
- Approximately 20-30 percent of plant and animal species are likely to face on increased risk of extinction, if increase in global average temperature exceeds 1.5-2.5°C.
- Widespread melting of glaciers and snow cover will reduce melt a water from major mountain ranges (e.g. Hindu Kush, Himalayas, Andes) where more than one billion people currently live.
- More than 20 million people were displaced by sudden climate-related disasters in 2008 alone. An estimated 200 million people could be displaced as a result of climate impacts by 2050.

Green Initiative Steps by the Ministry of Railways

The Minister for Railways declared 2011-12 as the ' Year of Green Energy'. Some of the environment friendly measures taken by the Railways were:

1. Free supply of 14 lakh CFLs to railway households and phasing out of incandescent lamps.
2. Regenerative braking in Mumbai EMUs.
3. Windmill at ICF, Chennai.
4. Production of locos with 'hotel land converter.
5. Increase use of solar energy at LC gates, stations etc.
6. Use of bio-diesel, CNG and LNG in locos, workshops etc.

Green Initiative steps by the Ministry of Environment and Forests

The Ministry of Environment and Forests of India has made it compulsory for all organizations planning for new projects to put up single comprehensive report on environmental impact. This is to avoid the pit fall where in projects would apply for piece meal clearances. For example, they would apply for environmental clearance of a captive power plant and later on, they would apply for the clearance of the captive mine. The ministry would there by lose the big picture on the environmental impact of a large project. There will be no clearance for "no-go" zone, where no mining or excavation or any activity which affect the environment can be started/continued.

Green Initiative steps by the Ministry of Coal

There is worldwide concern about increased coal use, as greater carbon dioxide (CO2) emissions from coal combustion will exacerbate climate change. At the same time, there are now several existing and emerging technological options for coal conversion and greenhouse gas (GHG) reduction worldwide that could potentially be useful for the Indian coal-power sector. The Ministry of Coal (MoC) has initiated the policy measure to ensure efficient distribution of the coal produced.

Green Initiative steps by Ministry of Corporate Affairs for Corporate Governance

In order to save trees and environment by cutting down the consumption of costly paper habits, the Ministry of Corporate Affairs has taken a "Green Initiative in the Corporate Governance"by allowing paperless compliances by the companies under the provisions of the Companies Act, 1956. Some of the important initiatives are as under:

(i) Allowing service of documents including Balance Sheets and Auditors report etc., through e-mail addresses.

(ii) Participation by directors and shareholders in meetings via video conferencing.

(iii) Voting in General Meeting of Companies through electronic mode.

WHAT ONE CAN DO "Every person is the right person to act. Every moment is the right moment to begin". The Time to Act is now!

Reduce Consumption: The first step to reducing your impact on the environment is reducing the amounts of resources you consume and use. Think twice before you buy or use anything.

Waste: There are also many other ways to reduce waste.

- Think before you print or photocopy! Print and copy as little as possible
- Edit on screen, not on paper u Use e-mail to minimize paper use
- Send and store documents like necessary papers and business proposals electronically instead of on paper
- When you must print or copy, do it double-sided
- Circulate documents instead of making an individual copy for everyone
- Change the margins on your Word documents. The default margins on the printed documents are 1.25 inches on all sides. Simply changing the margins to 0.75 inches will reduce the amount of paper you use by almost 5 percent.

Energy Consumption:

There are so many ways of optimizing your energy consumption:

Turn off unused or un-nessary lights. Use natural lighting instead of electric lighting whenever possible.

- If you have a desk lamp, make sure it uses fluorescent bulbs (instead of incandescent bulbs).
- Dress appropriately for the season. Select cold water for washing clothes.
- Keep windows and doors closed in heated or air-conditioned areas.
- Turn off computers when they are not in use.
- Turn off printers, especially laser printers, when not in use.
- Don't use power strips to turn on all computers and desk equipment at once.
- When purchasing computers and peripherals, buy low wattage equipment. Minimize use of screen savers and instead enable power management features.
- Purchase only energy-efficient products.
- Move your refrigerator. Leaving space between the refrigerator and the wall increases air circulation around the condenser coils, allowing the fridge to operate more efficiently.

Oil consumption and pollution

- Drive Efficiently: If you must drive, avoid the trend toward more wasteful vehicles and drive a fuel efficient car, ie, one which gets more miles per gallon, and don't drive it more than you really need to!

- Park your car in the shade. Gas evaporates from fuel tank more quickly when you park in the sun. Parking in the shade lowers the temperature in your gas tank by up to 7 degrees, significantly reducing fuel evaporation.
- Car pool and get driven to work in a Bus.

Reuse

Plastic containers can be repurposed as food storage, paper can be reused as wrapping paper. The ways in which to reuse things are unlimited. All you need is to be creative. If being creative is not your thing, here are some other ideas:

- Reuse envelopes by placing a new label over the old address.
- Designate a box for scrap paper and use it for printing drafts or unofficial documents.
- Reuse plastic bags or better get a reusable canvas bag.

Recycle

- When buying product, check if they are available with post consumer recycled content.
- Wrap presents in gift bags which can be used again and again instead of wrapping paper which is consigned to the dustbin.
- Production of recycled paper uses only half the water and 3/4 of the energy than new paper.
- Every ton of recycled paper saves almost 400 gallons of oil, three cubic yards of landfill space and seventeen trees.
- If you recycle soda cans, the energy used and air pollution created is 95 percent less than the cans produced from raw materials.

You could operate a TV set for an estimated three hours with the energy saved by recycling just one aluminum can. Thinking green means being aware of our interconnectedness with the world and reflecting on the unintended damage we cause in the daily course of our lives. Thinking green leads to acting green -taking corrective action to make environmental responsibility a reality.

- Plant Trees
- Conserve as well as harvest rainwater

CONCLUSION

All around the world, individuals and communities are learning to save and conserve. Most of us realize the need to save financially, such as for retirement, weddings, or for college educations. However, saving natural resources in order that our descendants can enjoy a high quality of life isn't necessarily something everyone thinks to do. Another issue is that many of us carelessly & improperly discard the items that endanger our natural resources. Tossing batteries in landfill trash, for example, will end up polluting the earth and even contaminate underground water. We need a new and different way of thinking. But, it will take time and effort before such habits become second nature. Why go green? Because it is the right thing to do and because it may be the only thing to do. Going green is the right solution not just for yourself, but also for your family, loved ones, your future descendants, and everyone on the planet. Most of us should start with small, local, and without trying to change the world all at once. Work consistently and steadily we can eventually take actions with greater impact. There are many ways to save and preserve natural resources, we need to figure them out and implement them for the future generations.

References:

www.gogreen.ae
www.thegreenlivingexpert.com
India's Clean Revolution-Report by climate group
www.mca.gov.in
Low carbon strategies for inclusive growth

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

"Childhood means simplicity.
Look at the world with
the child's eye
-it is very beautiful."
-Kailash Satyarthi

IT'S TIME TO REDEFINE THE REAL PURPOSE OF EDUCATION

Rashmi Mishra
Asstt. Prof. Commerce

Education is the power that changes life

For centuries, education has been the foundation of human civilization, shaping the society and building characters of individuals, and preparing them for their roles in the country. As we know

"Knowledge is the guide of life."

As the world around us continues to evolve at an unprecedented pace, it's time to ask ourselves: what is the real purpose of education? Is it simply to impart knowledge, or is it something more profound?

The Traditional View of Education

Traditionally, education has been seen as a way to acquire knowledge, skills and diploma's that can be used to secure a good job, achieve a decent living standard, and fulfill Sociatal goals. Education has roots in the industrial area, where the primary goal was to produce-workers who could contribute to the economy. This approach has served us well in the past, it is not longer sufficient to prepare students for the complexities of the 21" century.

Our ancient education system was remarkably robust and comprehensive, with the Gurukul system at its core, which focused on the holistic development of students. This system, which emphasized the use of teacher centred study methods, was unparalleled in its time. As the ages passed, esteemed institutions like Shanti Niketan and others were established, but over time, we began to adopt Western-style education, gradually abandoning our own time-tested system, which is still revered as the strongest foundation of education globally. It is imperative that we redefine education today, recognizing the value of our heritage and incorporating its principles into our modern educational framework.

The Need for a New Definition:

Study and move forward

As we move forward in the 21 century it's clear that we need a new definition of education, which takes into account the complications and challenges of our modern age. New definition of Education includes many more opportunities and a way to cultivate the whole person, including their intellectual, emotional, social and physical well-being.

As we know "There is no limit to knowledge and education helps us give meaning to our lives". The New Definition (National Education Policy 2020; India's Education revolution) focuses on Improving education and contributing to developing India.

New Purpose for Education:-

So, what should be the real purpose of Education?

1. To cultivate curiosity and a love of Learning.
2. To develop critical thinking and problem solving skills.
3. To foster emotional intelligence.
4. To promote social responsibility and civic engagement.
5. To prepare students for a rapidly changing world.

The National Education Policy 2020: Towards a new India.

Now a question arises regarding the implementation of new definition of education and its purpose.

Here are some strategies that can help to implementing the new purpose.

1. Integrate multiple disciplines
2. Emphasize project-based learning.
3. Foster a growth Mind set.
4. Use technology to enhance Learning.
5. Encourage Community engagement.

We know that education is a lifelong process and if is necessary to achieve success in life

So it's time to redefined the real purpose of education-Moving beyond the traditional view of education as a means to an end and prioritizing the cultivation of curiosity, critical thinking, emotional intelligence. We can create a more holistic and effective education system which prepares students for success in all area of life. At last from the whole article we conclude that:-

"Invest in Education, Invest in Tomorrow."

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

"Education is the most powerful weapon which you can use to change the world."

-Nelson Mandela

Women Empowerment: A Path to Equality and Process

Priya Jain
B.A., B.Ed. Ist Sem.

Women empowerment is about giving women the ablity and freedom to make decisions in their own lives-whether in their personal choices, careers or communities. It involves ensuring equal access to education, healthcare, economic opportunities, and Political Participation. Empowering women leads to greater equality, stronger economics, and healthier societies.

When women are empowered, they can break the cycle of poverty, contribute to economic growth, and drive social change. Flowerer challenges remain, including gender - based violence, unequal pay and cultural norms that limit women's roles.

To achieve true empowerment, we must promate equal education, support female enterpreneurship, challenge harmful gender, stereotypes.

Stereotypes and create supportive environments. Empowering women benefits everyone, creating a more just and prosperous world for all.

Alcohol Abuse Disorders

Er. Richa Jain
Instt. of Engg. and Tech.
Dr. Harisingh Gour V.V., Sagar

Alcohol consumption is as old as history. Earlier it was popular among warriors, later its use became common in other groups of people in different forms. Alcoholism is continuous alcohol consumption. World Health Organization (WHO) estimated about 300 million people with alcohol use disorders worldwide. Alcohol is addictive, its heavy, long term use results into many negative health and social consequences. Alcohol begins affecting a person's brain as soon as it enters the bloodstream. In a healthy person, the liver quickly filters alcohol, helping the body get rid of the drug. However, when a person drinks in excess, the liver cannot filter the alcohol fast enough, and this triggers immediate changes in the brain. Over time, excessive alcohol consumption can damage both the brain and liver.Some people with a history of excessive alcohol use develop nutritional deficiencies that further damage brain function.

Short term effects

An overdose of alcohol affects the brain's ability to sustain basic life functions. Symptoms includevomiting, seizures, slow heart rate, difficulty staying awake, fainting, low body temperature, low gag reflex, which can in-crease the risk of choking if a person vomits, and clammy skin etc.

Share on Pinterest

Moderate alcohol consumption may cause temporary effects viz. loss of inhibition, decreased planning and organizational skills, changes in mood and concentration, difficulty forming new memories, sleepiness, depressed mood, changes in energy levels, memory loss, poor judgment and reduced motor control.

Blackouts and Memory Lapses

Alcohol can produce detachable impairments in memory after a few drinks and, as the amount of alcohol increases, degree of impairment also increases as well. Large quantities of consumed alcohol, especially when quickly and on an empty stomach, can produce a blackout, or an interval of time for which the intoxicated person cannot recall key details of events, or even entire events.

Long-term effects

Up to 80 percent of alcoholics, have a deficiency in thiamine and some of these people will go on to develop serious brain disorders. They also develop poor judgment, decreased planning and organizational skills, hallucinations, progressively worsening cognitive decline that may affect every area of functioning, including speech, vision, and bowel and bladder function.

Foetal alcohol syndrome

When a developing baby gets expo-sure to alcohol during gestation, foetus alcohol syndrome affects many aspects of functioning, and it can cause brain damage like intellectual disabilities, hyperactivity, poor memory,

trouble concentrating, weak coordination and vision and hearing issues.

Psychological and Other System Damageseffects

Alcohol has numerous psychological effects, includingpersonality and mood changes, changes in impulse control, trouble concentrating and depression. The physiological effects of alcohol includehigh blood pressure, heart disease, changes in heart rhythm, damage to blood vessels, liver disease, kidney failure, pancreatitis, a weaker immune system, and an increased risk for certain cancers.

Women are more vulnerable to alcohol's effects

Women are more vulnerable than men to many of the medical consequences of alcohol use. Alcoholic women develop cirrhosis alcohol-induced damage of the heart muscle (i. . cardiomyopathy) and nerve damage (i.e. peripheral neuropathy) after fewer years of heavy drinking than do alcoholic men. Both male and female alcoholics showed significantly greater brain shrinkage than control subjects. Studies also showed that both men and women have similar learning and memory problems as a result of heavy drinking.

The Hidden Costs of Alcohol Abuse

Alcohol is a common part of social life. Whether at parties, events, or casual gatherings, drinking is often seen as a normal and even expected activity. But behind the buzz and temporary euphoria lies a darker realityone that can affect not only your present, but your future health, memory, and even brain structure.Over time, alcohol can shrink brain tissue, destroy brain cells, and impair the very functions you need most as a student memory, concentration, and decision-making.Even moderate alcohol use can temporarily impair planning, mood regulation, and judgment. These effects not only make alcohol dangerous to one's health but also significantly increase the risk of accidents, risky behavior, and even assault.This memory impairment can seriously impact academic performance and personal safety.Alcohol is a risk factor for traumatic brain injuries (TBI) due to falls, car accidents, fights, and other blows to the head. 35-81% of people who seek treatment for a TBI are intoxicated

Alcohol and Pregnancy

Exposure to alcohol during pregnancy can cause **Fetal Alcohol Syndrome (FAS)**, leading to irreversible brain damage in the developing baby. Effects include intellectual disabilities, trouble concentrating, poor memory, weak coordination and, vision and hearing problems.

Conclusion

Alcoholism among students is a significant issue with severe consequences of health, academic performance and overall wellbeing. A large percentage of college student report consuming alcohol, result in to poor academic performance, traffic accidents and falls, mental health problems, violence, strain relationship with family and friends. Targeted interventions in college can help students develop healthy coping mechanism and address alcohol related problems before they escalate. Universities and colleges need to provide comprehensive support services including counseling and educational programs. Creating a campus culture discouraging drinking and promoting constructive social activities can help students get rid of drinking habit, and also not to start drinking.

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

"AI Enhancements and Their Effect on Students' Career Choices"

Priya Dubey
Asstt. Prof.- Commerce

Artificial Intelligence (AI) is not just a buzzword anymore; it has rapidly transformed industries and the way we work, live, and learn. With AI becoming a prominent force in various sectors, it's crucial to explore its impact on students' career choices and how it is shaping their paths. As AI continues to advance, students are beginning to recognize both the opportunities and challenges it brings to the professional world.

The Rise of AI in Education and Career Development

AI's presence in education is undeniable. From personalized learning systems to adaptive assessments, AI is reshaping the way students interact with their education. As AI technologies evolve, students are being introduced to tools that enhance learning and provide deeper insights into their strengths and areas for improvement. This has encouraged students to become more self-aware, guiding them to make more informed decisions about their future career paths.

Moreover, AI systems such as career guidance platforms have become essential in helping students analyze their skills, personality, and interests. By evaluating academic performance, personal preferences, and market trends, AI can recommend career options that align with an individual's abilities and passions. This allows students to have a clearer vision of potential career opportunities, thereby increasing their likelihood of pursuing a fulfilling profession.

Transforming Traditional Career Paths

AI is also influencing traditional career paths, with industries embracing automation and machine learning technologies to increase efficiency and reduce operational costs. Professions like data analysis, programming, software development, and IT support have experienced significant growth, as they require skills that complement AI systems. For students, this means more opportunities in fields they may not have considered otherwise, like robotics engineering. AI programming, or even AI ethics.

While these advancements can create new career possibilities, they can also render some traditional jobs obsolete. For example, roles in manufacturing, administrative work, and customer service might be replaced or heavily automated. The rise of AI in these fields encourages students to rethink job security and pursue careers that emphasize uniquely human skills, such as creativity, emotional intelligence, and complex problem-solving.

The Demand for Interdisciplinary Knowledge

AI has highlighted the importance of interdisciplinary education. Careers in AI and machine learning require a combination of fields, including computer science, statistics, cognitive science, engineering, and even humanities. As students recognize the need to develop a diverse skill set, there has been a marked shift toward interdisciplinary studies in higher education. Many students now seek programs that allow them to explore a variety of subjects, integrating

technical and creative aspects to future-proof their careers.

For example, fields like AI ethics are gaining traction, as the need for responsible AI development grows. This interdisciplinary approach provides students with not just the technical know-how, but the critical thinking and ethical frameworks necessary to address the societal challenges that accompany AI deployment.

The Future Job Market: Skills over Degrees

One significant shift that AI's advancement brings is the transformation of the job market itself. In the future, the emphasis may no longer be solely on academic degrees but on the ability to acquire and demonstrate relevant skills. AI-powered platforms that focus on skill development whether through micro-credentials, online courses, or project-based learning-are already reshaping how students approach their careers.

AI and Career Flexibility

One of the greatest benefits AI brings to students' career choices is flexibility. AI has made remote work more feasible, allowing individuals to work in global teams regardless of location. The expansion of industries like tech, finance, healthcare, and marketing into remote work options has opened up opportunities for students in diverse geographic locations to access global job markets.

Addressing the Skills Gap and AI's Societal Impact

While AI creates new opportunities, it also highlights the growing skills gap. There is an increasing demand for skilled professionals who can design, manage, and maintain AI systems. However, many students may not have access to the education or training required for these careers. To address this, educational institutions and governments must invest in AI-focused programs, ensuring that students from diverse backgrounds have the opportunity to participate in this evolving field.

Conclusion

AI's rapid development and integration into various industries have dramatically reshaped the landscape of career choices for students. From creating new job opportunities to rendering some traditional roles obsolete. AI presents both challenges and possibilities. As students adapt to this changing environment, they are increasingly looking at careers that blend technical expertise with creativity and ethical considerations. The future of career choices will likely be cantered on skills, adaptability, and a broader understanding of how AI can be harnessed to solve complex global problems.

To succeed, students must be proactive in learning about AI technologies and their implications, ensuring they remain relevant in an ever-changing job market. The key takeaway for students is clear: the future of work will be shaped by AI, and those who can effectively leverage it will thrive.

Grateful Thankful Blessed

Sometimes, it's easier to focus on what we don't have, rather than what we do have. It's important to take time to reflect and be thankful for all the things. We take for granted. Life is not always easy to live, but the opportunity to do so is a blessing beyond comprehension. Be grateful, thankful and blessed for every opportunity that comes to you and for every effort that you made to achieve it.

Angel Jain
B.A. B.Ed. Ist Sem.

"DECISIVE THINKING"

Savni Jain
Asstt. Prof. -English Literature

Decisive thinking enables us to make clear, confident, and well-informed decisions, involving the ability to analyse situations, weigh different options, and choose a course of action align with one's goal, values, and the available information. Decisive thinking is not only critical in very important matters but also in everyday life, from career choices to personal decisions. It is the ability to consider all relevant factors, including data, emotions, context, and potential outcomes, while avoiding over-thinking. This involves not only considering the best option but also committing to a decision and taking action. Decisive thinking helps in situation which involves prolonged hesitation or uncertainty in choosing a course of action.

Indecisiveness often leads to missed opportunities and a lack of progress, while decisive thinking helps individuals act with clarity and confidence and also save time. It ensures prompt action and faster results, and also built confidence, likely to trust their judgment in future, and over time it improves the ability to make decisions leading to great self- assurance and less self-doubt. By quickly assessing the situation and identifying the most effective solution, one can overcome obstacles and achieve the goal more efficiently. This critical mindset is important in fast-paced environment like business, healthcare, or crisis management where decisions need to be made under pressure.

There are several factors which contribute to a person's ability to think decisively, include-

Confidence: Lack of confidence can hinder decisiveness. When individuals doubt their abilities or fear making mistakes, they are likely to second-guess themselves and delay decision making. Building self-confidence through experience, knowledge, and positive reinforcement can improve decisiveness.

Emotional Intelligence: Decisive thinking requires individuals to manage their emotions effectively. High emotional intelligence helps stay calm and focused under pressure, preventing impulsive decisions driven by stress or anxiety. Emotional intelligence is more important in leadership and interpersonal relationships.

Risk Tolerance: Risk taking capacity is different in different individuals. Decisive thinking often involves taking calculated risks, and a person's willingness to embrace uncertainty, plays an important role in their ability to make quick decisions. People who are comfortable with risk are more likely to make bold decisions without overthinking potential negative outcomes.

External Pressure: High pressure situations can increase stress and make it more difficult to think clearly. While sufficient time and resources can make it easier to make deliberate decisions. Decisive thinking can be developed with practice.

Clarify Goals and Priorities: Before taking a decision, take time to clarify the goals and priorities. When there is clear sense of direction, it becomes easier to evaluate options and select the best aligns with your objectives.

Limit Options: Having too many choices can overwhelm the decision making process. When faced with numerous options, narrow down the list to a manageable number. This will help reduce confusion and make it easier to evaluate each option on its own merit.

Set Time Limits: There should be a specific time frame to take a decision. Setting a deadline can prevent procrastination to take action on time. Time limits encourage to focus on the essential information and arrive at a decision without overthinking the situation.

Learn From Experience: Every decision provides an opportunity for growth, irrespective of its negative or positive outcome, reflect on your decision and learn from them. Experiential learning makes you better equipped to make decisions in the future. Making the right decision at the right time is crucial to success in both personal and professional life. The timing and quality of our decisions shape the outcomes we experience and influence our long-term growth and help navigate life's challenges more effectively, seize opportunities, and avoid unnecessary setbacks.

Gather Information: Start by collecting all relevant data. Through research helps you understand the problem, identify trends, and evaluate options effectively. Rely on both qualitative and quantitative data.

Analyse Risks and Benefits: Weigh the pros and cons of each option. Understand the potential risks involved and how they compare to the expected rewards. Risk analysis allows for more informed decisions.

Consider Long Term Impact: While immediate outcomes are important, always think about the long term effects. A decision that offers short- term gains but compromises future stability can be harmful.

Consult with Experts: Seek advice from colleagues, mentors, or business experts. They can offer different perspectives, help make more balanced decisions.

Trust Your Intuition: While data and analysis are crucial, intuition built from experience can also play an important role in decision- making. If something doesn't feel right, it's worth revising your option.

Embrace Imperfection: No decision is ever perfect. There will always be unknowns and variables that cannot be accounted for. Accepting imperfection and the possibility of making mistakes can reduce fear and hesitation, allowing you to make decisions more confidently.

Be Decisive but Flexible: In business and other fields, decisions often require prompt action. However remain open to adapting your decision if new information arises. Being both decisive and flexible helps maintain agility in a dynamic environment.

Practice Decisiveness: Like any skill, decisive thinking improves with practice. Challenge yourself to make decisions quickly in low-stakes situations, and gradually increase the complexity of the decisions you make. This will help you become more comfortable with making choices and boost your decision making confidence.

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

"Evolution is cleverer than you are"

-Francis Crick

"Top 10 Common Speaking Errors and How to Correct Them for Better Communication"

Ferheen Khan
Asstt. Prof. -English Literature

We've all been there - stumbling over words, mispronouncing terms, or feeling tongue-tied during a presentation. These speaking errors can be frustrating and even embarrassing. By addressing these errors, you can enhance your professional and personal life by becoming a more persuasive, engaging, and confident speaker. This article will identify the 10 most common speaking errors that can sabotage your communication and provide actionable steps to correct them.

1. Mispronunciation of Words

Mispronouncing words can create confusion and make you seem less confident. Common culprits include words with silent letters (like "knife" or "Wednesday"), irregular pronunciations (such as "colonel"), or multi-syllable words (like "environment" or "February").

How to correct it:

- Practice the correct pronunciation using online dictionaries or language apps that offer audio examples.
- Break the word into syllables to make it easier to say.
- Record yourself speaking and compare with native speakers for better accuracy.

2. Incorrect Use of Tenses

Using the wrong tense, particularly between past, present, and future, can make your speech confusing. For example, saying "I was going to the store tomorrow" when the future tense is needed can make your sentence unclear.

How to correct it :

- Always pay attention to time markers in a sentence (like "yesterday," "tomorrow," "now," etc.) to choose the correct tense.
- Practice by writing simple sentences in different tenses and speaking them out loud.
- Use online exercises or apps to reinforce your understanding of tense usage.

3. Overuse of Fillers

Words like "um," "uh," "like," and "you know" often slip into speech, especially when we're nervous or thinking. While a few fillers might be natural, excessive use can make you sound less confident and detract from your message.

How to correct it:

- Practice pausing instead of filling the silence with words. This allows you time to think and makes your speech sound more deliberate.
- Record and listen to your speech to become more aware of filler usage.
- Replace fillers with thoughtful, short pauses or transitions to keep the flow of conversation smooth.

4. Subject-Verb Agreement Errors

In English, the subject and verb must agree in number (singular or plural). For example, "He go to school" is incorrect; it should be "He goes to school." These small errors can confuse the listener.

How to correct it:

- Focus on the subject of the sentence and make sure the verb matches it. For example, "I run" (singular subject with singular verb) versus "They run" (plural subject with plural verb).
- Read your sentences out loud to check if they sound natural and grammatically correct.
- Review subject-verb agreement rules to strengthen

your grammar.

5. Misplacing Prepositions

Prepositions like "in," "on," and "at" can be tricky, especially since their usage sometimes doesn't translate directly between languages. Saying "I am good in playing soccer" instead of "I am good at playing soccer" is a common mistake.

How to correct it:

- Memorize common prepositional phrases (e.g., "interested in," "good at," "afraid of").
- Practice prepositions in context through reading and listening exercises.
- Review preposition rules and create example sentences to help internalize their correct use.

6. Incorrect Word Stress and Intonation

English relies heavily on stress and intonation to convey meaning. Misplacing stress or using a flat tone can change the meaning of a word or sentence, like saying "REcord" (noun) instead of "reCORD" (verb).

How to correct it:

- Listen to native speakers and mimic their stress and intonation patterns.
- Use language learning apps that focus on pronunciation and stress.
- Record yourself and compare your speech to native speakers to pinpoint areas of improvement.

7. Confusing Similar-Sounding Words

Many English words sound similar but have different meanings, such as "their," "there," and "they're," or "accept" and "except." Misusing these can cause confusion and diminish your credibility.

How to correct it:

- Study pairs or groups of words that are commonly confused.
- Read and write sentences using these words to strengthen your understanding of their correct usage.
- Slow down your speech to ensure you're using the right word in context.

8. Run-on Sentences or Sentence Fragments

Run-on sentences occur when two or more independent clauses are improperly connected, while sentence fragments lack essential elements, such as a subject or verb. Both errors can confuse listeners and weaken your message.

How to correct it:

- Break long sentences into shorter, clearer ones.
- Practice writing complete sentences that express a single thought.
- Read your sentences aloud to check for clarity and flow.

9. Overcomplicating Language

Using overly complex words or jargon can alienate your audience and make communication harder. Instead of saying "utilize," just say "use," unless the situation demands the formal tone.

How to correct it:

- Simplify your language to make your point more accessible.
- Focus on clarity and precision rather than using big words for the sake of it.
- Ask for feedback from others to see if your message is clear and easy to understand.

10. Translating Directly from Your Native Language

When speaking English, it's tempting to translate thoughts directly from your first language, which can result in awkward phrasing and grammar mistakes. For instance, saying "I have 25 years" instead of "I am 25 years old."

How to correct it:

- Think in English rather than translating from your native language.
- Listen to how native speakers express similar ideas and try to replicate their phrasing.
- Practice speaking in everyday situations to build fluency and natural expression.

Learning a new language is never easy, but it is worth the effort. When you finally reach a level where you can hold a conversation in English, it will open up many new doors for you. However, it is important to be aware of typical grammar mistakes. Avoiding them will make you sound more fluent and better understood. In this article, we have gone over some common mistakes in English so that you can be on the lookout for them. The next time you speak English, try to avoid making these language mistakes, and you will sound more confident and fluent.

The Tiny Titans of Technology: Nanoparticles in Our Daily Life

Nigar Hashmi
Asstt. Prof.- Zoology

"Small things become great when they are done in a great way."

Nanoparticles are incredibly small particles, measured in nanometers a billionth of a meter. To grasp their size, imagine a strand of hair, it's about 80,000 to 100,000 nanometers wide. These minuscule entities, invisible to the naked eye, are quietly revolutionizing numerous aspects of our daily routines, from the sunscreen we apply to the food we eat.

One of the most common applications of nanoparticles is in sunscreens. Zinc oxide and titanium dioxide nanoparticles act as effective UV filters, protecting our skin from the sun's harmful rays. Their small size makes them transparent, avoiding the white cast traditional sunscreens often leave. This same property makes them useful in cosmeties, where they can enhance the texture and delivery of active ingredients in products like lotions and foundations.

The food industry also benefits from nanotechnology. Nanoparticles are incorporated into **food packaging** to create more robust and impermeable barriers. This helps to prevent oxygen and other contaminants from reaching the food, extending shelf life and reducing food waste. Some research even explores the use of nanoparticles to enhance the flavor and texture of certain foods.

Perhaps the most promising applications of nanoparticles are in the **field of medicine.** Scientists are developing sophisticated **nanoparticles capable of delivering drugs directly to targeted cells within the body.** This targeted drug delivery minimizes exposure to healthy tissues. reducing side effects and improving treatment efficacy, particularly in cancer therapy. Nanoparticles are also being used in **diagnostic tools for early disease detection**, offering the potential for more timely and effective interventions.

While the potential benefits of nanoparticles are vast, it's crucial to acknowledge and address potential concerns. Some studies suggest that certain types of nanoparticles might pose risks to human health and the environment. Research is ongoing to fully understand these potential risks and to develop appropriate safety measures. Regulations are also being implemented to ensure the responsible development and use of nanotechnology.

"The world of nanoparticles is complex and fascinating, offering both challenges and incredible opportunities".

Nanoparticles are tiny but powerful players in the world of technology. From protecting as from the sun to revolutionizing medicine, they offer a wide range of benefits. As research continues and safety protocols are refined, we can expect to see even more innovative and impactful applications of these tiny titans in the years to come. Understanding the science behind nanoparticles empowers us to appreciate their potential while also recognizing the importance of responsible development and use.

Challenges of Working Women

Nancy Jain
B.A., B.Ed.-VI Sem.

Economic and technological changes introduced during the Era of globalization have generally provided men with relatively greater training and Employment opportunities than women. Women constitute about 33 percent of the total workforce in India, in the unorganised sector.

Most of the unorganised mostly in the sector occupations such as battery manufacturing agriculture, construction work, handloom, domestic services and household Enterprises Women workers in the unorganised sector are usually employed as casual workers, working intermittently for very low wages. They face extreme exploitation, including long working hours, unacceptable working conditions and persistent health problems.

According to the report, five out of ten women employees in India have experienced some form of gender discrimination. This discrimination in terms of salary, working hours, leave, opportunities and promotion.

The reason behind such discrimination is somewhere the patriarchal ideology that has been prevalent since ages that women belong only to household work. There is a perception that women are only suitable for specific jobs. Even male candidates with Equal qualifications are given preference over women with better qualifications, Although the Law declares equality in recruitment, it is not always implemented.

Women and men receive different salaries for the same work.

Another concerning issue faced by working women at work is the rising number of sexual harassment cases. The feeling of safety among workers and collegue motivates a women to work without any concern. Increasing number of harassment cases is one of the reason why parents and guardian discourage women to work specifically at night due to the unsafe environment.

Provisions have been made in the country to protect women from sexual harassment at the workplace through the sexual harassment of women at workplace (prevention, prohibition and Redressal) Act 2013.

Provisions are also provided under other laws such as the factories Act, equal wages act, Minimum wages act, etc. to protect the interests of women.

In order to improve the quality of employment of women in the organized and unorganised sector of the country, it is possible to increase the employment opportunities of women through the combined and effective efforts of the Government business organizations and all other concerned parties. They also have to do household work. Such women should be provided with proper opportunities for part time employment. Women who are educated can start their own business from home by doing registration on online portals such as teaching, textile business, business of fast food etc. More opportunities can be given to women by starting traditional small scale industries with new technology.

Don't Be Cruel to Animals : A Call for compassion

Khushi Tiwari
B.A. B.Ed. Ist Sem.

Animals, like humans, feel pain, fear and joy. As stewards of the planet, it's our responsibility to treat them with kindness and respect. Unfortunately, cruelty to animals is widespread from neglect and physical abuse to exploitation in entertainment and factory farming. This behavior not only harms animals but reflects poorly on our moral values as a society.

By choosing compassion, we can make a difference. Adopt pets from shelters. Support cruelty free products and speak out against in humane practies.

Every small action counts in creating a world where animals are treated with the dignity they deserve.

Let's stand up against animal cruelty and promote kindness.

Teenage
Teenage : A Time of Transformation.

Heena Dilare
B.A. 5th Sem.

Teenage is a time in our life which we remember for the rest of our lives. It is a period when a person experiences and learns many new things.

Just like when the soil is raw, by supporting it, beautiful artwork can be created. In the same way teenage is also that phase of life when you prepare yourselves for the future through hard work and become determined towards your career.

A person gets many life lessons in his teenage and if he takes some essence from them, then it will be useful in his life later on. This is the time when you will face destructions at every step of life. At this time, Control yourself and understand that all these destructions are only causing distraction to you. Just as good memories are remembered forever the mistakes committed at this age also leaves a deep wound.

This is why it is said: Learn from the mistakes of others, otherwise you will spend your life making mistakes and correcting them. Believe in yourself, be your own best friend. Maintain Balanced in life, don't set expectations from others. Focus on your career there is a time for everything. And now is the time to prepare yourself, work on your dreams, and become a better person.

Avoid comparisons, focus on your own goals don't be jealous.

Never try to be someone else. Embrace your individuality and let it shine. Give the world a reason to remember you...

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

UNESCO World Heritage Sites of Madhya Pradesh

Preet Lama
B.A. (IV Sem.)

Madhya Pradesh, known as the "Heart of India," is a land of immense cultural, architectural, and historical significance. Among its many attractions, three remarkable sites have been recognized as UNESCO World Heritage Sites: the Khajuraho Group of Monuments, the Buddhist Monuments at Sanchi, and the Rock Shelters of Bhimbetka. Each of these sites showcases India's diverse cultural past and contributes to the rich tapestry of world heritage.The Khajuraho Group of Monuments, located in Chhatarpur district, consists of a collection of temples built by the Chandela dynasty between 950 and 1050 CE. The temples are world-renowned for their Nagara-style architecture and intricate sandstone carvings. While the erotic sculptures are often the most talked about, they form only a part of a broader celebration of life, depicting scenes of spirituality, music, dance, and divine love. The temples are divided into Western, Eastern, and Southern groups, with the Western Group being the most prominent.The Buddhist Monuments at Sanchi, located in Raisen district near Bhopal, are among the oldest stone structures in India. The Great Stupa, commissioned by Emperor Ashoka in the 3rd century BCE, stands as a symbol of Buddhist philosophy and peaceful coexistence. The site features elaborately carved toranas (gateways), monolithic pillars, and ancient monasteries that narrate the life and teachings of Lord Buddha. Sanchi holds immense spiritual importance and serves as a serene retreat for both religious pilgrims and history lovers.The Rock Shelters of Bhimbetka, located in the Vindhya hills, are a collection of over 700 caves containing prehistoric paintings that date back over 30,000 years. These paintings depict the lives of early humans — including hunting, dancing, rituals, and social gatherings. Bhimbetka provides rare insight into the beginnings of human civilization and artistic expression, marking it as one of the oldest signs of human life in India. Tourist Experiences Khajuraho: Tourists visiting Khajuraho often describe it as a journey into Indian aesthetics and ancient philosophy. While some are initially curious about the erotic carvings, most walk away impressed by the artistry and balance of spiritual and sensual elements. Many visitors mention being "mesmerized by the harmony of art and architecture," especially during sunrise or the evening sound-and-light show.Sanchi:Visitors to Sanchi express a deep sense of calm and reflection. The peaceful surroundings and the grandeur of the Great Stupa leave many spiritually moved. Tourists often note the beautiful storytelling through the toranas and enjoy the site's well-maintained museum and quiet ambiance.Bhimbetka:Bhimbetka leaves tourists awe-struck by its raw connection to prehistory. Many describe the site as surreal, saying, "It felt like stepping back in time." The cave paintings spark curiosity about early human life, and the natural surroundings add to the mystical experience.

Hidden Places of Sagar (Khimlasa Fort)

Soumya Mourya
B.Ed. (III Sem.)

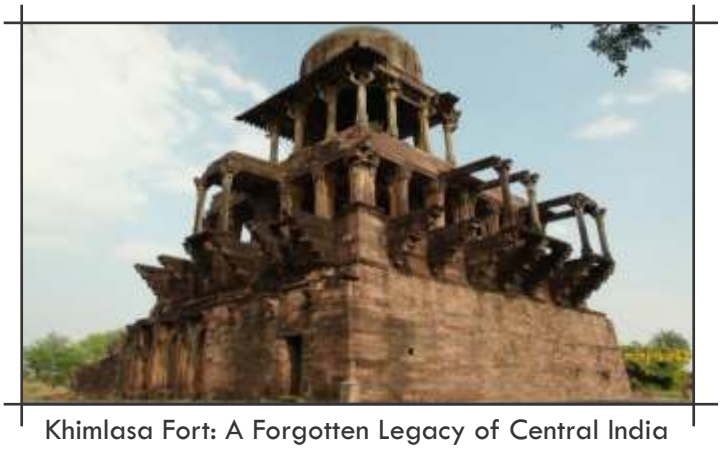

Khimlasa Fort: A Forgotten Legacy of Central India

(An Untold Tale from the Heart of Madhya Pradesh)

Introduction- Hidden in the rustic town of Khimlasa in Sagar district, Madhya Pradesh, lies a historical gem Khimlasa Fort. This fort is a silent witness to medieval Indian history, rich architectural traditions, and communal harmony. Although not widely popular among mainstream tourist destinations, Khimlasa Fort is a remarkable site for history enthusiasts, heritage travelers, and explorers seeking offbeat locations.

Historical Background

Khimlasa Fort is believed to have been built around the 14th or 15th century, during the rule of regional dynasties such as the Raisen rulers or possibly under the Bundela kings. The fort was of strategic importance, positioned between the regions of Malwa and Bundelkhand, which made it a crucial military and trade link during the medieval era. The fort has stood through numerous battles, political upheavals, and cultural changes over centuries. Though many details remain undocumented, oral history and ruins speak volumes about its past.

Architectural Features

The fort showcases typical Indian medieval military architecture, constructed using locally available red and brown sandstone. Despite the erosion of time, many parts of the structure still stand strong. Noteworthy features include:

- **Fort Walls (Ramparts):** Thick and high defensive walls built to repel invaders.
- **Main Entrance Gate:** Decorated with arched motifs and intricate stone carvings.
- **Religious Structures:** The site houses mosques and the tombs of Panch Peers, showcasing communal harmony.
- **Inner Chambers & Underground Vaults:** Possibly used for storing weapons, food, or as living quarters for soldiers and officers.
- The fort's simple yet purposeful design reflects the martial priorities of the time.

Cultural and Religious Significance

One of the unique aspects of Khimlasa Fort is its embodiment of communal unity. Within the fort complex lies the revered Panch Peer Dargah, which attracts people of all religions. Annual Urs celebrations and local fairs are held here, making it not just a historical site but also a spiritual and social center.

This blend of military history and religious harmony makes Khimlasa Fort culturally significant beyond its stones and structures.

Present Condition and Tourism Potential

Today, Khimlasa Fort remains a lesser-known heritage site. While partially in ruins, its historical charm is undeniable. Unfortunately, it suffers from lack of maintenance and recognition.

With proper conservation efforts, documentation, and promotion, the fort could become a major attraction for heritage tourism and educational visits. Local authorities and the Archaeological Department can play a key role in its restoration.

How to Reach Khimlasa Fort

- **Location:** Khimlasa, near Sagar city, Madhya Pradesh, India
- **Distance from Sagar:** Approximately 20–25 km
- **Transport:** Accessible via local taxis, buses, or private vehicles from Sagar city.

Smart Work in the Digital Age

Apoorva Jain
Adm. Officer

In today's fast-paced and ever-changing world, hard work alone is not enough to achieve success; working wisely in the right direction is equally important. This is where the concept of "Smart Work vs Hard Work" begins. In this era of technology, where computers and digital technology dominate every field. Computer literacy does not just mean operating a computer, but also understanding and properly using related technologies such as the internet, software, and Artificial Intelligence (AI). This literacy not only provides better education and employment opportunities but also makes daily lives smarter and easier.

In earlier times, when computers were not common, work was done manually, which required more time and effort. But today, computers have made every task simpler, faster, and more effective. Having knowledge of computers allows us to use data correctly, find information quickly, and solve complex problems. That is why computer education is now mandatory in every school, college, and office.

Artificial Intelligence (AI) and Computer Literacy

Artificial Intelligence (AI) technology, has completely changed the way we work. AI machines and software think, learn, and make decisions for us. e.g. In the banking sector, AI helps detect fraud, in healthcare it makes disease diagnosis easier, and in education it enables personalized learning.

If we have proper knowledge of computers and AI, we can transform our work from 'hard work' to 'smart work'. Smart work means achieving better results with less time and effort. E.g. AI-based tools can analyze large amounts of data in minutes, enabling quicker decision-making.

Through computers and the internet, we can use services like online banking, digital payments, video calling, and online education. AI-based apps help us monitor our health, learn languages, and even work from home, for all this, computer literacy is essential. In addition to opening doors to jobs and education, computer literacy plays a crucial role in bridging the digital divide. It ensures that people from all sections of society, including rural and underprivileged communities, can access digital services and information. Governments and organizations worldwide are working to provide digital literacy training to create an inclusive society where no one is left behind.

The future belongs to those who can harness the power of technology effectively. Emerging fields such as data science, robotics, machine learning, and cybersecurity demand strong computer literacy skills. Even creative industries like design, music, and filmmaking now rely heavily on digital tools.

Thus, computer literacy is not just a skill but a foundation for future readiness. It empowers individuals to innovate, collaborate globally, and contribute meaningfully to the digital economy.

Smart Work vs Hard Work

Hard work means working with full dedication, commitment, and effort — and it has always been considered the foundation of success. However, if this effort is made without a clear direction, plan, or goal, it can lead to exhaustion without yielding the desired

results. For example, if a student studies all day but does not know which subjects are more important or how to prepare effectively, their hard work may go to waste. Therefore, just working hard is not enough — it must be directed properly.

Smart work means achieving more and better results in less time. It involves proper planning, setting priorities, and using technology efficiently. In today's world, where information and resources are easily accessible, using them wisely is the real key to success.

Benefits of Smart Work

1. **Time-saving –** Planned tasks prevent unnecessary time wastage.
2. **Better results –** Clear goals improve the quality of work.
3. **Less stress –** The workload feels mentally lighter.
4. **Use of technology –** Modern tools increase speed and efficiency.

The Need for Balance

Assuming that only smart work guarantees success is not entirely true. In reality, both smart work and hard work have their own importance. Hard work teaches us discipline, patience, and dedication, while smart work gives us the right direction, strategy, and efficiency. Smart work is not a shortcut — it is a way to make hard work more impactful and result-oriented.

Smart work is not a replacement for hard work but its complement. When we combine effort with wisdom and planning, true and lasting success becomes possible. Therefore, if you want to move ahead in life, don't rely on effort alone — move forward with strategy and thoughtful execution. That is the true key to success.

"Education is among the most important investments that a country can make in its people."

-Amartya Sen

Brics : The Rising Powerhouse & Financial Independence

Smriti Mishra
B.A. B.Ed. (II Sem.)

In an era where economic power is shifting towards emerging markets, BRICS nations - Brazil, Russia, India, China, South Africa are exploring a bold new idea creating their own shared currency. The US dollar has long been dominant global currency used in everything. However the economic pressure including sanctions from western powers lead to create a new currency to gain more control run their economics for example- Russia they are out of SWIFT Bank, Prohibited from exporting of technologies, oil, gas sanctions and many more. This is the dominance of the western countries they have restricted several Indian companies exporting to foreign countries also.

Thus, By creating their own currency, we can diversity away from the dollar dependency. In simple it is more like anti Nato Group. Through this BRICS nations would gain control over economies, less vulnerable to external shocks or economic sanctions.

Conclusion:

The Brics currency is still in the conceptual phase, and it may take years before it becomes a reality. However the idea reflects a broaden shift a move away from western dominance toward a more multipolar, diversified financial system. The BRICS currency to reshape the future of global finance cannot be ignored. If successful it could signal the dawn of a new era in international trade.

The Role of Python and R in Modern Biological Research

(Need of the hour: to Include programming languages in UG life science curriculum)

Dr. Divya Rawat
Asstt. Prof.- Zoology

Over the past several decades, computing has transformed the biological sciences. Today, nearly all modern research in molecular biology, biochemistry, and related fields relies heavily on computational tools. These advances have been driven by significant progress in hardware, software, and algorithm development.

The employability of young graduates has gained increasing significance in the job market of the 21st century. Universities turn out millions of graduates annually, but at the same time, employers highlight their lack of the requisite skills for sustainable employment. We live today in a world of data, and therefore courses that feature numerical and computational tools to gather and analyse data are to be sourced for and integrated into life sciences' curricula as they provide a number of benefits for both the students and faculty members that are engaged in teaching the courses. The lack of this teaching in undergraduate life science curricula is devastating and leaves a knowledge gap in the graduates that are turned out. This results in an inability of the emerging graduates to compete favourably with their counterparts from other parts of the world.

There is a necessity on the part of life science educators to adapt their teaching strategies to best support students' curricula that prepare them for careers in science. Bioinformatics, Statistics and Programming are key computational skills to embrace by life scientists and the need for training beginning at undergraduate level cannot be overemphasized. This article reviews the need to integrate computational skills in undergraduate Life science curricula in developing countries with emphasis on India.

Generating knowledge from large data sets is now recognized as a central challenge in science. Biological sciences have undergone a transformation in recent decades, transitioning from observational and small-scale experimental approaches to data-intensive research paradigms. Technologies such as next-generation sequencing (NGS), mass spectrometry, high-resolution imaging, and remote sensing now produce terabytes of data per experiment. To extract meaningful biological insights from these datasets, researchers increasingly rely on programming languages designed for statistical computing and data science.

Python and R have emerged as the dominant tools in this space. While both languages offer extensive libraries and communities, their adoption in biological fields often reflects the nature of the research problem—whether statistical modeling, machine learning, or pipeline automation.

Python in Biological Research

Python is a general-purpose, high-level programming language renowned for its readability, cross-platform compatibility, and a broad ecosystem of scientific libraries. It is particularly well-suited for bioinformatics, systems biology, and computational neuroscience.

Modern biological research increasingly depends on computational tools, driven by advances in data

generation technologies like NGS and high-resolution imaging. However, many life science graduates lack the computational skills needed for today's data-intensive research, especially in developing countries like India.

Python is a versatile language widely used in:

- Bioinformatics (Biopython, Snakemake), Image Analysis (scikit-image, Cellpose), Machine Learning (TensorFlow, scikit-learn), Systems Biology (PySB, Tellurium)

R excels in:

- Transcriptomics (DESeq2, limma), Ecology and Evolution (vegan, ape), Data Visualization (ggplot2, plotly), Reproducible Research (RMarkdown, knitr)

Conclusion:

Python and R are essential tools in biology, each offering unique strengths. Python leads in automation and AI;
R in statistical rigor and visualization. Proficiency in both is now a critical skill for modern biologists navigating the era of big data.

As biological data continues to grow in scale and complexity, interdisciplinary proficiency in these languages will become increasingly critical. The ability to not only generate but also interpret data computationally is now a core competency for the 21st-century biologist. To remain competitive globally, undergraduate curricula must integrate training in bioinformatics, statistics, and programming.

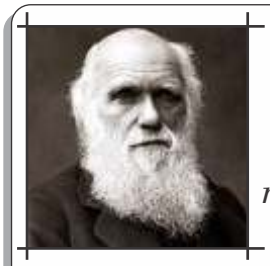

It is not the strongest of the species that survives, nor the most intelligent that survives. It is the one that is the most adaptable to change.

-Charles Darwin

What is AI Physics

Ms. Shikha Dubey
Asstt. Prof.- Physics

AI Physics bridges the gap between artificial intelligence and the laws governing the natural world, offering the promise of deeper insights and novel applications across the realm of physics. Both fields underscore the importance of interdisciplinary collaboration and innovation in shaping the future of technology and scientific exploration.

It aims to apply AI techniques to various areas of physics, from analyzing complex physical systems to enhancing our understanding of fundamental laws of the universe.

AI physics leverages machine learning algorithms to simulate, predict, and optimize physical phenomena. Neural networks and other AI models can aid in solving complex differential equations, predicting quantum mechanical behaviors, and even optimizing experimental setups.

This fusion of AI and physics has the potential to accelerate scientific discoveries, streamline data analysis in particle physics and astronomy, and lead to innovations in materials science and energy research. As AI physics evolves, it also raises philosophical questions about the nature of intelligence, the relationship between machine and human understanding of the universe, and the potential insights that machines might uncover in the realm of fundamental physics.

बायें से दायें (बैठे हुए)– श्रीमती रूबल ओबेरॉय मिश्रा (वाणिज्य), डॉ. आकृति कनोजिया (समाजशास्त्र), श्रीमती अपर्णा पाण्डे (राजनीति विज्ञान), डॉ. संचिता जैन (रसायन शास्त्र), डॉ. मनीषा तिवारी (इतिहास), डॉ. राजू टंडन (प्राचार्य), अदिति जैन (मनोविज्ञान), श्रीमती किरण तिवारी (शिक्षा शास्त्र), डॉ. सुरेश कोरी (भूगोल), डॉ. देवानंद मौर्या (वनस्पति शास्त्र),

(खड़े हुए)– नित्या श्रीवास्तव (पुस्तकालय प्रभारी), श्रीमती पारूल दरे (शिक्षा शास्त्र), श्रीमती हेमलता पाण्डे (शिक्षा शास्त्र), श्रीमती फरहीन खान (अंग्रेजी), श्रीमती शिखा दुबे (भौतिक विज्ञान), श्रीमती अलका असाटी (शिक्षा शास्त्र), श्रीमती अपूर्वा जैन (प्लेसमेंट अधिकारी), डॉ. दिव्या रावत (प्राणी शास्त्र), श्रीमती रश्मि मिश्रा (वाणिज्य), आकाश लिटोरिया (प्रयोगशाला सहायक), आबिद बहना (छात्रवृत्ति प्रभारी), श्री आर.एस. राजपूत (कार्यालय अधीक्षक), आलोक चौबे (गणित), श्री राजेश विश्वकर्मा (लेखापाल), श्री सत्यम् खटीक (कम्प्यूटर ऑपरेटर), श्री आशीष गुप्ता (लेखापाल)

उत्कृष्टता की यात्रा
यहाँ से
शुरू होती है।

Courses Offered

B.A.	B.C.A.
B.Sc.	M.A.
B.Com.	M.Com.
B.Ed.	B.A.B.Ed.

THINK ADMISSION
THINK BTIE

NAAC ACCREDITED COLLEGE

B.T. Institute of Excellence (College)

(Approved by Higher Education, Govt. of M.P. and NCTE, New Delhi)
Affiliated to Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar

Address : Dr. Harisingh Gour Nagar (Pt. Deen Dayal Nagar) MAKRONIA, SAGAR 470 004 (M.P.) INDIA

Mob. No. : 9926459169, 8435208060, 9179071001, 9713441188

www.btie.in/ e-mail : btie_sagar@rediffmail.com; btiesagar2008@gmail.com

Printed by : Arihant Offset, Sagar 9424437632